7116

- 1. Title Brahma Sūţra Vritti Vivaranākhyā
- 2. Accession No. 5583
- 3. Folio No./Pages 199
- 4. Lines 23-24
- 5. Size 25×17 Cm
- 6. Substance Paper
- 7. Script Devanāgarī
- 8. Langna e San
- 9. Period Not me Moned
- 10. Beginning ''श्री जापतेनमः ब्रह्मसूत्रवृत्ति स्तात्पर्यं विवरणाख्या ॥ यन्माय या जगत्सर्व जायते येन जीवति '''
- 11. End "इति हिंद्य सूत्र तात्पर्य विवरणे चतुर्था-ध्याय स्यतुराय पादः ॥ समाप्तञ्च ब्रह्मविचार शास्त्रम् ॥"
- 12. Colophon Yes
- 13. Illustrations No
- 14. Source Donated by Hariraja Sharma
- 15. Subject Brahma Sūtra
- 16. Revisor No
- 17. Author Kshitishvar
- 18. Remarks Bound, fair Condition.



Pt. Kshitisvar.
Brahma Sütra-Vritti - Vivaranākhyā.
Jodhabur. Hariraj Sharma,
199 b
Language — M. Sanskrit, Hand Written.
Size — २६×18 cm.
(यनमास या जागत्सर्व — - परिसमानिः
दक्षशिति)



2013/18/13/13/13/13/18/ जी मराशायनमः न्याभवादनशोत्त्रस्य निःयम्ब हा वसविनः चतारित व्यवद्भित-आयुर्विद्यायशावनप्।१॥ जितंस वी जिलते र स ॥२॥ 005583 सिनी स्वार वंगितात नी 77101 Ister Nord. ्प्तामेकां मोहतश्रक्तं दूर महादेवनी सहादेवनी WATE पर्होत्राजन्मी पारवार्कि धर्म (92) त्राला मु रिवमान्दी पी नाक नी स्टेर योधपुर मारवाउ CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

३६-३८) मानसार्थाः विस्तासकामानार्थः कारकेकेसाध्यमान मारीरस्य मने तन्यं धता सी ख्या भिचारतः इत्यस्यात्या नेकः उपन्यः अत्रवाभिचारः किर्त्रः क व्यम्ना तस्यत्रशिरेचे तेन्या भावसाधक त्यम् १५ यातानि यंवार्थिनं ह्यादिष्मध्ये गन्तस्रो नामियमुक्तानात् इत्यमह्या न्य मध्याद्रामसाने निब्धसाचाः १ तद्यादानं स्पना किं प्रयोजनम् ११० मंख्या कारन वायः कार्यः । तमत स्वठड न च कापाताः १ (१०) परमा मा विन पारादानीय निर्धायार् कार के विषयं ११ (१५) नाय जात्या वित्रण्डामां कास्या कि त्य साराम् १ एवं काया रात्या कारमञ् क्र स्का प्रयागः । भाषा जानक तत्त्व ज्ञान जत्य वित्व उत्तान वियागाडित नवा १ अस्ति जत्म काहराः १ नगिन जन न्यापदश प्रते नन सूत्रकृत क्रमस्त विस्वीयते १ साना, मान वयव, तका गां भाषा परिनेद्व की तो अवयवासी के इ वयविति वें प्रमार्ग १ मनम इन्यानं मुलक्त गमानं न वा १ मामते व सून प्रोत्ता रवा न स्व सूनास्य व्या रव्या विष्यताम्। ्राम्भीता या वानां जारतताजारतत्वयाः कृत का प्राक्र (90) TON HIMAT Y

सा पारत दरीन स प्रामित्री कृतयाम

१-बड्दर्शनसम्बयः १-तकेम्स्तम् ३-सांखारारः ४ मीमां सापरिभाषाः पञेऽनुवादेविदान्त्रवीरभाषाच तस्येव मध्यमणरी स्थामा

१-तर्कसंत्रहः २-यमुद्त्री र्-वागस्त्रवीतः ४-मिद्धान्तमुक्तावती ५-त्रेः त्यायमाला(ष्रयमाध्यापः) — अनुवादस्य द्वितीय धर्तर चनाया स्

तस्येनोपाधिपरी द्यायाम् प्रथमपत्रम् १-माधनान्यम्कृत-सर्वेस्त्रीतसंग्रहः २-त्यद्भेतन्त्रप्रासिद्धः ; द्भितीपयन्त्रम्

१- मां स्थतत्वकोगुदी, चोगस्त्र भाष्यम्, (नानस्यतिकृत टीकासाह्तम्, शास्त्रः याः तर्कवादश्र)

वितीयपनम

वेदान्तीस्यान्तम् कावली, क्रममाञ्चाला हिर्दास टीकासमेतः। भाषा मुकावली, वर् सन्दर्भमु (जीवजोस्तीमकृतः) च नुरायन्त्रभ्

मोतिक परीक्षा (यन्यत्या रामा नित्रासा)

स्थाप्य पाइन व्यक्ति माध्याधिक रशा प्रतियो निक अहा धिक ह रानि रूपित के ति जा त्यना भी वो व्याचाः गध्यताथन्हे इक सम्बन्धावन्दिनाध्यता निरु पिता थि कर सानायत प्र-तियां जिक महाराकर गानिस्थित सन्तित्वात्यन्ता भागे व्यापि, गध्यताव के इक सम्बन्धा व चिल्ला धयता निक्रियता चिकर रणता यता ने चिद्व प्रोते यो गिक मे द्रियकर रा निक्षित व हित ज्या त्य ना भाने उपासि: पाध्यतावन्द्र इक सम्बन्धावन्दित्राधियतानि ह विनाधिकर साताव त्थान किन्त योतियां गिक भेदा धिकर्रा निर्धिय तह तुता नके १६क सम्बन्धान केंग्र यतितात्यन्ताभावाचा पिः नव मध्यतावन्दि हक सम्बन्धा व चिल्नाधयता निरूपि ता धिकर रातान त्वान गानी के ज प्रतियोगिक संदाधिक रशा जिस्पित हत्ता गर्देह क सम्बन्धा न्तर रात्तरा लाव न्छ्य प्रतियोगिताकात्यना भावा त्यापिः च्यो गन छद्क सम्बन्धान कि जा ध्यतानि हिष ताधिक रशा तावत्वाको मिनि यामिक म हारिकरता निर्मापत हुतान के हक सम्बन्दम ने किन्न मित्र निय छह के हत्ताव छ इकं व्यापिः मुक्तावली स्यास द्रान्त या प्रिस्वरूपम् ले त्यकरता अत्यत्यता भावा प्रति यो का सारम सानारिकरतांप विधिकररा चत्पत्यना भागे य यातियागितान न छ दक साध्यतान विक्ति सामानाधिकर राषम् व्यासः CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बद्धदंकावाद्धवादानामानाचिकरराएं व्यापिः

- ४- हुतुत्तावद्धेरुकार्व विद्याना द्यापाना दिक हाता तावद्धुत्य त्यन्ता भावी हा प्राथा। व्हेर्दक सार्यता व व्हेर्दकार्वा व्हेर्टन सामाना दिक र तर्थ्या पिः
- ५- हेतुतावळ्रकार कि अहे तुतावळेड्क सम्बन्धा व कि भाष यता निर्हाणता हुत्यत्यनाभावीय प्रातियोगि ताथ तवळेड्क साध्य तावळेड्रकाव विकासा क
- ६ हुनुताबद्धद्रकाबिद्धम् हुनुताबद्धदुक्य सम्बद्धाविद्धाना छेचना निद्धाविद्धारित प्रतियोगिक्योचकरणा त्यंन्ता भाषीय प्रतियोगिता नवद्धद्रक साध्यताबद्धद्रकाव
- ७-स्वयनियाम्यनियकररीम्यूत्रस्तु ताव क्टर्स्य सिन्तरे तुत्रपक्टर्स सम्बन्धानी द्वीयनीयकररामावस्त्रस्य तामाविष्ययमिनियामावस्टर्स साम्बनावस्टर्साविक्
- ० स्वप्रतियोगितान स्टूड्स निस्ता साध्यतान स्टूड्स सम्बन्धान स्टूड्स वित्राधिता विद्राप ता विद्र
- १० यादृश्राश्रीत योगिता वन्हें दका वनिक्षा सार्य ता वन्हें दक सम्बन्धा वनिक्रता स्विताचि कर गाताव दि करितृताव हें हुका वन्हिल हितु ताव के दक सम्बन्धा की ता निहित्त्वता चिकर साताव है सहस्य न्ता मोवी स ता दश श्रीत या शिता व व
- २१ प्रियोण ता बन्धे दक सम्बद्धा म्यात्रया प्रवास कार्यात्र है।

 बस्य मान प्रतियोणिता सामान्ये पत्स म्बन्धा व स्थित यह व यह ।

 भया भाव स्तिन सम्बन्धन तह मी व सिन्ती व्यापका तत्सामा .

 व्यापि

इति॥

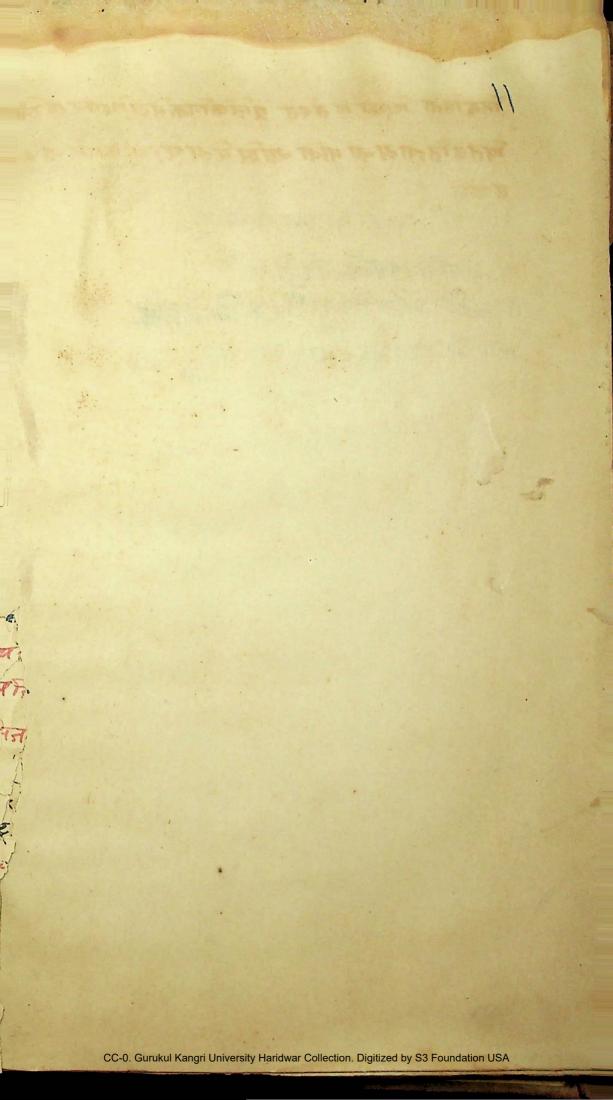
भा

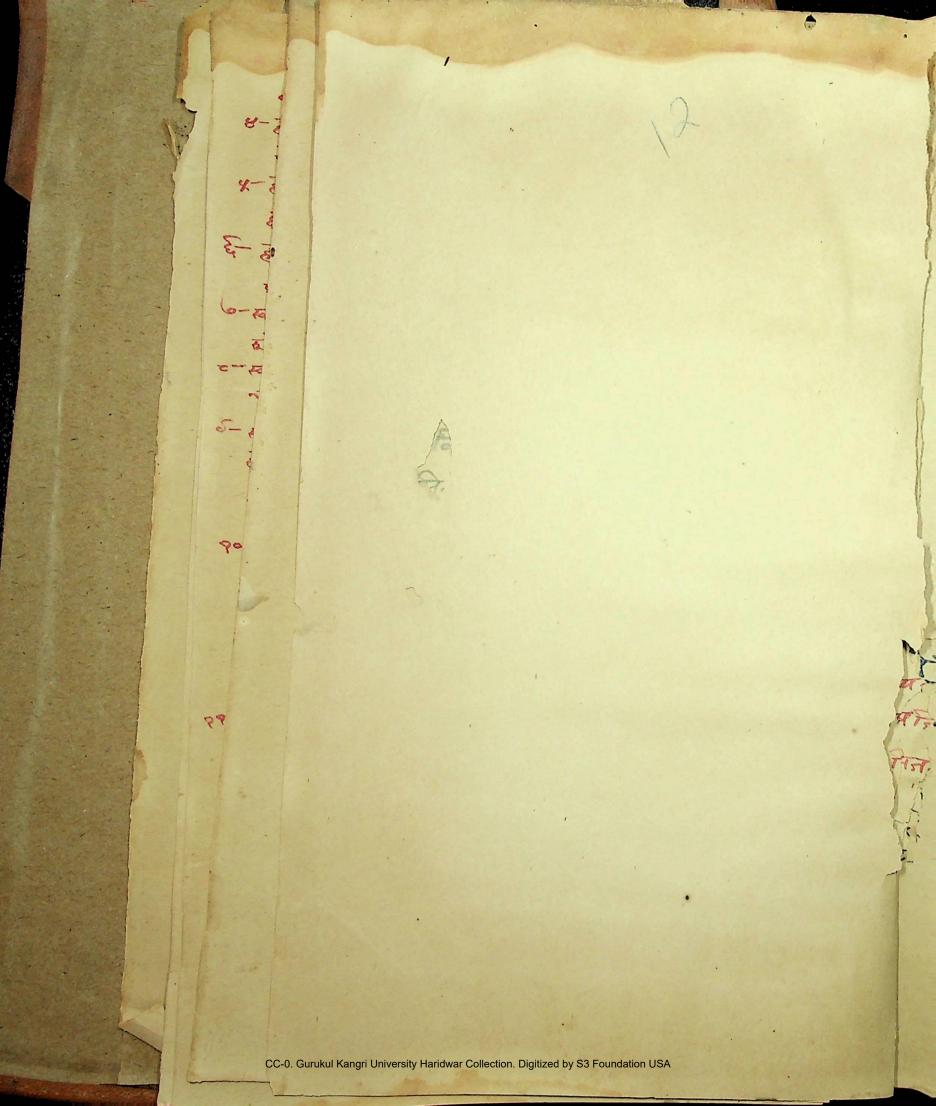
न्तन जन्यर हत्ये। गायव धूरीरुकू ल चौराय ॥ तस्मेकु छाण्य नमः संसार महो रुह् स्य वीजाय ॥ १॥ न डाम्म्योकृतिवधु र्वन्त्रयोकृत वास्य किः ॥ भवोभवृतु भव्याय नीनाना गरुव पंणिरु तः ॥ २॥

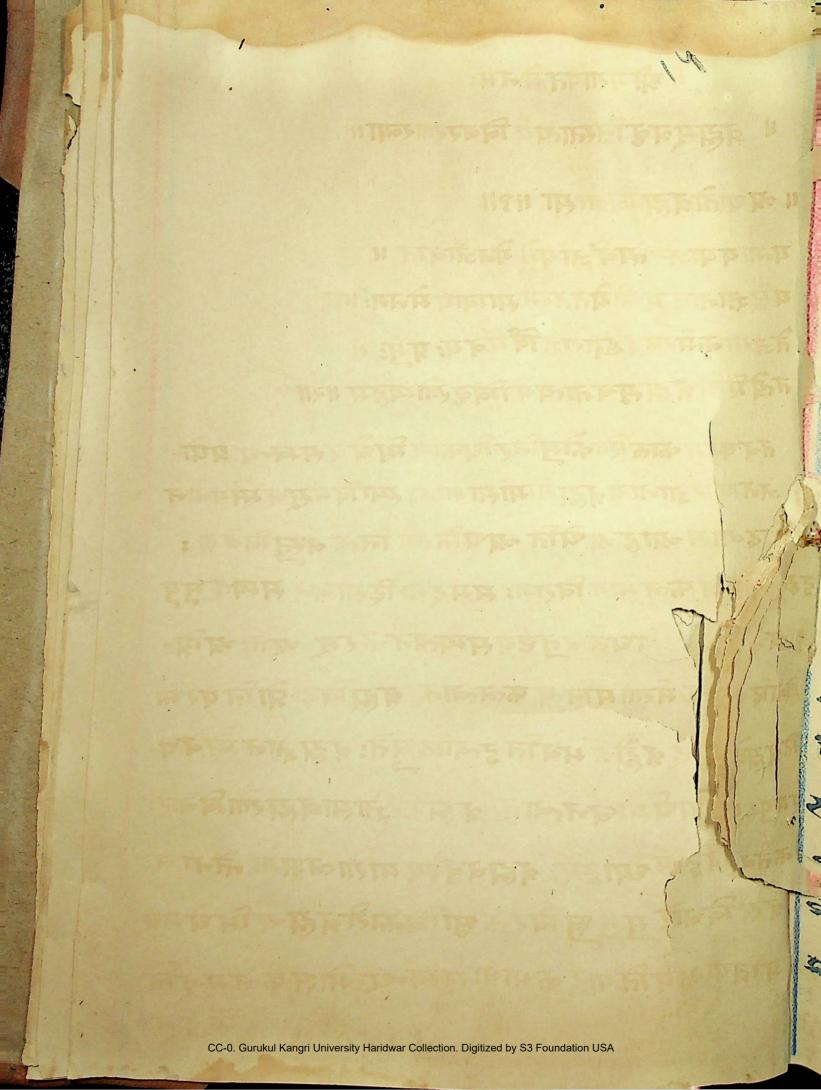
श्यम् कावनीस्य वासिखर्पमाह।वाणिःसाध्यवर्त्यासमिनिति। र ध्याधिकररा प्रतिचामिक भेदाधिकरशा निर्माणत दिनित्वात्यना भा-ो यासि रित्य थे:।समन्त यमु पर्वतो बह्निमा नितिः भूनुस्रितिसाध्यके म हेय महिता यथा।तथाहि माध्याविह स्तरिध कर साम्पर्वत सा-। च्यम् । धूमवा लेत्याकार के स्य साध्याधिकररा प्रतियोशिक याधिकरता - अयोगालके हता वह विद्यमानन्यत्। ननु प्रतिविद्यान्ति। त याहि निनो बाह्नेः समवाय सम्बन्धेन तद चिकरशा महे खय-तत्य ति यो गिताकी भे इ सम्यायेन व हिमान्त त्याकारकः-इ धकरणाम्बनः तन्त्रित्वत्वित्वसेव ध्रमम्मागत ति रित्येति न वाच्यम् साम्बन्धन तात्।तणाच्यावक्रिकसम्बन्धावक्रिताधेयता

निस्पिता जिकर म तावत प्रतियोगिक मेर जिकरण निस् पितर नितास ना भावा यापि रित्य थें: ।तथा सित ना व्यापि संयोदि पशु पते भवता स्टाम्ना किन पशु पते भवता स्टाम्ना सिन पशु पति सहस्वर चन्द्र वसु हिंदन है विभन्भ हथा निम्मा स्वास्ति ।। शिर सिन राष्ट्र वसे साम स्टाम्ना

त्न च रतो द्रिता कराइ द्रितेष्ट्रभो ।। त्रा







॥ श्रीगरायतयेनमः॥

॥ व्रह्मस्त्रवृत्तिस्तात्पर्यविवररणस्या॥

। अयातो इस निज्ञासा ॥ १॥

यमाययानगत्मर्वं जायते येनजीवति ॥

य दिसामान् प्रतीयेततस्मे माम्बाय प्रेनमः ॥१॥

तेजसाकमिराग्युसाराजिषिर्वयः प्रभुः ॥

तत्ये रितो ब्रह्मस्न तात्पर्य चिवर सो म्यहम् ॥२॥

तन परम कारू शिक्तेम्निर धिकार्य भिधेय सम्बन्ध प्रयो-जन परि ज्ञानाय ब्रह्म भीमांसा शास्त्र स्पादि मंसून समावान रद्याय न्याह अचिति न्यचनित्य नित्य बस्नु विवेतः : इ हो भूज फल भोग विरागः समदमा दिसाधन सम्पत् मुमु इत्वरीति साधन नत्र एय सम्पत्मन नरम् यतः यातः यातः ाजारि के मेरणा मनित्य फल्मलात ब्रह्मविदा प्रोति पर मि मं ब्रह्में वह ब्रह्मेन अवित इत्यादिन तेः ब्रह्म ज्ञान स्ये न प-अप्यक्षार्थसाधनतात अहा जिज्ञासाश्रस रेण विचारः चेत्रावियाः स्माहारः ब्रह्मचव व्यमारालक्षरा नेना व च्य विचारे मुमु द्विरक्त सा धिकारी ब्रह्म न्य भि घेयम तिपारायतिपार्कभागः सम्बन्धः माश्राकनम् इति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ जा मास्य्यंतः ॥२॥

विचारस्य लक्षरागिः साध्यत्वा ह्वह्य रागस्तरस्य लक्षरामा ह अक्षा स्वाहित श्रस्य प्रतः यस्मा ज्वलमाहि जन्म ह्या स्वाहित प्रयच्चस्य यतः यस्मा ज्वलमाहि जन्म स्थिति भद्गः न्त दुरास्य स्विज्ञानी वहु विचिहि सेविति तत् षद्म तथा व ज्ञाज्यसमाहिकार सालं लक्ष्मा म् यत्नाम दुमानि मृतानि जायन दुत्यो दिक्षतेः ॥२॥

ा शास्त्र वानित्वात् ॥३॥

नगतार शात्व प्रदर्शनेन व हारणि जिन्य प्रक्ति ।

सर्वज्ञ ने विह्य स्व देव देव प्रिक्ष शास्त्रित प्राप्ति ।

क विद्यास्थाना पर्व हितस्य प्रदेश यन त्मनी का

महत्त्व जिद्धा है शास्त्र स्था निश्चा सर्वज्ञ स्था ।

तित्वात निष्या ह कत्वा द व हासा सर्वज्ञ स्था ।

त्वा व सिद्ध म वान्य प्रयो ने वान्या चे ज्ञानस्य ।

तथा व प्रतिः श्रस्य महता भूत स्था निश्चा त्र तथा ।

विद्र ह त्या दि निवस्या चे स्था निज्ञी युकं यस्य तस्य ।

त्वर्थ स्थानिज्ञी यो निज्ञी युकं यस्य तस्य ।

17

न पूर्वो त्त ज मत्कार गात्व मिद्धि यतो वत्या दि शास्त्रा दे-न एवश्च पूर्व सूजा थी सिद्धिय दूरं सूज मिनि भागः ॥३॥ ॥ तत्त्रमञ्जयात ॥ ४॥

नन्सर्वस्य वहस्य सप्या जनकानु छ प कियापर नात नहायरत्ने इनित्याचीत्वात् व्यवामारायाचीत्र रतः कथ-चित्रकार देवता दि गुरापर ज्याप उपास्ति कि यानार परावसिवावक्तवाम परिनिष्ति वस्तुनः प्रत्यसा दियमार्गान्तर याह्य त्वात महीत याहकत्वेन वेदाना ग्रामपा माराया यत्ताः होया वास्परहिते पुरुषाचे त्वामा इहोर जात एवं मञ्जारी वीदा दीनां कियासाधन पर श्रुत्व भूर व हा पर त्व मि ति प्रा मे उच्यते तत् समन्व हो चाहि वे तत बहा शास्त्र प्रमासाक मितियोषाः सम-संवस्व सर्वेषु वदान्तेषु वाक्यानि तात्पर्यरा ब्रह्म मण्डारकात्वे नसम नगतानि सदेव सा म्यदम क प्रियो दक मेना दिती यं ब्रह्म अप्रात्माना इहमे कश्चाम ज्यासीत इत्यादीन ख्लुत ष्पकमा गसंहारारि तिहै वह पर तो निसी ते अपीना मात्रास्य पर त्व द्वा कि मात्राया चे मुक्त न्त समा न्क मी चित्र क जीदि परत्वेन व्यक्तिप्रकार्म university Handwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

great

18

॥इस्तेनेश्च्या ॥५॥
नन् प्राक्त नगद्दा स्वकाररणर हितम बह्न ष्या
तदाक यं सहकारिकार एए दिता त्येवत्या जनगद्दे
रवा सिद्धाया ने कात्मक प्रधान स्य चिर राज्य स्वस्त्र ।
दिवत्वाररात्वा च चत्तः नजगत्कार राज्य म्बह्म राज्य सम्माधने इस्तेनी श्राद्ध मिति ॥ नां प्रधान जाः
सित्र पा यत साद शब्द म चेतन स्थावा त्यनः स्व
बुग्रह राजित स्टि प्रवित्व चादक सुतिश्च स्व रहित क्षित्व व

न्यासी दित्या दिना तदेशतन द स्याम्य जा ये ये ति सई शत लो का शुस्र जा द ति सई शासके सत्योत स्यान मय ने यः इ त्यादी ज्ञान पूर्वक स्ट छः प्रति पादनात न ति गुराग सा-स्याव स्थायां सत्वो देक धर्मी ज्ञानं सम्भवति कि जुनासा-शिका सव व्यति जी ना मिना थि धी यते नचा चेत न स्युधानं स्या श्वी भवति तस्मा न्य यथा नस्य सर्वज्ञ त्यं यो जि ना न्तु स-त्या तक वि निवा नं न्या धुनिनं सर्वज्ञ त्यं यो जि ना न्तु स-

।।जोरा श्रन्मत्मश्रन्त ।।है।।

20

वते सतहनाह प्रिमास्ति सोस्वताः भूनन जीवना स्मानान श्रुव्य नामरूपि व्याकर वारित समित्री जीवः भूम त्या स्मान व ति त व्या स्वति के मुद्रित त स्व मसी ति भ्या स्माउ मेर प्रति वाद न प्रिय न सम्मावति भ वेतन प्रधान तहा स्मान ति भ्या से ति वाद समान तहा स्मान ति भ्या से सिन त्व मार प्राय वेतन असम्भवा न समान ते भी राम सिन त्व मार प्राय वित ने असम्भवा न समान ते भी राम सिन त्व मार प्राय वित ने असम्भवा न समान ते भी राम सिन त्व मार प्राय वित ने असम्भवा न समान ते भी राम सिन त्व मार प्राय वित ने असम्भवा न समान ते भी राम सिन त्व मार प्राय वित ने असमान सिन त्व मार प्राय वित ने असमान सिन स्व मार स्था सिन ते भी राम सिन त्व मार स्था सिन ते भी राम सिन त्व मार स्था सिन ते भी राम सिन ते भी

। तिनिष्ठस्य मोक्षायदेशात।। ।।
न्नुरात्रः सनी चिकारिणा भरत्यं भवत्येनात्मश्रदः मप्रात्मायं भद्रानद्रत्यादोत्तया प्रधान मि च पुरु बस्पा
त्मनः भागा पनर्भी कु नित्र उपकरो तिराद्रः भरत्यद्रव
स निश्च विश्वहादिष् व ती प्रानः त पा जोति कामादो अ
प्रादी च ज्योतिं श्रदः प्रयुज्यति त चात्मश्रव्हो वि चे

ना जतनयाः म तात्मा इन्द्रियात्मे ति प्रयोगा इ वा इजेतने पि ज्यात्म स्व द्वित क श्रमात्मे सतः ज्या गोरात्मे पि ति प्राप्ते न्याहः ॥ति कि ह न ज्यात्म शब्द न प्रथानं जेतनस्य श्रेततके हैं। तथास्य व ह्या नि श्रता जका ज्या जार्थनान् । तस्य ताबदेव जिर ज्ञावन्त्र विमो स्थे ज्याप्त् तस्य द्वित श्रह्म निशस्य मास्रा पदशात् यादि स्व दि सत् शब्द वा न्यम स्या तदा म मुद्दा जेतनं स्व ता

वतनासीति विपरीत वाहितत्व मा सी तिवाब

१ यह दो लिमेतदात्म्य मिदंसर्वसञ्जात्मा तत्वमिश्रवेतके लोइत्याहों

CC-O Gurukul Rangri University Handwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

म्पुरुष्यानची ये वस्यात गुन्ध मोलाङ्ग्लन्या पेन ग्रात्मानञ्चनजानी यान तस्मादि ग्रहो जादोनां यथास्व गीराची मुयदेशः यणाभूतरूव खुत्या कियते तथा त्मिन मुज्य स्य ख्रेतिके त्यादेवी स्तव ने तनात्मत्वा पदेशन स त्यक चना दनची निव्यत्ति जीन्धार न्या येन भविष्यता ति एव ज्ञतस पर्य ग्रहरो मो स इति सत्याभि सन्ध स्य मोसः तस्मान्ता नेतन स्युधानं सक्कद्वा न्यम ॥ जि ॥ हे यत्वा वचना न्या ॥ वा

त्ता नर रागाविसां खान्द्रपयति।हिस ने ति।यदि मधान मनुमतं त्या तदा स्थूत्मारु न्या तीन्यायेन वर् ्राह्मां वसर राज्या येन पूर्व पूर्व प्रत्या रयाना य न यम ेरी ती तिवत नायमा सीत युनरण यह पिरेशत क्तान्य केर साविज्ञानात् सर्व स्विज्ञान पि तिष्र तिज्ञानि होनाहि नेत उत्तरमादेश म वाष्ट्रियोय नाड भुतं भूत मन त्व द्वा मन मिन्नात चित्रात मिनि कर्ण्नभग प्राप्त है म योग्न ज्ञातं स्यात् नाचार स्थापिन कारोना क्रमें रितिक त्येव मत्य पित्यादि श्रवसा तत्यान वार्याक गहरा तज्याने न त्कार्य भाग्य व जी जायती ष्रधानविकार ज्याभावा तस्य तस्मान्त प्रधानं स न न भो क्रवजारायत । क्टब्द्बाच्यं स्वं स्व ष्टम्।। च।

गस्ताययात् ॥जी

॥मितिसामान्यात्॥१०॥

युत्तांतर पाह ॥गतीति॥ यदि तार्विका दिवत कविने तद्वातर पाद्वाचि द नतम्य आतंख्वभागिदिकंत दापव प्रभवेन्त चेवंसम्भवतिसर्वे चुवेसन्ते व चेत्रमध्ये प्रभवेन्त व चेत्रमध्ये प्रभवेन्त स्वीदिक्षे विस्कृतिहा विष्यु स्वीदे तस्पादात्मनः सर्वे प्राराण व खायतमं विष्यु प्राराण प्रधायतमं विष्यु प्राराण प्रधायतमं विष्यु प्राराण प्रधायतमः व्यावता व प्राराण प्रधायतमः व्यावता तः व्यावता स्वीदे स्वीदे द स्थादि यु चेत्रमात्मान्य व्यावता तः व्यावता स्वावता स

कुतं भुसर्वत्र म्ब्रह्मकार साम्रत-ग्राह ॥ भुतद्वा दिति क्रोताव्वां य निवादि सर्व ज्ञम्यकृत्य भूपते सकार सादुः इर सामित्र वी ब.स.च. ता. (७) अ.१ पा. ३

गस्य कित्रिज्ञानिता न गिध्य प्रस्तायोस्य एं सर्वज्ञनं प्रतन्त स्मात्सर्वज्ञवह्म जगत्कार सामिति सिद्ध म् ॥११॥

गञ्जान ममास्या सात् ॥१२॥ वेदान्ते पृष्टि रूप म्ब्रह्माव अम्पति मा सर्वा दि भेदी पारिव विशि एं सर्वीयाधिव जित्ता य या यजाह द्वेत भिव भव ति यज त्वस्य .सर्वमानीवाभूदिति उपकार्य द्यार्थे भू मातद मतम अयय यद्व्यं त नमनीं स्वी शिष्ठ्या शिष्ठिम्हण धीरी नामानि कुत्वीत निल्कनं निद्धियं शान्तं नितिने ति ज्यस्य न्यमत् एवं न्यून मित्या दिनात ना विद्यान स्था या सुपास्था पासक आनम्बन्धारः का निर्वास मा अ मुद्या जो का चित्र कुम मुक्ता जो का चित्र में सार भद्राची तासाइत्सा याचि भद्नभदः यदाचि एक एवात्मा त-ापि तं यथाय बापासत तदेव भवताति श्रतः ययंगाप ए हो त्याचे त्यात्यनी कलेवरम् इत्यादि सरते भा यथा मं फलात्यपि भियाने एवं इस निरामित त्रस्तिनिर्द्रियति इतित्रद्रशियनं यरस्त्र गरा ति ब्रह्मवाकी। न्यानन्दाते । न्युकामय यासा प्रयमना मया विज्ञा उद्याती निरो ये श्रूयते तसमादा सना हिना पि द त्यान्तरात्मा मन्द मय द्वीतिविषय वाक्येसंशा ज्यातन्द मय शब्दन श्रह्मीस न्त उतपर म्ब्रह्मीतन्त्र युवे पक्षः न्यान्तमयादि प्रवाह पिठतत्वात तस्याप्रय

में मेन त्रिर इत्यादिनाऽवयनयोगात् तस्येषस्वशारीर न्याता इति प्रारिर त्वप्रवरणच्च संसारी जीव एव या ह्य इति प्रासे आनन्य मयः पर्यातमा कृतः न्य भाषात् नहवाने व परस्पेन यह गात र मोवे मः रसं होवाऽयं ल ब्लामन्दी भव ति सेषानन्दस्य मीमांस भवति न्यानन्दम्बस्माविद्वा नतियो तिकृतस्ने ति विज्ञानम नन्द म्ब्रह्म इत्यादे ब्रह्मे वास्यं गम्यते यद्ययम् रह्या यवाहे याउर यापिस्यूतारु-अती-पायेन मूबानिषक्तद्वतामादि प्रतिमावते त तोन्तरान्तर तया पूर्व पूर्व रा समानमात्मे ति याह यन यति परि सोक पोय ज्यात्मान मुचिद्देश यनु प्रिय शिरस्वादि यन्वशारे रतंतरनमधारिकरिरपर म्यरयायस्य प्रान्तान्त्रम् शिरत्वं संसारिवत तस्मादानन्दमयः पर्वात्मिति हि मानर मा हे व्यद्श्याम ॥१२॥ ।विकारशक्तकानीते चेन्त्रपान्यान्। १३॥ पुनर्विकाराधिक मयह प्रत्ययम विकारी जीव एवं निमा गृह्य समाधने विकारित। नान्यीयः ग्राप्त्र समा यतः वाहरी गर्मे ग्रामइत्यादिष्रप्राचुर्यमयट्दर्शनाद्त्राचि भ्रानन्या प्रचरित्र स्नित मन्यानं दार्थभ्य उत्तरात्तरियन् रात्रग्रामा दिश्क का ब्रह्मानन्द्रस्य निर्तिशयस्य प्रदर्शनान्त्रविकारा चे मयर ।१६ गतद्भवयदेशा चा।१४॥ षाचु पीची युत्तत्य नतर माह। तद्वी त्विति। यस्मादान-दहेन्ति

21

त्र. स्. व. ता. (११) अ.१वाः१

व्यमोवदाने प्रचान रपद्यमान देयाति त्राकेण पः स्वय रानिकः सरमानन्द्यनिकद्वराति रवंस्वयमान द प्रवर्षे द रानिप भ्यान न्द्यतितस्मादान द प्रवर्षे स्था। १४॥

।। प्रान्त्रवर्शिक कृव च भी यते ॥१५॥ द्भिवदायो ति चर मित्यपक्षम्य सत्यं ज्ञान मननं ब्रह्मतिमन्त्रे इपत्यिदि विशेषशानि धीरितन्तदेव अत्योन्तर खात्मत्यने सवी बर्तने व ब्रह्मविज्ञाना य शाह्यं यतः। युक्तन्तरमाह। यन्त्रवा स्तान

र कार्यतं युक्त निवेश्वे व प्राजिवी वा हरी। विद्या तस्मानमान्त्र वर्ष बिक प्रवन्य त्रापिती पति ॥१५॥

गनेतरोड्न पयत्रीः ॥१६॥

ज्ञानन्तरमाह । नतरद्ति। दूतरो जीवो नग्राद्यः न्यानन्दमयम्य त्यं माकामयत् नहस्या म्यूजायेयिति सत्यातय्यत् सतयस्त दूरं सर्वमं जत्र यदिद् किः चेति तज्ञीनस्य बहरो प्राक्त्र

यु वितिक सञ्चयाना भि द्यानंतर न्यमानस्यस्य स्वाव्यतिरेकः, स देव विद्यानायपद्यते न्य तानेतरो ग्रास्यः ॥१६॥

ारिमतंत्र नदेशाच्यार्य।

ताः क्रिश्चिया दि कार रसावे सः र संद्यायं लट्टा नन्दी भवति । व्याय यो में देन ट्याय देशः व्याता पिन संसारी न हि लच्छेव लट्डा वा ति दुत्याह में दे ति ॥ १७॥ ।कामाचानुमानावसा ॥१२॥

प्रधानम्यान्दमयप्राव् ब्राह्मस्य वित्या शेष दृश्तर्याधकररोति। त्त त्वनिराकररोत्नो निराकृतम् विष्यदुनत् युक्तनन्तरेरातिराकृषते ॥ १कामा स्विति। त्वकामयेति तिकाम वित्यत्व निर्देशास्त्र न्यानु पानप्र-धानस्य न्यावेशा ॥१०॥

॥श्रीसान्तस्य बत्रद्यागंत्राम्स्त ॥१६॥

युक्तन्तरमाह। न्यासिनिनिति न्यासिन्यकृते न्यानन्द पयेवहारिता अस्य जीवस्य त शागत द्वानाय तिं मुक्ति प्राप्ति प्रतियाद्य ति च यद् होवेष एतसि नद्रश्येत्रेनात्य निरुक्ते निन्यमे प्रभाष म्यती सा चिन्द्रेत अधारी भयाइती भवति धदा द्रीवेष एतासिन्तु एर मन्त रङ्गारते न्य्रयतस्य अयम्भवीति द्रीतयदान्नस्यि। न्यर् मत्यस्यिन्यता दातय म्पश्यतिततः संसार अया निनेतिते यदानन्द मये प्रतिष्ठां नि र तर मदान्य स्विन्दते प्राप्ने तत्र दासंसार अयान्त्रिवर्तत सत्ति शृष्टि प्रधानयर त्वेजीनपरत्वेना न घटत इत्यर्थः ॥१६॥ ननुकर् र षोन्तरसमय द्रसादि ग्रान्यान्तरात्मा विद्वानसय द्रत्यन्त कि मयटः युक्रमात् -ग्रानन्द मयद्त्यञ्चकथाम्या चुचै मयर । न्या श्रुवि यत्व आषास्ति न्या भीयते - प्रधानरतीय परिप्रहाव सेः ग्रास्थानव मानमनतम्बद्धीतब्द्ध शब्देनापकान्त मेनब्रह्म पुरेषच्रित यनोषसंहतं नानस श्रादेनी पसहर्त्तेशकां प्रियशिए स्ट्राह्म श्रुतत्वा हान न्द्रमया जीव एव जहा यु के व्रति छत्येव पर तिरेव न विषयः ति इग्रामां व पश्चको क्रोतिः मुद्धनोक्ति सु पुन्ति युक्तं सर्वीधारत्वं द्योतनाय सर्वानन्दा नाम्ब्रह्मानन्दा सितल

वा नु च ना

मित ने देन मित्र गारिया मित्र प्रमान स्यक्त स्वी नाम् न्यासं स्व ता द्वेड लया यो यो विनयमारा स्व एव मयह न्यानन्द मया या स्वान ता हा विन द्वितं उत्त स्व प्रधानन्ते ने ते संशये न्यानन्द मया ज्या स्व व्यान महा पुन्छं प्रति स्व प्रधान मेन ब्रह्मीप दिश्य ते मुस्क श्रा दाद वय न त्वेन न्य सन्ते न समन ति इत्य स्मिन्नि गमन श्लोके महा-गाएना ग्यासात् इतिस्त म्या स्वेयम् एत नात्य येती ने तर समस् प्राणि वेर्डा मुंद्रा स्ति इत्य न्यानि पुन्छ ना व्योगि दिश्र स्व त दु देव वा

27

॥ ज्यनस्तद्वी परेतात् ॥२०॥

॥ न्यन्तस्तद्वमिति। न्य्यायकवी इन्तरादित्ये हिरराम यः युरु यो दृत्रय ते हिरराण साम् हिरराप केश न्यारा खात्स व स्व सुवर्ता सास्य यथा क्रया संयुरादरी के येन मिस्रिशी तस्योदि तिनामस्य संवीभ्य पा स्म आ अदित उद्देशित हैं वे धर्वे भ्य पापाध्य यह वं वेदित्य चिद्दे बत मणा त्यानां न्याय एवा न्तर सित्ता पुरुषो दृश्य ते इत्या ही न्यादित्य सुरंभानाः च सुरन्तस्युसयः सूयते सिकंकमी विधा । तिश्या -त्य नियं कि वे: कियतमंशारी मण्डले वस्ति वोषाया विशेषमी दाहतत्वा त्रिम वह वे रति दिश्य ते नि विस्वं यद मुख्य हुप मिसं सामेव ने श्वरः अ शब्द नः क्षेत्रम्यमव्ययमितितस्य निर्श्यमितः त्यादित्यिश्वराति व्यार भ्रवराान्य तस्मान्त्रस्वरद्तिप्रासेन्याह। स्नन्ति। न्यादित्ये चसु वि चन्यन्तः उपास्यत्वे मस्तः इश्वर स्वकृतः तस्यधमीः उपि छाः भाराः यचा एवसर्वे भ्याः वापा भ्यः उदि

08

तर्तिसर्वेषापां जमसुपरमात्मन व्येक्तः यन्त्रात्मान्यपहते च चेति तथाचा हु बे खुर्त तदे वकी तत्या मतदुक् यंतस्त्र राज्ये ब् ब्रह्मे तिन्छ गासात्मकत्व नात्पर मेख्वरे उपयद्यते सर्वकार्या सा तात् मवीत्मताय पत्तः लोक कामेशित्स व पि निर्द्वः श्रं भूयमा ला वीक्ररद्रमयति यनिहरसयस्य भ्रत्यदि गुराष्यवरां तत्मार्यक्ति नु ग्रहाय रे विसं माधिकं माया हो वं मया स्ट श स्मां प्रयम् नारदेतिसरतिः व्यङ्गराविशि छत्वेनोयासनार्थेवासाव न्दर्वश्री व्ह मस्य त्री पित्यादित स्मान्यर वेश्वर एनाय दिख्यतेनः, ॥२०॥

। भेदव्यपरेशा चान्यः।।२१॥

यु क्ल-तर माह। भेदिति शरीरा पि मा निस्यो नीवा दिस्योध नाँ (इस् गत्त यी मीव्य परिश्यते य ज्यारित्य तिष्ठ-मादित्याद्वतरा कृत्य दित्यानव दयस्यादित्यः शरीरं इत्यादिष न्यादित्या दिन् तमना न्यां उन यो यो इखरः स्प एं नि दिष्टः सर्वेहा त्य भवितु महीते तस्मा देश्यर एव ॥२१॥ प्रामाहित न्यामिय १०० ॥श्राकाशस्तिक्ति द्वात् ॥२२॥

न्यस्य तोकस्यका गति रित्याका शहित ही याच सवी भरेष गर्नः यानि म्तान्याकाशोदेवसम्त्य यन्ते न्याकाशं प्रत्यस्त्र न्पादि युतं तत्र कि माका शश देन मूताका शाबस वेति मे भ्ताकाशः तस्यन्नोकवेदयोः प्रसिद्धन्वान श्री प्राष्ट्री मारोहितक चित्र बहा शिसंभी रा एवं न्यूने का चेत्वर्य स्तर ता

29

नदिश्व कर सान्यायं न्य न्य नाष्याह न्य तर वे नि सर्वेका कि द्वा है व प्रारोग िव इसिव ग्रस्यं उद्वी चाविया पा प्रमू व्याचि देव ना प्रस्तान प्रन्ती चने न्य पक्क म्य करमासा प्रारोग प्रारोग वा स्वीसीह ना इ पानि स्नानि

स्तान मन्ना पत्ते ति तना वि स्वीरिश ह नेर्न्या वि क्षेत्र प्रतो त्या द कता दि स्वरता न्त्र प्रारा शब्द स्वाधि वि कार पञ्च कि नि प्रारा कि निव प्रवरः

ग स्य पा रा उत्त न सुष सुक्त रित्यादा नी प्रवरेषि

राश्चर्ययागत्।।र३॥

।।ज्यातिश्वर्शामि द्यानात्।।२४॥ क्रवं भू पते न्यू च यहूतः परोदिवा ज्योति दिधाने मि श्वतः एष्टे ससंवेतः एष्टे खिन्यपदाम्य पदि इमस्मिने नः प्रहा ज्या नि रितिस्त अ किं ज्यानिः शब्दा थेः वि हुः स् बीद ज्योनित्रि में प्राप्त अपार ज्या नि मिन गा स्वीरि ज्योतिः किन्तिश्वश्वरः चररापि धानात् पूर्व वान्य बतुष्याद्वस निर्दिषं स्तावानस्य महिमाततो छ ज्यायां या प्रहा या स्वी भ्रानिविया दस्या महा दिवि इतिचतु व्यद्वस्याः चिवादम्ते युसम्बद्धे " स्पम्तंतदेवेह युसम्बन्धा नियिष् इतिमन्ति है ज्ञायते तत्परिकाय प्राकृत तञ्चाति यह रोग प्रकृत हैं। दोषपसङ्गत् एव पत्रशारिष्ठन्य विद्यायायित दि व निर्वाध्या तस्यात्यकर सात् ब्रह्मा असे ह ज्याति रजन विन झिनसारका। ॥ हन्दीमिधाना नेतिन नत्यानेतो उर्वरा निय्याने ल हिंद्रीनम्।।२५॥ ननपूर्वमान नवसामिहतं किन्तु गायनी वार्व स्र प्रतंयदिदं किं चीते छन्दसः उत्तन्वात्कथमन दिला समाधत्ते हुन्दी भिधानादिति ने वदाषः तथा गय-ग्राषु हन्दी द्वारे शाबद्धारा नितसा उर्च सात् समाधान स्पन्न

वचन उक्त न्याता नहिन्यदार सन्निवेशस्य छन्दसः दं सर्वी प्रत्यु सं स्वीत्यक त्वं सम्भवित नस्माद्वाप्रथा विकासम् गर्ते ब्रह्मेन सर्व मिनु सर्वे सर्वे स्विन्न वूसितिवत काषी दिन्न त्वात्का रशास्य अपन्यना द्रशयतियातिः तचाविकार द्वारेरा श्रह्मा पासनं विकार द्वारेरा श्रह्मा पासनं विकार द्वारेरा श्रह्मा पासनं विकार द्वारेरा श्रह्मा पासने विकार द्वारेरा स्वाप्त विकार द्वारेरा श्रीय विकार द्वारेरा श्रीय विकार द्वारेरा श्रीय विकार द्वारेरा श्रीय विकार द्वारेरा श्राप्त विकार द्वारेरा श्रीय विकार द्वारेरा विकार द्वार द्वारेरा विकार द्वार द्वारेरा विकार द्वारेरा विकार द्वार द्वारेरा विकार द्वारेरा विकार द्वारेरा व र्यव दुत्याही तस्यान्द्वन्दा भिधाने वि पूर्वम्बस र्दिष्टं तद्व ज्याति बीन्ति पे परा य श्वते ॥२५॥ प्तादिपादे व्ययदेशायपते खेलम् ॥२६॥ सन्तर माह। भूता दीति स्तानान स्पत्यादिष्ठ सेवा नतु खदा षद्धिया गयनी त्यादी च भून व चिनी शरीर हदयानां वाद त्वव्यपदेशा प में रहीं एवं प्रविष्वसर्गं ब्रह्मियान यास्म ह नियामि वाद त्वा अप पत्तेः विष्ट भ्याह के. त्स्न मकां श्रेन स्थिती जगिदितिस्मृतेस् ।२६। विदेश मेदान्त्रीते जेन्त्राभयस्मिन्त्र व्यविराधातः ॥२०॥ मु त्रिपाद स्वाम् तं दि वीत्यन ससम्या दिवाः ाधारत्वमुक्त मतः परिवाज्याति रित्यन पद्म

थ स्ताः (१०) भाः १ वाः १ ३

॥प्रामा स्वयान नमात्। १२॥ के बात क्या वा न व पिर्द्र प्रत देना रु हिंदी म्य यते प्रत देना रुवे हिंदी के कि कि वा कि वा मा मा प्रता व जा मा प्रवृद्धित न वे वा के वा मा मा प्रवृद्धित न वे वा कि वा मा मा प्रवृद्धित न वे वा कि वा मा मा प्रवृद्धित न वे वा कि वा मा मा प्रवृद्धित न वे वा का मा एवं वे वे विवा के ति तथा प्रामा एवं वे वे विवा के ति तथा प्रामा एवं वे वे विवा के ति तथा प्रामा एवं वे वे विवा के विवा के ति न व्या व विवा के व्या के कि के विवा के व

(१६) अर. १ चा. १ वान्यानामार्थाः ाः सः नाः न न मंश्यः कियन प्रारा शब्दन नापु माननि ताता जीवा बस भा गासं अतर एव पाराइ वनन मता चीता किमची प्रान विचार हति गुनब्दालिइ.स्प उभयन मन्त्रोपे द्वतानापु तानादितिङ्गाना मिपसत्वा दिखकाशंकायाम् ामधारी नार्यं प्रम विचारः तन इन्द्र भीव वाष्ट्र न द्वानां स्पष्टं प्रतीते नेश्र स प्राशाः द्विपा ज्याह प्रातास्तयिति प्रातास्तया ब्रह्मेन कृतः इर्गमात वाबी पर्या सब वदानानां स विने ब्रह्म प्रतिवादन पर्छना वत्य भ्यते व बर लेखिति प्रतदेन से इंग्डिं! परम पुरु नार्व प्रधनं पष्टवान तसे हितनमत्वेनो विद्वयमानः प्राराः भ्यासेन न स्वयानम क्षेत्रिवार विखतितमेव विदित्वेति स्रतेः गाया या वदमहने तस्य केम च कर्म लाजा ीतियां यते नसियन भूराहत्मय निश्चराने रेव सर्वकर्म स्याः तस्मा त्यारोगव होन ॥२=॥

(२७) अन् १ जा. १ है. ।। नवत्र रात्मापदेशादितिचेद्ध्यात्मसम्बन्धापूमसम्ब मुडक्तम्यारेण ब्रह्मिततदाशिष्यसमाधते। नवक्तिति। सं न्द्रादेवता विशेषः प्राशाशकार्यः कृतः वक्त रिक्रस्य न्या त्वन्उपिद्रयमानन्वात् प्रतर्म म्यु ति मामेव विजा हीत्य पक्रम्य प्रास्ति प्रज्ञात्माइ त्यु पदिश्य मान त्नी इति प्राप्ते -प्रध्यात्म सम्बन्ध भूमाह्य सि चिति ह धा नं प्राराण्य प्रहात्मेर्त्रा शर म्योर ग्रीह्या स्वायय है नवार्च विजिज्ञासीतवत्तारं विद्याहिन्युपकाम्पताः रचना भावराः खरेषुने मिर पिता क्वमेव कताः ध्तर प्रतामानास्वर्णिताः प्रतामानाः प्रारोपिताः सरुष पारणा म्मानात्मानन्दा अनेरा प्रयत इत्या दिषु निषये निष्यया वहा है म्तम्प्रत्यक्षात्मान मेवायसंहरति तथा उन्मात्मे वरेता मावस यवीनु प्रिति घुत्यन्तर दातस्या ६६व न्धवाहत्यात् वृद्धेव प्राशाः नद्वतात्मा ॥२०॥

॥शास्त्रदृष्ट्यात्पदेशां वायदेव वतः ॥३०॥
क प्रनिति वन्तरात्मायदेश दृत्यतं न्याह ।शास्त्रिते द्रीते तास्त्रात्मायदेश दृत्यतं न्याह ।शास्त्रिते द्रीते तास्त्रात्मानं चिर घात्मत्वनं शास्त्र दृष्ट्या निश्चित्य कर्त्वने विज्ञानी भ्रतित उपदि शति च चात हित म श्च न निश्च मदेश प्रतिव देहं महिरमणं स्वि द्वे ति वा मदेश द्यातः तो प्रव दिन क्रिते व्याह्म विद्या ति वा मदेश द्यातः तो प्रव विज्ञाने क्रिते व्याह्म विद्या ति वा मदेश द्यातः तो प्रव वित्र ते व्याह्म विद्या ति वा मदेश द्यातः तो प्रव वित्र विद्याह्म विद्याहम विद्या

एम नीर्मित्व नहीय ने एवं या न्यावियां वे दम तस्य के न

विकर्मगा जोको हिंस्पते इतिविज्ञ यम्ब्रह्म प्राराशका चीः ।।3_

जीव मुख्य प्रारात्तिद्वा ने ति वे नो पासा ने विध्या दाण्यितत्वा दिहत दी मात्।। ३१। इतिप्रथमः पादः॥ चन्द्रशेखरायतमः

नुपाराशिक्नेनेन्द्र ग्रहरा न्त्रीनस्तुग्रहीतुं शकाते स्वं पुरव्यं पारेग लयाः तिङ्गात् नवानंदिव निज्ञा सीत्व कारं विषेत्वन कार्य कर्र-च्यस्पस्य नीवस्य विक्रेयत्वात् स्वय्यारास्य प्रज्ञा सेदंशरी नियु होत्वापैती ति शरीर धारलां पुरवा प्रारा स्य धर्मस-न्यद्गान्यश्चेति वेन्त्रत्यायति जीवस्य प्रात्यवासस्य ब्रह्मसा ति उपासमाने विश्वस्याना परें दिशे हे युक्तं उपक्रमी पसंत दिना एक वाक्या लाव जमात् नहिं विशेष्य में दे एक वाक्या लं क्रावित अववा मान्न निविध्यतिद्वः विरोधः प्राराधि मेता ्धर्मे गास्वधर्मे गाने ति निष्यकारक वृद्धीपासना द्वीकारा-वे ना 'निषद्ध तितु वशात प्राताशब्द स्व ब्रह्मिता दत्तेरा

त्राचार्ह हित तथा पन्यासा दिवस तितुः योगा च तसमा वया धा यस्य प्रचमः पादः

पित्र अर्वन प्रापिद्धां पद शात्।। ३३॥ 00550 । पादि स्प एव्रह्म स्मिद्धाना स्वान्या मां सम न्व पडकाः न्यस्पर चादि स्प एव्रह्म स्मिद्धाना स्वान्या मां सम न्व पडकाः न्यस्पर न्ते। सर्वेत्रीत। सर्वे खित्वद्म्यस तज्जनानिति शान्त पासीत् अपस्यक्त क्रत्मयः मना मयः प्राराशिर इत्यादि त्रसंशयः विमनशारीर मेपास्यः पर म्बस्न वा पनामयः पा- गा शरीर इत्यादिनो क्ता मनञ्जादिभः सम्बन्धा जीव स्थेव मनित नब्रह्मराः अप्रारोष्ट्यमना श्रुमद्र तिभूति विरोधा तसाजीव एवं तिषाते ब्रुते। सर्व ने तिषमनी पयानी भिः ब्रह्मेबोपास्यं कृतः सर्वे अवे दान्ते षु ब्रह्मनगत्का म्ब्रहास्य मिद्धनस्य वान्य उपदेशात् नच शान्ते मिति ति शम विधि विवस्या ब्रह्मो तंनस्व विवस्योति मनी मयत्वाग्रुपरे शेषु स्वश्चन शहा सन्ति हित्र है सुन स्वश्रवेन सन्तिहितः इतिवैषम्यात् तसाह हो रैतार्शवाक्येष्यास्यम् ॥३३॥

॥विव सित्रारोगे पयत्तेष्रा।।३४॥

युक्तानर पाह विविधिते नि चपुनः विविधिताना मुपि व उपिरशनांसत्यकामत्वसत्यसङ्गत्यत्व न्यपहत् वा दी मां गुमानां ब्रह्म राथ वो पयतेः न्य्रप्रतिवद्ध श कित्वा स्व ने पयत्वादि जीविन्द्रः न्तर्पिसवीत्मकत्वात् व्रह पद्यत्रवतस्मार्ष द्वहीव विविधितम्।।३४॥ -

॥ अनुपयत्तेस्त न शारीरः ॥३५॥

ब्रस्मप्पपमित्र मुक्ता जीवपरते न पमित्र माह। अनुक ति। तु श्रवी वधा रसार्थः वही बन शारीरः सत्यका पाका थाञ्जस्य न जीवेश्नप पत्तेः न च वस्ता पिशारी राम के तिवाचांत स्पसर्वी धिष्ठा न त्वेन शरीरा शरीर सेंधार जीवस्यत भोगा धिष्टान शरीराद्ग्यन बत्य भावात्राहरू

31

। वा भवति व्यवदेशा चा।३६॥

नियहरोग्य तत्त्र नाह । के मिति । यस्मा दितः प्रत्य एतं समा आ स्मीतिक मिक रि व्य परिशाससमान्त चेकस्य प्राप्तिक मिल-लि खास समा बीति एवं मिति उपास्पं ग स्यं प्रारोशियत्ता इति

मस्यापासक भावस्य भेदाधि ष्ठानत्वा चनशारीरः ॥३६॥

श्चाद्विशयान् ॥३७॥

न्तर ज्यात्मनीति ससम्यन्तात् हिररामयः पुरु बद्दित प्रयापा चित्रदस्य विश्वाषात् ज्यापेशारीराद्म्य उपास्पद्द्या हश्चेति॥ ॥द्रितेष्ठा ॥द्रुच॥

च ए व्यक्त मच्याह । स्पर तेन्त्रीत । इश्वरः सर्व भूतानां हु देश जैन स्ति भ्राप यन्सर्वभूतानि यन्त्रा दहानि पायया अत्र भने कि इश्वर शब्देन च जीव इश्वर यो में हैना क्तत्वादित्यकी। उन

े जी कारता तहा महिशास्त्र ने तिस्त्र निया पात्वाहे वम्स्योमव द्धिर

विकात ज्यून्य विकास की निवास शहुत स्माधित विकास की निवास की निवास

ति चर्गी य स्वादिना नि चा मात्वा ति हर म्यु गुरारी के उपा

स्यत्वात (एव म्योमवत्) यथाना स्वास्त त्रामितरः एव द्वार व स्वास्त स्वास स्वास

शन्यना स्थानर गहराति ।। ७१॥

यते तियस्य द्वान स्थान स

रूं ता.

करसा नि ॥ ४२॥ रणात्क इं हेबान ६ यन सहीत नहाति द्वार ए त्याह प्रकरशाति। न जायते म् यते वाकदाचि नाय वेत्यादिनाव्या प्रकर्शा चेति भावः ॥४२॥ हा भ्यम्बिषा वातमानी हित हुई मत्। ४३॥ न मियननी मुकुतस्यत्नोंके गुहाम्प्रिच हो पर मेपरार्ध्य गातथी वहा विदेवद नित पश्चा येच विशाविकता स्र कि एवं हि जीवी निर्देश उनजी न पर मासा नाविति च व दि जीवी गहा यां शरीर हृद्येवात याः प्रवेशात शिक्षर स्प सर्व गतस्य विशिष्टिशानं पुरुष स्व कड़ ति कमे जी चरा न नि कमा चे ति पा मे बू ते गुहापि रातानो जी वश्वरी ही ति नियु चन चेतना वे वो को र पिवंता वितिष्ठिवचने म अत्रापाने म तिहिन तीवे विश्वति द्विती यान्वे वसायां सनातीयस्य बतनस्येव इसात् ययास्य मिर्दितीया चे कंट्य इत्युक्ते हि तीर्या वान्त्रव्यत् नाश्नादिन च ग्रहाहितलानुप यते र्वश्व हाहितं गईर ष्ट्रम्य राशंया ने द निहित द हाया मिन्या विगस्पायायल न्या सिहशविशेषा विशेषा न्याप समाना चा तपा चिति संसा रित्वा संसा रित्व यो स्तरेव सम्भनाचा माञ्जीवेश्वरिगा ४३॥

।। विद्रावरााच्य ॥४४॥

त्यातमानं रिधनं निहिशी रं रच मेनचेत्यु तर ग्रन्थेतर चित्वस्य निज्ञातात्म निकल्य नेन सं सोर्मा स
मा भी मनार दुर्त्यय ति शरीर रचा रुढस्य नही न अल्ब्य
मनीत तन्द देशी हुन्ह मन प्रवि एं दुर्त्या है दर्शना है
में तुमन्तन्य भाग विशेषसात्त श्री चिताबे ने द्या है वि
शेषसाति एतस्त्रस्य पर्सा विशेषसात्त श्री चिताबे ने द्या है वि
शेषसाति एतस्त्रस्य पर्सा विशेषसा चित्रयमा चित्रयम् ॥ ४५॥
॥ अन्तर उपचेतः॥ ४५॥

य छ बो क्षिणायुह बो दृष्य ते छ ब अगत्मे ति हो गां चे तद्य ते मिया मे तत् अहा ति त्या हो विश्वास्त में पी निद् करवा सि स्वास्त के में ये व में स्वास के स्वास

यती त्यादिना य स्पृष्टि वितिष्ठ निर्द्यन निर्देशापि कं स्रतं तन्यक्ता ध्येय वित्या क्येय यस्त्र मिन्दिशापि १ रुष्टि रुष्टि रुष्टि सम्बन्धि । तिनयतस्यान व्ययदेशाच्यवसी वैने ययवासीत्य विव क्षितः शाल ग्रामे इव वि छो। रिस्पाह स्पानादिति । मुखिविशिषा भिधानाहेव ॥ ४०॥

अपितस्व विशिष्टा भिधाना देन बस्त नं प्रारेग बसक हासंबद्धीत प्रकृत ब्रह्मराः ग्रह्म स्यन्या प्यत्वात पाना निर्माणिमधानिद्वे र्घस्तेमति मनके ति मतिमा गिथान प्रतिज्ञा नात्क यमितित् न उपक्रमाप संहा योः याद्वानकन्तदेव स्वं पदेव स्वं तदेवकं स्वशक्तिव । स्रवनाची कं शब्द समिन्या हाराता. यरस्पर विशेष

े कं रवंशकी सुरव क्वं अस गमपतः तस्मान्सु रविशि निपन्तनारेव ब्रह्मपरत्व मित्पाह्मखिव विचिति। ६०

ले। रनिषत्क मत्यीमधानाच्या। ४ छ।

मार् माह मुतिरा भूता उपनि षदी येन तस्य ब्रह्म विद

ने हैं यागितः गमनं मार्गः देवमानारव्यः स्म वमा स्विप्र घोषासकस्य भू यते न्यादित्यान्तन्द्र मसञ्च

्रानसी विद्युतं सत्येत्यह वेशवा तवः सती क्रान्त्रह्म

अम्यति रषदिवयया सते नप्रतिवद्यमाना दुर्ममान उत्वर्तन्त इतितस्मादिशस्य म्ब्रह्मेनाचीः॥ ४०॥

= भ्यनवस्थितरसम्भवाच्यनेतरः॥४०॥

■यादियुर्वानगास्य इत्म्त्रयतिमाह। स्रानविषातिरि =। खायापुर वस्परकां तीयां सक नसुष्य सम्भवान

न दा ता

निम्न पुरुषान्तरसन्न एव द्वायासम्मनात् दृश्यते इति वर्तमान निर्देशाच्चत स्मिन्तम्तत्वा दि गुरातसम्मनाच्च तग्रहरात्दृश्यतद्रत्युपपादनन्तु श्वास्त्रा वेद्य प्रयासना विस्ति वयनस्माद्वस्य ॥४०॥

॥ -प्रन्तयीरिय दिरे निह प्रत्य प्रयान ॥ ५०॥ वर्षान या प्रत्या कि स्वतिया प्रत्या निष्यती या प्रियती या प्रत्या की स्वतिया प्रत्या निष्यती या प्रत्या की स्वति या प्रत्या व्यानि ष्ट्रन एशियानरा १य म्यु चिनान वेद सस्य चिथेवी शरीरंयः ए चिनी मन्तरे यमयत्येष त न्यातमान्तयाम मत्तर्ता दिश्वतां न्य्रना सिंदे वत प्रास्तिना कि पिवे दमिल यत महि भूत महिमात्म स कि शिहन्तर विशेष रिणमारी प्रवर्धः किस्त्या भी किस्ता पर मात्माविषे पूर्व मर्यान्तर मि ति संश्राय मं जा मा अप व सिद्धत्वेषी सं जिनावापा सिडिए तो नायून स्यान्तर दिः त्नीताना प्रमान्य विकास भिमानी स्मामिदिदेवीना वा चीति व वरमात्मा न्यूकार्यकाररणत्नादिवीपाये न्या र न्यून्त ये। योत्रान्तयीमी सपर एवात्मा कृतः तहु मिन्यपदेशात चिवादिसवीवकार यजात मन्त स्तिष्टन् ई श्वर्

प्रमयती ति ब्रह्मधर्मस्य उत्तत्वात् ब्रह्मशाः सर्वे विक्र

कार गालेन सर्वे शक्ता पर्यतेः आत्मीता म् तत्वयो

१त्ये

सात्रेववेदान्त प्रसिद्धः ब्रह्मेवान्त यीमी॥५०॥

। नबस्माने मतद्र मी भिलावान् ।। प्रा नन्त्रप्रतवीयवित्य प्रमुमिव च स्पित मितिस्त ति सिंद्र मारव्यकत्वित म्य धा नमेवा न्तर्या मी स्वात ह्यादिर हितन यां दृष्ट त्वादि ध मीरा च न असम वात इत्पाशक्यसमाधते। नचस्मातितान्यततप्रधा न भिन्तं त्या तस्य धारा नद्र ष्ट्र तादीना मिमला पात् नष्दानं स्पाति यन्तयीयी अदृष्टी दृष्टा स्ताः श्रीताः मतो मन्तान्यविज्ञातीविज्ञातिति ह इहवान्परीषात् ज्ञातः त्वादि धर्मा भिन्नाया दात्मेव ॥पूर्॥ ॥ त्रारीर स्त्रीमय पिहि मे है ने न मकी पते ॥ ५२॥ ननु शारिराजीवोडन्त पी मी भवनु तस्य वेतनानात्न े स्मे में हिरार मात्रयं महितानी व स्याया दृ ष्ट्राचा दिधा मे " अवादित्याशङ्य मिझान्य पति प्रारीरश्चेति ने तिपू यन्त्रम् नादन्वर्तनीयं शारीरश्चन्द्रतःहि यतः उभयिषका नं माध्य न्दिनीया सुबहदार रापके उन मी भाराः स नं माध्य न्दिन पिन तेन छ नं नीन प्यर नित्र अनीव भी वा दि परि किला स्य घराका शवत काल्लीन ए न्यादिष्य यन्तरव स्पानं नियमन्य नसम्भवती अभावः विज्ञानिति छ निति का राव पा हः न्यात्मिन होष्टानिति माध्यन्दिनाः अधिकरसात्वेन जीवीपा दानात् त दिन्त्रस्त इन्तर्या मी भववं ति तस्मादना र्यो मी पर एना सा ॥५२॥

1º

॥ अद्वादि ग्रा की धर्मी के :।। प्रा

क्रिविरोवेदितव्ये इत्युपकम्य - प्रचापरा यथा तद्शर मीध-गम्पते यत्तर निर्देश्यम प्रयम निर्मात्र मन्त्र मन्त्र भी त्रनीमपितापारं तित्यं विभ् सर्वेग युष् भं यदूत वानीं प रिषश्यनित चीराइति तत्रभूत यो निप्रादेन प्रधान जीवः चरात्मानेतिसंश्येष्यानमेन न्यचेतनानं उत्तनामि शरीर पियादी मां सूने जी बच्यादिन कार्गातस्य दृष्टत्वाद् नेत नम्यानमेवविश्वकार्शा यक्षरात्मम्यवतीह विश्वमुह षात्के शतोमानितिं दृष्टान्तद्शेना दितिपासे बूते। ध्यकृष्य नित नहा चेत्रस्य केवलस्या रीना धादै : सूच यो नी नम तहर नेत्र नंत्र केवलं शरीरं केशा दिजन कं किन्त न्यहर त्वाभित्रायसमावे दृष्ट्रवाभित्रायासमावात् नप्रधाने ह द्वेचल द्वानं शक्यते तस्माद्भतयोगिः परमात्मा स्या द्वाता तः ससर्वे विद्यस्यतानमयन्त्रयं स्तरमादे तस्त्रापद्वयं न्ये जायते इसि निर्देश साम्यास् यदिष्धा न निर्दे पराविकी त्यनपर्यातः स्रोतास्त्र योनि रिश्वर्ण्य ॥५३॥॥॥विशेषराभेदसास्यास्या स्रोनेतरी ॥५४॥ युत्तान्तरमाह विशेषरीति प्रकृतस्भूत यो निम्हि क्त निर्वोद्यम् तैः पुरुषः सर्वाद्ये वनरोद्यानः अपारे सममान्त्रभइति विशेषसाभेदात् विकासम्परः स्विव इति मेर्न्न यपदिशाचा न प्रचाननी नी घारी। १५७॥ । द्रपो पन्यासा च्या ५५॥ हेत्वन्तर पाहरू वेति श्रास्त्रात्यरतः पर इत्यनन्तरं श्रीयो र्धी वसुषी वन्द्रस्थी दिशः स्रोने वा विवर ता सुवेदाःग्

३१) अ. १ पा. २ 10 -00 8110

पारगे हृद्य कि वन्म स्पपारिष्ट चिनी होष सर्व भूतान्त रात्मिति ह्यो पन्यासात्वर एव ॥ ५५॥

।। वैद्रवानरः साधार राष्ट्राव्य विद्रीयात्। पृक्षे।

कीं-मासा कि म्ब्रह्मे न्यु य क्रम्य भूत सहते त मेवपीद श्रमान मितिवान मात्मानं द्वेषवानर मुपास्त्रसम विष्वनोके विभने विस्व वेष्मा साम अन्त्र पति तस्य हवा एत स्यात्मीनो त्रवानर संस्यात्में स्र ते माखु निक्रत्य पाताः प्र व्यवत्मी सन्दे हो बहुती व स्तिरेवर पिः द्रिये व पादा विस्मादित अवीषवानर श्रव्यन जावरी ग्रि:उनतद्भिमानीरे वः उत्रजीवः उत्रद्श्वर इतिसन्देहे न्यपमित्रवेष्वान शे

येने दमनं पन्य क्त द्ति स्तेष् ने में विशेष देश करा प्रमानती ्र सामे नियुते दें वता हिंती अपात्मे सुपक्षमा द्वारीरो वा द्वित

्रवन्याह वेश्वानर इति यदापिवेश्वानर शब्दात्म शकी त नकसाधारुमी मचापि विशेषान मधीव स्रोजाइ

मनित्यवे द्वीसम्बन्यमती तिक्तान न्यात्मा किम्बले

मं अस्पारणा ब्रह्म वोधक व्राव्ध विश्रेषात् व्रह्मेव वे श्वान

स्ति। । यहिना

्रास्त र्यमारा मनुमानं स्मादिति॥ ५०॥

अति श्वव ही ववे श्वा नरः कुतः इश्वर खेवा ग्रि रास्यं ची पूर्ध के नी ना म कं हुं या भी मारा पिति सु ये शु हु दिशः

अंत्रसी जीका सोने नमः इति स्परतेः प्राचित्रयोव मैं नान मेया तसा द्नुमान ज्युन मे य जाति। गमकं त्या

त्रतसम्दूहरा । देवा

॥ शब्दादिभी इनः प्रति छाना चुनेति चेन्न नथाहृ शु CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विश्वसमा -प्र िन सम्बना चेतिसामान्ये नप्रयात्-प्र ग्रिमा त्रम १

مار

त्र नम ने श्वामरः परात्मा कृतः प्रसिद्धारा शब्द ने श्वामराप्दे शब्दादिश्यः प्रस्थितः प्रति छितं वे दे समे नानाः प्रति छा नाप्दिति प्राप्ते चुते शब्दादिश्य द्वित ना ग्वादि कृतः न्यु ग्यादी बहा दृष्ट्य पदेशाँ ये तथा से । प्र हिन्द्याता इत्याद्वीना मूसम्भवातः सक्छा ग्रिवेश्वान रे यत्यु हो बाद्गितं वाजस नेद्योय पिरादेशीमी पद्याते । व

॥ न्यात एव विता भूत द्धा ॥ प्री । प्रवाचीः देव

मात्मा प्तात्मानां च्यामि रित्याह्च्यत्यनेति ॥पूठी

"माद्वार व्यविरोध ज्रीमितिः ॥ दि॥ जारराग्रि मतीकः ता हुशाग्रि उपाधिकी वा परमे व

उपास्य द्यु कं इदानी प्रता स्या स्वरि चिन्नः साक्षाने वेत तमा उपास्य क्रिते ने मिन मत माह साक्षा दिति तथा वि

विश्वेन राष्ट्रियाति विश्वस्तायम् तर से ति अत्यति । स्र यशीया ॥६०॥

॥-व्रीमन्यके रित्पाश्मर च्याः ॥हिश् मनकथ निहिं प्रादेश मान्यत्व विभिन्यके रिति :

मानस्या वीव्रवरस्य ष्रादेश्यमानत्व माभव्य कि निर्मातं र प्रादेशमानद्भयः न्याभव्य न्यते इत्याश्यर व्यान्याचा यो मन्यते ॥६१॥

भवाः सः ताः (३३) अरः १ पाः २ ॥ ॥ अनुसम् तेवी दृरिः ॥ ६२॥ वादिरिस्त न्यू प्रदेश माने उपि प्राहेश मानो उनु सार्ते याः ध्रीतन्त्रनुमन्यते॥६२॥ ॥सम्यतिरितिनै मिनिस्तयाहि द्शियति॥६३॥ गुप्रातिन्य चिनीवर्धता नव प्रवान मुर्धप्रभित चुनाने खनयनेषु मत्यपित्ना प्रदेश मात्रत्वस म्यत्रां सम्भे नात रूपवा व्यति दिखा वेत्रवा नर द्ति। वस चि उपिद्रामि ए व वे स्तेजा वे ख्वानरद्र ति नाशिका विदिश्ति रेष्वे एचानमी ने व्यानर द्ति म्रामाना श मुप दिश्रास् सम्मिति नि मिना पादेशसा ग भिति रित अमिनिरानामी न मन्यते यतः हिति विश्वयेन क ाव भितिद्री यति इत्याह सम्यते रिति॥ ६३॥ पुत्र निवेनमस्मिन ॥६४॥ इतिष्ट्रितीयः पादः त्वात्त्रारम् म्यर मेश्वर म सिन्सु प्रस्ति चुनुका के विस्ति न्यामन नि अधाराय एवा ने ती विस मान्यामी विमुक्ते प्रतिषित इति सीविष्ठकः किस्स रिश्वतद्गति, वर्णियां नास्यां, वेन्युका कतम्बा े हैं। रेमांवती पते प्रवेदा शास्य व यह सन्धिः डिं संस्था मुत्राक स्य परस्य व सन्धि भीनतीतित-राया त्यरमेश्वर एवं वेश्वानर इत्याह न्या मन नी नि लीते बहासून तात्पये विवरता समन्य यस्पद्धि तीयः वादः॥६४॥

ने स्ता (३४) अ १ पाउ

"युमायामतनंस्वयस्ति। १५५॥ इदं सूर्यते यसिन्दीः एचिनी सन्ति रहां जीतं म नः सहपारी स्तवे समिवे कं जान्य ज्यातमात्रम न्यावाचीवसंचय अम्तरसेष सत्रशिततन्यः प्रभारती मामीतत्ववचना दायतर्वमवगम्यमाने दे भाषानार मीश्वरावा धड़ीत संशायपरिगन्देव न्तम थीन्तरभमत्र येषस्त्र त्राति पार्वत्व प्रतीते । त चापारं ब्रह्म तारशं तथा चायतानं प्रधानं वापुने ति वायुनावी भीत मस्र नेराष्ट्रम् लोकः पर्चे स्मादिना तपात्नादिनि व्रामेन्यार द्यानादिगने द्योष्युभूश्व युभ्वोतावादी यस्य तयुम्बादि। श्रीयतम म्ब्रिस वक्ताःस्वश्रवता तमेवैकञ्चानयभात्मानः पित्यत्र सन्मूलाः योज्यमा श्रीताः सहायतनाः सस्प्रति छेहैयादी स्वोयनात्मशब्दन सन्द्व दे ने व अभि लापात् अमतत्वोसेद्वे अमत्ते सत्रिमो इमफल खबरााच्य तस्मादायत म्ब्रह्मव ॥६५॥ ॥ मुक्ता परव्यान व्यपदेशा स्वाहिशा युन्तन न र पह मुक्ते ति मुक्ते स पस्ट व्यं उने सय नस्य ययदेशान् अवसानि न्युमान्यस् हा दि खह मिति ध्रमर हिताना मुपस ख प

इत सर ना (३५) अन् पा रू उपगम्य मत न्याय तम म्ब्रह्मेना। देहे॥ ॥ मानुमान मतळ्यात्। हिंश। यचा ब्रह्म प्रति पादका विश्वे बताहे तु कर्ताः तचा प्र धान प्रतिपादका हे नुमास्ती ति न प्रधा असम्न प्रामित्या ह मानु पानि ति। नह्य नतमस्य तस्य प्रान्दितित प्रत्यत् नतमस्य शब्दस्या प्रति पः पर्वे इतः स सर्वे विद्विति तस्मादतळ्यात् मानुष्यान म्युधान प्रायतम् प्राप्ति।

।।श्रामाभ्य।।६८।।

प्रातास्तः जीवस्य विज्ञानासनः श्रात्मत्वज्ञेत नतं सम्भवति यद्यपि तचाव्यवाधि परिच्छ ॥ संस्थासवज्ञत्वाद तळळ्दत्वादेव न प्रातास्त्रज्ञा पन्ने तेनिष्यत्वाद प्राताभ्टीदिति ॥ दथा

मिद्यपद्शाचा। ६०॥

त्रारव्यपद्शस्त्रहानम्बाति सम्बन्धानम्

याना ने वि मुद्राचिति तन ज्ञेय भूजान्द भोवेन

ं डिनापि व्यवद्या त्याराम्धतीता तटत्वात्त्र य

तिनायतन मित्याह भर्वापद शिता । ६० ॥

वाष्ट्रवाच्या विवा

नि स्मिन्य भगवो विज्ञाते र तिब्रह्म प्रकर सा च्य

व. सं. ता. (३६) भ्या पान्

।स्थित्पर मध्याञ्च।। जि।।

यम्बायतम म्यकृत्यभ्रयते समुप्रशास मुजास खार्यी समानम्ब क्ष विशिवस्व वात इत्याचा वि णलंखाइतीति कमियत्वाच पागस्यादनस्य अनश्यन्य त्या भिश्वाकंदी ति इति स्थित श्वात वात् से अने प्रवर यो मिही तत्वा ता या या नाते न च दिई त्रले विव सितस्त दातस्य प्रकृतस्य स्नन्तात् ए पञ्चन मवकल्यते न्यन्य प्रीत प्रकृतवचन माक सिक ममस्ब द्वं स्वात इत्येह स्यात्यदेनाइति भिष्या तस्यातियात्यद् ना भ्या घी प्रवर एना यतनं यस व्यत द हू अप नवादिया काधमानि रित्यनोत्त न्त्यापि यसिमन्द्रोः व चिवी चान्तरि दापित प्रपत्नाची म्युनसपन्य हैं। म्।। न्शा ॥भूमासम्प्रसादा दुवदेशात्॥ ७२॥ भूमात्वेव विजिज्ञासितव्य इति भूमार्सम्बजन

तिस्मिद्रित यम्र ना न्यत्पश्य तिमान्य न्ह्रिता नि नान्य दिमाना ति सप् मा (मुद्राह्म नो नो क्ष्म क्ष्म ति म्य न्य न्य त्य श्राप्ति न्य न्य दिमा ति वि यमान्य त्यश्य ति ग्रान्य न्य हुरोगित न्यान्य दिमा ति ति तद्र न्यं यह प्रमात द म्य ते यह न्य न्त ना त्यी मिति तन्त्र संश्रयः विस्प्रारोगे स् प्राउत् यह मात्मा विति

न-स्नातित्व भ्रमितग्रुत्वमर्थः अवहारितिवरुशदस्यभ्ः मन्यत्ययोत्स्वर्हत्वस्य प्रारास्यिनयारागवाञ्यास्या याः भू या निति घत स्तन न्यास्तिभगनी नाम्भू य द्यार भ्या तरा तर स्वाड प्रया : प्राणाना सूप स्व प्रतिव वने व्यान प्रारास्पेवो सन्वान प्राराह शिन्द्यान्यतिनादित्वयक्तमत्राः प्रासा भूमतिवा ते-पाड भूमिति। भूमाश्रुले व मम्प्रसादाद छुप रेशात सम्य क्षमादेशीतिसम्प्रसादास्यिमस स्या म्याराजायती तिश्रतः प्रारायवसम्य सादिति जतस्तसमद्धि उद्वेषणु पद्शाश्य यदाचिना िस्ति भगवः प्राराहि भू यह ति नभू यते तथा विवा ग्रेन्तिवादित्व मुत्तरवोक्तम एष्त्रवान्यतिव पुत्र यः सत्यनातिवद्तीति सत्यम्बद्दीव तन्तित देन्त्वार्भत्यासा दव्योधक म्ब्रह्मीत् तु शब्द मप्रा यं यानावर्तनात सत्यन्वव विजित्ता सितन्य पि इ रवराचितसमाद्भायरमञ्चरः ॥ १२॥ मीय पत्ते मी। 9311 वाक्षेत्र महत्वनर माह धर्मिति यन ना न्य न्यश्यति मान्य कुतातीति दकी मिर व्यव हारा भावा भीन प्यतः इश्वर एवसमाव ति यत्रत्वस्य सर्वमाते वाभ्रत्तत्केन कम्प प्रपेहितिभ्रतेः स्व महिम

91

व स्ता (३८) अन् पा र प्रतिष्टितत्व सर्वगतत्व सर्वात्मत्वा दिध मोशाम परमात्म न्युवपरोद्यार्यय भूमा गो०३॥ ॥ १४॥ त्रसरमम्बरान्तरहतः॥ १४॥ एतहे सत्यकामपर ज्वापर खन्य यदोकार स्त मुतेयः पुतरतम् त्रिषात्र सामित्यते नेवासर मा पर मपुरुष मामिध्यापितीत तन्त्न न किम्प र म्ब्रह्मिधिध्यातय द्विमपरम्बा सत्ते निर्मूर्य मण्यनः समामिशिशीयते वहाँ लाकिमिति उपासकस्य तिहिद्दोद्देशापरिन्दिन्यप्तनस्याक त्वात् निर्वासियोरिकिनं फल मश्नते रेको जत न्वात ज्यूतीपर मेथ या स्विमिति प्राप्त ः वा ित्र सरिपति इसती तिषाव्यशेष एत स्मान्त्रिका व घना त्यर मुक्त व मापिक्षाते इति ई क्षिति धार्म ज्ञानविषयत्व द्रपक्षमञ्जूस्य वर मेश्वरे व्यपं तार वेवा भिरमात व्यम मुख्य यदि द्यास्म . स्मृष्रे दहर प्यराउरीकां वे अत्रम दहरोतिमा-र न्याकात्रासासिन्यदन्तस्तु वासितः त द्वाव विजिज्ञा सितव्य मिति शुतं -प्रत्य पुराष शेकदहरे एहर ज्याका शः भूयते सिक स्मूतान है श्रोवित्तातात्याव्यवा इति संशय तनाकार्यश CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(४७) अ.२पा.३ शसः ताः वद्मसी विध्रतातिष्ठत द्रत्यादिष्रशासन म्पार मश्वरंक मिनाचन नस्य न्याता क्षं हि नस्या नत्र प्र न मशरम्। ७५॥ ॥ भ्राम्भाव व्यावसिष्ठा। न्हा युन्तान्तरमाहभागिना स्वीन्य भागिया भागमा द्याय स्यद्वस्यान्यस्यानमस्य मात्राद्वते तद्भानांद्रियरान्तिवधाररा मध्य म्यानतं वातेष्ट्रान तहास्य र तद्शरं गामिर एन्ड ए न्य स्तं सोनि न्यम तं मन्त माविज्ञात स्विज्ञात इत्यादि द् ष्टुत्वानिर यपर् शोब्दारा एव नप्रधानस्य चेतनस्य सम्य वती है तस्मात्यर एवा झरखा। किं। ग इस सात कर्मव्युवद्शात सः॥७७॥ अववानीव एवं के हर ब्रह्माती जीव स्य हिन ने व त्र तर म्ब्रह्म पुरस्व के में की वित्र नार्त है। त्वा जीव स्पत्र व चित्र ने स्वर्त स्था इहरे विपति शा बस्यदहर मिति पासे बूते दहरइ ति दहरें प उत्तर ध्यावश्य माराहित् ध्यः समात्वे दृष वक्रम्य कि न्तर्न विस्ति यद्ने ए व्यम् ज्ञासितव्य मित्या शेषयां वा यमा व यसा वाने विसिद्ता आकाशह हा ज्ञान आकाशी भ्रमनापास्यमित्युतं नहा मदेविर निहन्त्रते न भिन्तस्य दृष्टान्त्रत्य मस्त्या मुच यत्तीष्ट्र तथा किल्यनी

८६३ ३४.५ वा.३ न स् ना 55 न-वक्यं व्स्थान ग्रानाशयिमाशास्य म्म्ताका वावारसारिताता तसमहहरमन् से वस् ॥००॥ ।।मतिश्रन्समान्तयामिद्धंनिद्गः खा।। १०। वस्यमाराहित् भयद्रस्य कं न्ताने थाह मतीति। इमाः मवाः प्रजाभाह रहर्षसगन्छीना समं ब्रह्म नो बं निव इ नीति मध्यहञ्जीनानां सुबुमोब्रह्म रिणममन्ध्रते सतामी स सम्पन्ता पवति इति व इयाः वजा इति प्रजा प्रविद्ताना जीनाना इ.सनकरित्वा हन्तर्ज वसिव गीतसम्पन्त मञ्जूभ्या ख्रीन लोका त्रस जोक इति अधिद परि ग्रह निद्रामा जीवस्य व्रह्म मम्पति चिंद्र मावीत नहि सस जोकात्मक का ए दिनिस्न नामं निद्यां सर्वे गर्द्ध नित तस्मा दूसा की ॥धरस्य पहिस्रासान्य पत्रब्धः ॥ २०॥ भेश तत्तन्तर माह धरेने द्वातिन्य च यान्यात्मा स सेनु वि धानिरवां लाकाना यसमेपदायिति प्रचा जलाना विन्हण्यारियता स्त लीके तथा व्यथात्यादि लोका स्य रितां निर्वाहकाऽ सम्भदाय सम न्त्र है व द्रित्र होते :, एत स्थेन घसा शने मार्भीत्यादि न राष्ट्रम् स स्मान्त्रप लब्दो स्त स्मा दिश्वट छव द 1 2 1 1 2011 अर्गामिद्रिष्टा। च्या व यस्मादाकाशाहबेनामहपमानिर्वित ताइत्यादा वाकात्रात्राव्यस्प ब्रह्म राध्य प्रसिद्धि न क्रापितीय

वः त्यं नाः

5

ाउत्तरा चेदि विर्देश स्वस्व स्तु॥ च्या नोव बाह्य प्रमुनस्त्या प्य गरिय नि उत्तरा चेदिने उत्तरा सामा प्रस्वा वया जीव स्व तम य मान्या पहत पाक त्युप म्हण्य स्वासि ले प्रस्ते प्रमान्या ए प्यमान्म निहाना च स्वस्व प्रमही य मान्या रित एच न्यात्मेनी ह्या सुन्तरा जीवद्देश प्राप्ते नु नेता म य म देश्व र स्व ज्या वि भी मजी बाह्य हु को उ द्रमा मुंच बाह्य सारोच जीवस्व व भू म त्य स्वी त्या परामे विद्या स्व स्वी स्व द्रिक देहे म चर्गा श्राप्ते । परामे विद्य विद्य देहे म चर्गा श्राप्ते

(83) 37. 9 पा॰ १ स् ना ज्यन्याचिस्ययमश्ः॥ = ४॥ निक्ती दहर वाकी परुष सम्मूमाद इत्यादिना जीवप मिश्च इत्यत न्याह न्या यो हान्या या प्राप्त माना है न नोर्वेपर्ः किन् श्रह्मपरः ॥ च्छा। गाच्यान्त । भारत्यम् ते पिति चे दुक्तम्। न्या न्यान्तते सार्याः कषमन्तरा काशरूपत्य त्तनस्यो भारतनचन्द्रतारकं नमाविद्यता भानि ल्यातिरिति चेदाह-यत्य हतो उपमण्निः तयेव भान्त मन्यानिसर्वे ब्रस्य भाना नि-प्रार्थको क पविषद्धियाती ति श्रूयते तन श्रूयमासेत्य न व स्नाधिकर क्द्राचीः तमेव त्यमतन्द्रव्यचि। विन्ते मिविष्ण तादित्यने तो नि वाय्य उत इस्वर इति प्रयने तेजीविशे वातिशाव्यव वया ने उपलिय व्यान नाना न यो तेजिससति यहिन यन्पद्त्य यन्त्रतार इन्त्याच्या तिर्ते तेजान भासते तथास् योद्धिक तेज स्कः ्द्राचीः तज्ञरूवतास्मिनसीत सूर्या दिक विविद्ति सम्ब्याह स्मान्हते रिति प्राज्ञ एव धनति स्मान माता तस्य तमन भा निसर्व प्रित्य व तन्छ्य प्रति पर्व द्वापिद्धी हित मन सर्व भामने न हिस् प्रति के पान मुन्यमान प्रयाज मी श्वरङ्गमप-प्रति आज्योतियां ज्यो निराष्ट्र हो पासते प्रति मि मनाविशे कचित्रासिङ नस्मितानम रुपः सन्यस विवास नव सजा तीय यो रवाइनुका रः इति नि त्य र्डपार मास्कार्यम सिद्धन्तस नाः प्रोमंरजा वायं वहन्त प्रवहित इति भा साद्ति इनुकंस्ट ष्ट्रवाता स्मात्पर एवं ॥ दर्ग THILL 214 CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ताः (देश) व्या १ ॥ व्यापनसमिते ॥ चेत्र जीतास्विपण्वंसम्प्रीतनत झस्यवते सूर्योन श्रामा इं इत्यादिना र्याह व्यपिने ति॥ च्छा। । सर्देश प्रमितः।।==।। न्युङ्गुष्ट मार्नाः पुरुषे भीनेन र्युस्तरेना) मध्य -सात्मिनि ति छति तथा दुः ए मा नः पुरुषो ज्योति ह वाधूमक इत्याहाच न्युङ् छ प्रात्रः पुरु षत्रीवोवा इक्रवरो वाजीवस्व परिमारोगपहेशात त्रायस्य । वतः काषात्वा शवकीवशङ्गतं न्यु इस मानस्य हर्षे = निशुक र्ष यमावला हिन्या दि पुरासा च जीवरवे तिप्रास न्याहशक्ति इशाना भूतमय स्विति व नित्रादाद्व्यसेवन हिजीवस्य निद्धार्थं द्वीरात्र भक्रक्षेवयमितः।। च्छी। गहरा पेशया तुमनु व्याधिकारित्वात् ॥ ची क चनि हैं सर्वगस्या हु छ परिमित त्व खवरामित आरह सपक्रीतं सर्वगस्या पिहद याव दिव -युरुष्ट मानत्वे मितिमनु व्याधिकारतात् शास्त्र स्पतसायर एव ॥ च्छी। ॥तुरु पर्याचे वाद्रायाः सम्मवास्॥ छि॥

मनुष्या चिकार ते प्रसुद्धा स्वास वा निया चिकार ते प्रसुद्धा स्वास वा स्वास विद्या स्वास विद्या

59

दाना देवानां न्द्र बीरणं चनाचि कारांते यां इन्द्रे तरा आना त न्यां वे पान्त राभा नता तपाणि विद्या स्विधकारा भवति निहतन देव न्यु पेसारित स्वयम् भात वे दानं ते या मु पन पना रा विद्यारात स्वत्र ए न स्थतो स्वर्धातं ह वे वे बीरिश प्रजायतो इन्द्रोत्रस वधे मुनास द्रित स्ट्युवेवा हिरीणे वह रा चित्र स् मससारे ति बख्य ते तसाह वादी नामित विद्यास्व स्थकार इत्याह त दुपरि ति तथां मुन खा सा मुपरि विभी विद्यमाना ना न्द्र वादी ना मि खे खे कार्

मुविश अः क केशी तिचे जाने क जीत क ने देशी नात्। केशा मुविश अं क किशी तिचे जाने का जीत क ने देशी नात्। मुविश अं क किशी स्थानी स्थारी र न्वे प्रम पहले मि ता आहे। स्थिति शाना सम्भवा जीत स्यान्ता शारी र त्यापु पा विवश शिकारः इत्पाश हु। समाध ने विरोधीते रा शः क स्मा देने क स्व द्यमित प नेः युग पन्न शिरे शिरा शा मि निन्द या शामित्री, का रात - प्रत रूप क मि पा हु त्यु प क स्था भ्य श्व विवश नाभ्य स्विभ य किशी ति मिहमान एवे पांछले भय किशा देव देश र ने श्वितः स्वे क स्याद व ता स्मेगा अं क क्ष प्राण्य क्षिण के के विश्वास भी स्व सहस्रा स्था वह नि भर तर्षभ योगी कुर्या के प्राप्ता नो स्व सहस्रा स्था वह नि भर तर्षभ योगी कुर्या के प्या खाते सुस वे मिहीं चरेत योगीना मिप स्रो के (४५) अन. १ पा. ३

शरीर सम्मिव किमुवक्त य माजान मिद्धानान्देवी मनेकहपत्रधन्नहस्तः पुरन्दर इति चत्रस्माद्विष हबत्निप नकी विविश्धः तस्याहुवा ही नामीय रि यास्विदाकारः ॥ जेशा

॥शब्दुनिचेन्त्रासाः प्रभवातं प्रत्यशानुमाना ध्वासी नन्यनित्यशरीराङ्गीकार्ड्रन्द्रादियदाना स्वेदिका मणा अनिकसंकता पतिः तथा वीत्य तिक स्तृश्र स्पार्चन सम्बन्ध इति जीपानिस् जिरोधे सतिस्ह तचित पुरुष सी पश्चत्वात् ने दिकशब्दाना मतामा

रापापिति रित्याश्रद्धा समाधतेश्रव्हतीति न्यह नित्यादेदात् देवादीना युत्पत्तिः नित्रमुमारागिः

तिचत् प्रत्यसानुमानाभ्या स्प्रत्यसं खातः

नुमानं सरितः ता भ्यां सम्मिमस्य नंतर्भी भूतः सर्ववा न्त् समामानिक मीरिशन ए

क ए चक वद शक्ष म ए नोहा पुरा क संस्था

शु निर्ममङ् ति सरतः प्रयासा त्यान यङ्काः

नित्य व्यक्ति सम्बन्धा द्वराषामाराय न्तद्यि न नवादि शब्दानां नित्यायां न्या कुती श्र

नव्यक्तिष न्यानन्य व्यमिनारारेगा भ्या मेवसे

चाकृतीनां नित्यत्वन शक्तर व्यनारित्वा जर्

व साप सत्वे तनाप्रा माराया पति ने तस्मा नुस्त

मारायाम

अन्त पान्ड

वत्यनित्यत्नम् ॥०३॥ न्वार्यसम्प्रदायोक्ति पू वेकं सिद्धान्तवनिवर्गार्थन् दङ्गित् सगवान् पवनेः द्वातस्पष्टार्थः वदस्पनित्यत्वं धियति भार स्वति नियता कुते देवा दे जी जो निद्युम्ब दिवन दान प्रचीन स्पन्वं निस्म निस्म निस्म राम न्नवानः पद्वीयमार्थतामन्त्रीवर्षिक् निर्वाषण् प्रविष् प्रतामन वाचम्न विनांद्शीयतिसास स युगानितिहैं त्वेदान सित्हासान् यह षेयः लीभरतवाना युने मन तान्स्वयस्थ्वा । । ३ ।। माननामरूपताचार ताव व्यविरोधी हरीना त्यरतेषु ॥ विश न्वदन्तराभवीतयदिन्यम्भ विचेद्नेवयक्तभ्यः उत्प ज्ञहीदं सम्मनियदा सकलं नामस्यात्मकं जानप्रली पुनः कालान्तर प्रभवनित तहासङ्गति पेत्रवेशान्ति वां मतिद्रया शहुगह समाजिति सत्यव्यवान्तर यन्त्य वं व्यवहारा के दे युनः परमेश्वरान् ग्रहा दोश्वरा साम हि ए गर्यादीनां वदं सर्गा कल्यान्तर व्यवसारा मुसन्याना त्ताः स्व अधवुद्धवतः पूर्वतनेः समाननाम स्पन्ना स्वनः इंट तावीप युनसत्यारेणि स्वितिराधः दर्शनात् युतः या र्गा विद्धाति पूर्व या वे विदं सु प्रहिरानि तसी इंदन मात्मन द्वियका श्रं प्रमुक्त शरराम् स्थापर ग यथाव्येमकत्यय म नेदानां नाम रूपा राणाञ्च र सू एयः शर्वियन प्रस्तानां त्रांभविषे दहान्यनः स्मरं तेद्यात्यचाः ॥विश

। मिस्तारि व्यंभिनिकार मुसम्मिना नितिन्।। विश्वा देवादीनाम्बिसास्व धिकार इत्युक्तन्तरूषयति जेमिनिरित्य मध्यदिनिमध्यिद्यायांभ्यते असीना न्यादित्योद्व धार ति यादित्याचा सनं उक्तम तत्कथन्द्वतानां सम्भवति दित्यान्तराभावात् न्य्रिशः यादावायः याद न्यादित्यः पादि शःयादः वायुवीयसम्बर्गः न्यादित्यान्द्रान्याद्शद्रन्यादावी न देवादीनामधिकारः समावति तत्यामान्या दितरेषु त यात्व मितिन्यायन सर्वास्व च्युकासनास्ट्रिवादी ना मन धिकारं ने मिनिरा नार्या मन्यते इन्द्रा ही नाम्नु सन्योगि प्रतिचादन म्याशस्य परम् ॥ वेशा । ज्यानिषियानान्व । व्हि॥ न्प्रनिधकार युक्तान्तरमाह ज्योतीति यदिहम्परिश्रम तिमराइल मवभास्यते वृत्यश्सिह नीन हस्यारि विश्हे तयां स्मार्यादनायोगः नसम्भवनिम्द्रविवद नत्वानमराडलाई नेवायवेतनी देहामियानी युत्पस्त वादादयः प्राथास्याची न्तस्यादिप नाधिकारः ॥ठिद्।। ।। भावन्त्वाद् मयरमाङ्गि क्तरपवादनवादमामन प्राम्न पार्वान्तितिन्यादः प्रवेषत्वी व्यक्तः वाद्रायसास्त्वाचायी मध्वादि विद्याया मसम्मवा निधकार १ पेशु दुव्ह विसायाम् प्रिश्वकारं मन्यते प्रवा मिरिगमन व्याधारमा मनि धिकार रिपन सर्वेषां स्वक्रम् ना मनिधकारान राजस्या दीवाहारगादीनां तद्व दना विश् मस्वतसी घोर्वाना मपुत्पन्ध्यत सस्वतद्भनिर्द दर्शन मीपत्रसमाद्वीतिनिष्युपेन न्यपिकारोस्ति॥ नेन

4103 र्यक्रिक्टनादर अवरात्निस्य ने हि॥ उटि॥ हिनादिन त्र श्रूद्रस्याचि ब्रह्मिवसा चिकारा मच ति ने जामाह तेया हारवधाने इ जितदन चेस्निचा धिकारे कि.मिपन जनम ज़ितरिय जा इस्ति यीजा यशं श्र द्रशक्न पराम ह अह हारित्वा शुद्ध को त्रवेच सह गोमिर एत्वीत प्राप्तिया गरविति नव्य द्रया शिकारी नैदाध्ययना भागात् उपासन गास्त्री युनाता तस्मान्द्र हो यहा नित्ति त्राम्म द् तिन्या यस्या पे सामवात यत्सम्बर्ग विद्यायां श्रद्धां वह रेक्स्यानादरा गुक्तशीकः अस्प्रमुनं स्प्रीम इद्रावश्चाना निहद्दानित्र दी मोकिन की निर्मानस्य नरुदः तस्मान्त्र प्रस्माधि T: 11 Sell ग्रियन्व मनिद्यो नर्ग चैत्ररचेन लिझान् ॥ ६६०। धन्तर माह झिनयेति उत्तरम चैनस्यिना इमियुतारि वात्रियेरा समिष वाहारात लिङ्गात न्यस्पश्रद्भत्यमि स्मान्स्नियं नगते समिनि व्याहारात उत्तर मेरे वेन ज्ञान्ताधिकारः श्रदस्य ॥ विश स्कार प्रामशी नद्भावा भिनाषान्य ॥१००॥ जनरमाहसंस्कारेनि तत्ति हास्यने उपनयनि नाराः पराग्रथयं ने न्युधीहि भगवइतिहोषसमाद् स गरायो भगवन्तं यिव्यत्मादं उपसन्मार्डयादिषु नश् ज्यकं कि जिन्न न सम्कार महितीतिश् इस्प संस्कार

चात् तस्माद पिनाधिकार ।।१००॥

71-3 37.8 . पुः ना ।।तद्भावमिधारमेन प्रवनेः।।१०१।। न्युत्यामिष्युत्तिमाह ॥तर्भावे नि,यत्सन्यवचेने वर् द्रजा भावे निधीरिने गीतमः जावालम्पनेत्रम्यतः जो नेतर बाह्मरोगिनने ज्ञमहीतसमिधं सामह राण्डवाने छानसऱ्यादगाइ तिभ्ते; भूद्रत्वाभावगढ़ धीरराउंपरेश प्रवस्ते। ११०१॥ अवणाध्ययनार्यप्रातवेचात् समति श्रा १० मि हत्वना माह श्रवणीत ।श्रूहस्पवेदस्थावन FI नादीनां प्रतिषेत्रात्।यया अपास्यवेदम्प तस्चपुनतुभ्यां कणीपूरणमृदाहारे निहा देदोधा इद्यमेद्स्तस्मान्द्रइसमीपेनाध्येषमित्यीद् तेश्वनाधिकारः विदुर्धमेव्याधप्रभतिशृदुाण पूर्वजनमसंस्कारवशाद् ज्ञानीत्पत्तः फलप्राप्

।।कम्पनात्।।१०३॥

1190211

समासीउयं प्रासिद्धिक विवारः इरानी म्यक्त क्रियं वा कार्या प्रामिनारः क्रियंते चारहरे क्रिश्चित चत्रिक मनिना स्थाने स्था स्थाने स

· H & 511 (43) प्राणः कि सम्यानकं नत्रं प्राणावान् स्वेति संशये चनेनह्य कि प्राराः प्राराशक्षिक्षः नायु निमान्त्रमावेन विवर्तमाने विद्यत स्तनिप्छ र श सामाहिक विवर्तनी नापुरवन्या भुना मः समिर प्र जामाबंगिर् सं जयातितसमा द्वायारितियामे त्याहक नेयार दिशि प्राराः परात्माप्नीतर पया स्नावने व हो १०॥ अक अर्ज तीत अवीख तद्वा ग्टत मुन्यते द्रीत उप मक्तानमर्ग व पारा याज ति र जिलाका स्रयत्व स नान प्रारास्य प्रारामित र शेनात प्यम्ब्रह्मिराक्यनमिष्मं प्रारा समारान नापान मत्यीद्रमत्ये जी वति क मुन इतर रात्र जी वित यासि तश्रुहाणह या भिता लेज शब्दापि धयह तु त्व सामान्या त्मया पिकादया हि असिराम या देन से स्वस्व व्या पारी प्र भी, बौसगड़ातः पवते इति इश्नात तसमा 118031 प्रारम्भयादासान्द्रीरात्सभुत्रमा सम्पर्मित रूपेणाभिनि ध्यात व्दनचस् विषय ।तमे विद्यातम CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

द्विरिति प्रामिन्प्राह न्या ति रिति श्र सिना न्यन्या 6 ति; दर्शनात् स्तरि हनका व्यक्तनान्य तिर् य जामायहत्या येन ज्यादि प्रत्य मिलाते भू शिरम्बावसन्तं निष्यां क्रिका विस्त्रात्ये हरे - अथारीर मा ये ज्योतिः सम्पनिराम धानातः ज्यातिःसउत्तमः पुरुषद्ति स्थिष् राम् तिव्हा ॥१०४॥ ॥ ऱ्याना जा डची न्तर त्वट्य य देशा त्र ॥१०५॥ न्यानाशाहने नामहप यानि कि हितीत्रियद्न्तरा तत् वस्य त्यां वाका व्याप्त स्य मानं व व संशये व्यवका श्रहानद्वारा निनी हुक ह्यात श्रायह मिसिड सुभू नाकाशह ति वासे बूते ह्या । विति के विक्तिराइति नामह्याम्या में श्रीन पैकाशंय परि प्रिन्यनम् जीवना समार्य प्र यय मामहरे व्याकर माराति नहा के ने हन व्याप द् शास् - आकाश प्रान्म प्रहा ११९०५।। ॥ सुष्ठा अत्या में देना १०६॥ मन्त्रात्मे ति योचे म्विज्ञात्म प्रथः प्रारोष्ट्र CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

र से गा यन्त्र चीतिः पुरुषद्वादिमा विज्ञान न्यात्म ज्यो (= तेः श्राच्येः संसारि उत्त परात्मा, संसारि उपक्रम गेड यो विज्ञान मयः श्रारो जिति ता रीर चित्रद्वानी पसंहारे चसवा एष सहात का भागा यो पाचि गम मयर्ति मध्ये विभीव खेवति प्रासिन्त्राह पुति न्यपापुत्वः प्रतिनाता ना सम्वरि मिन्ता क्षित्रत्वे प्रति स्व सीकारीता दिन वा द्वार्यस्तर अं क्षेत्र सिन सुव सीकारीता दे द्वे देन कार्यस्त्रा नि एवं प्रयं शरीर न्या क्रियासम्बद्धारु उत्स जीन्यानी नि कान्ति भिन्तत्वन निर्देशत्त तस्याद्वस्था नियं प्रदेनहु ए जा त्यर समान्य या हा: ॥१०६॥ नादिश्रदेषः ॥१०६॥ इतिस्तीयः यादा कि मि यता सिन न्वानेय यह पादिशक्तिम् चित्रवाय प्रतियादकाः ज्या दि नामकी व्राच्दः सर्वे या व व्रीम्बान्यस्य सर्वे स्थानाः अधियति रिति अती विन्युसं सारी वर रशो व्रथमाध्यायस्यत्र तोप्याद

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वे सं ना (१४) अन् १ ॥ व्यानु मानिक मध्येकेवामिति ने त्रशरीर रूपके विन्यसाग्रहीते ई श्रमतिन ॥१०७॥ पूर्वब्ह्य निज्ञासाम्प्रतिज्ञाय न ह्यन्त्र स्था मुक्ते न्यूष यत्वासधानंकार्यात्वन निराकृतं तद्नाहि। समाधानाचीं परामुन्यः प्रवर्तने प्रधानस्वाप्रव दवं मसम्यवाते न्यानु मानि संप्रधानपिकाय के शब्दितं पहतः प्रमञ्जूनं न्य्यना न्युरुषः परः यद्यासारत्याः प्रधानं ये नत्राद्देन ये नक्षे यह निसरती तयोग्नक वत्यां सुतंतरमात्र त्वाभावात तदेवज्ञानकार्यामिति त्यार्थं रुषयति न्यानु मानिकेति नक्ठवल्लीत सम्ति मिसिङ महद्व्यक्त यो रितिरिक्त येण्ट्री न्व वर्र महिष्ठ तिस्य न्याः सर्व म युधानयसि द्भित्रीतं न्यासिकं एकमत य सिद्धेः भ्यतो हता श्रादेन धारीर रूपक विन्य स्ते भूत सूद्में कार तामुन्यते प्रकर सात्र परिशेषान्य यह क्रिरादीनां रचिरणादिस्यकं दिन नं रचितं विष्ठि शरीरेर्यमेन चर्डि ग्री र चिम्बिद्धि मनः प्रमस् मेव व इन्द्रिया हपान्त्रह विवयां स्तुषु गा चरान् ज्या प्रनेष्ट्रकं भोक्तेत्याहर्मनीषिराह इति इ CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ं स् नाः ८तते -में ४ धाः त विभारसं यतेः संसार प्राध्य मळीतसं यतेर नः पारं विक्ताः परमं पदं दशीयति महतःप वस्तेन्य्यकानुसर्वेषरः युक्तवान्त्रवरं चित्रं साकाष्ट्रा साचरा गति हित्या दो येड र्याद्यः रचकल्यनायां न्युस्मादिभावे नप्र सास्त एवे ह ग्ट्यने प्रकृतहामादिशेषभ त्राचानात्मादि दूरिद्यवयेन्तं सर्वना म मं वर्ड विवयमा स्मिप द्रन्तिय स्मित्रा वर स्रिक्टियाया । शहरवं विस पार्शिक्पति तं भारतः मर्ने भूत्र करवा दिवय अवहा णां मनसः वरत्वं वृद्या राहतान यनसः कार्य र त्वा इद्विः पर त्वं, सर्वे स्वर हार भोक्ता त्मनः पर्नं सरावातमा पूर्व रचित्रने स् मों कि भाषा पकरराति पर न्यान तस्येव ंपि न्या महत्वं मा चीन्तर दिन विन तस्मा भाग्य भो ज्ञान व भी पद्ममा (इस्म जा) मना शिक्ष नदेवाँक्तश्रदेन द्रश्यातें स्तृति रिज्यव प्यति एमच्य म्हान ममाची पढे हाइम मी प्रज्ञ स्तस छत् राम न्यातम निज्ञानं न्या ति महिति नियं है दि । ये हे हा ना आ

(() sals & die & मनीतिवागादिवापाटम्सरच्य मनापान वति एत इन्यार ध्या स्मार्म नी ति पा मिष्यति हाय न कियनान्त न समान्यवी प्र यो नाचनात ना अपरिकतियतं प्रधान वंका शो सितस्माद्र शब्दं परक विवर्त प्रद A 1190011 गस्यमन्त्र तदहत्वात् ॥१००॥ मानु शरीरस्य प्रत्यक्तत्वेन त्यक्त ज्या न्कराम भायाक्तशिक्तं न्यानन्याह स्थानिवाति तस्य व्यक्तत्वेन श्रीस्ट्रमंश्रीरं प्रमानं स्था हताहत्वात ॥१००१ गतस्कीन त्वास्थिवतः ॥११०॥ नन्त्रगद्वम्तर्वप्रमामस्वनीनस्तं व गव स्थितं न्यातिगर के न्याती किपतात्विपता है समात सुधान पत्र न्याह तह की न निर्म श्यसमाधिः ज गतः स्वतिकता श्रेनस्पा जगहकार विकत राम्बेनाङ्गी क्रियते, किन्त् व्रह्मसाः न्य्रतानं मायेव साचा नारि सेना यक्तं मापा जान्या है अ अपदीका यो नहि तया विनावस्य रोग नगे मिनिव सम्बद्धां सिंध्यतिइति अपिनलात्ता । पम म धीनन्यात्र हैं: तदेवातानं अपरारं अवा

शिक्षे मुद्रियो नगुरासाम्या नस्या ह्यम जीन्तरे सायानां पश्च ति विद्यास मापि प्रदेशवर् द्रीते तस्मा न्याया मितिरिक्तमात्रिश पत्नावनना चा। १११॥ न्तर माह ज्ञ यस्विति सांख्ये : यक्ति नुरुष क्रज्ञानाम केवल्यायित,क्रविष्ट्रियारीवि वाविष प्रधानं त्र य पिनि हिउत्तर्ध नपान के य ज्यानं त्रयन्व नी ज्यते भवता ज्यताचि वा मनना ना व्यक्त शब्द म मधा व मुन्य नितिने ज्यमहो दियकर रात्र ॥११२॥ वश्य मस्परी महत्य मन्ययं तचार मं निज्य "तस्य यता ना सन ना महतः परं अवं ज्यतं म्हलुमुखाल्युमुज्यते स्तिते यत्नेनच न प्रधानं न्याय क्राय विदे से इस्पाशंक्या निति नाजप्रधा मंतिचायाते मोत्तं ब्रह्म जात पुरुषान्त्र परं किल्डि दिति सपस मु मुहोत्मान भूत्रका यहते तु दृश्यते त्यस्म इस्मियास्त्रमद्शिभारित तथा जतना ना न प्रमुख्या मुखते दुन्युत्तं तस्मा = में सेंसंड व्यक्तिशब्द निदिष्ट म्बागाश्वरा

3. 4. HIV. १५०) २५०१ ॥ त्रयासा मेव वेव मुपन्यासः प्रतन्तु॥११० यत्तरमाह नया सामे विति यस्मान प्र प्रेम न्यू ग्रिजी व पर मात्मनी क ह व ल्या म्युक्री न्यास वर पदा ना नां व ता व ना व न्यास श्याने यान्य या श्री स्वर्णय ध्ये चि मद्या । हितं श्रधामा ययहा मिति अपि प्रवतः म्प्रति विविकत्मा प्रमुख्ये स्ति क्षेत्रवेक ना प्रमा ति चेकेइ तिजीवप्रतः भ्यन्पेयस्यित्स्य व धमी द्व्या समान्त्र मानुता नि वरमात्मा नि थाः त्राकादि मधीं तुम्वानीति च्यायप्य व्यापि हन्त्रत इदं प्रव स्थामी यहामिति जीवीप यासः जनायमे सिपतेना विपश्चिति दिनि मात्माव न्यास द्वान हतर च्ह्रय ते नमधानो स्य वर दानं व्यादिन तास्ता न्य प्रधानमा १११ थे। ।। मरहन ।। ११८।। यया सार्वे मेह रूदः मतामाने वयमते प्र युक्तः न नहे दिक प्रयोगीमधीयने अदेश इसामहान्यरः महान्त्रीम्बुप्रमात्मानं प्रविद्धारि महानां रुपादी न पाच्य तंत्रान्दारिय न प्रधान मिमद्धानि त्यनाम प्रधान स्वत्राव्यनेत्रम्।

स्ति भाग १५०) अन् १ वार ध गमसबद्विक्राचात्र ॥११५॥ न्नजा मेकां लेगिहत्या क्रुकु खांवहीः प्रजाः सज त्नियादिः प्रन्यं प्रतिपादित ज्वान्कच मश्रद 'युधानस्य निप्रायन्त्राह्न समस्य दितिना नेन ख प्रत्वे सांख्य नदस्य न्यूजा दि पदानां साधारता मत्मान परता माना मा प्रचाकवा द्वारा द्वीत सिद्ध निजा बन्ता तिम का याः मुकुते रेवान उट्हीत म स्रोत प्रत्यिम् स्था । प्रवंतिन न सां रकीया प्र ति र्रहीनं शवरते न्य्रतो इशव्द वमेन यथाह्य कविलस्मम उद्भेष पुरुषा है। यथाक ध द्विधिवन द्वादिकत्यमेवपनेः नान चमस् माद्रमाध्यारमाः तवानाचि इत्यवेः ॥११५॥ चातिमपक्रमानुत्रचाह्यद्वीपत् एक ॥११६॥ जुनः केयमना जीते यत्रव्या तुना ह ज्याती ते इ गरंत्यन्यान्यातिः प्रमुखाते ज्ञावन्य न्तर्मा चनु च भूतग्राम स्पष्नकृतिभूतेयमना ग्राह्मन्त अय साम्यावस्था ह्या यतः एके शा खिनः वर्षे न् ते जो बन्ता मुत्य ति न्युधीय ते यदग्रेश क्यंते अस सा दूषं यन्छ की तद यां य नकु को इस्मिति तान्येवाम प्रत्यीमज्ञायन्ति द्वार

व सः ता (६७) न्य १ पा ४ ॥ कल्पनापद्शाच्च मधादि वद्विराधाः॥११६ ननुकर्धं तेजी बन्मिका निस्पा उनापि पत्र-या पतस्तेषु भ्यताकृते रभानात जन्म व तत्रायते द्रम्पना इन्यस्याय्य भागात् यमतदत्र ज्याहक ल्यम ति नायमाकृति वि ष निमिनोधार्यः नापिनो गिकः किल् त्यमेषदेशादमा रूपकृषि साम्यात है। लोके का निद्नाता मारूपान हुन के रूप परवक्तरा क्रिका क्रिका मारा कि वि जाताति तहत् द्रयन्ते जो वन्तातिकारिक ति स्मिवरीविद्रह्षं वरा वरं क शित्र अभ क्राते ज्यानहातीति असासास्यात प्रयोग य पादि त्यस्पा इ मधुना मधुत्वं वाचा न्यवा वि माध्येन न्वं नक्ते ॥११६॥ ानसंख्योपसं ग्रहाक्षिनाना भावाद्विरेकाद्या ११९७ नन् यस्मिन्यश्चपश्चनना न्याका शस्त्र याति छतः त मेव मन्य आत्मानं विद्वान वद्या स्ट्रती स्ट्रति प्रति प्रा दी यमुसंख्या विषया प स्व द्वा संख्या भू यते पन द्वय द्रीनान्ते पश्च विं प्रानिः सम्पर्मने तन्संरव्या मंरयेषा न्यपि पदा विश्वति स्वक्तं न्याकां स्यन्ते

Pos

त्रसां रवा प्रापिद्धा स्तत्वारव्या मूलप्रकृतिः महदृष् सम्पुरुषं भीते पंचीवंद्यतिम्बानियायाणिउ र्तादिपद्यकर्ति संशयसारव्यप्रसिद्धं पद्यान नेत त्यानी नि प्रामेड् यने नसंख्याने न सांख्या यापसंशही घट में त्याकाशात्मनी मेर्नगरहीत समिवंदातित्वायातात् तस्मान्ययद्वेजनाः सांख तिन किन्ति हैं ध अजन शब्दः संज्ञावाची दिक सं पंजाया मिति समासिव धानात पराजन संवकाः द्रयमी सं जिनः प्रासाद य रुवो का इन्ययेः॥११८॥ गास्या नानज्यां वाता १११०० ने पद्यमगह्त्यतन्यह प्रारातियसिम्पद्धन्पना तरास्य प्राराम्त्रं असुष्य प्रस्रितं नान्य द्वाष्यताः द्यस्य यास्राः जनमाद्परीयौः प्रमाश्रदः मुप्रमुक्तः रहेन मेख अस प्र वाः पाराः प्रारामि चादि द्रश्नाता एवं निवाद यन्त्रमाः वराति देव ज्ञान्धनी सररमा सेना यन्न जनायासाः ॥११६० = वैवैकेषामसन्बन्धि। १२०॥ ा प्रज्ञननाः प्राराह्यः पश्चमाध्यं दिनिक्न — क्रींशिवादिनां प्राशादिख् ग्रंभस्मानुक्तन्वाते आगाद्यः पश्चन्यतं न्याह ज्योति बेतितेषा कः ज्योति यापस्त सम्पादन कार्य कार्यान

ब सः नाः (ER) 37. P. न्य त्यवां यद्यपित्रवाति वि न्यन्यमादायेश संरब राति अपेष्याभावाति न गृहराम् ॥ १२०॥ ।।कार्गात्वेन जाकाशादिवत्राचाव्यवदि हो कोः॥१२। पूर्व महास्तामुक्त खेदान्ता नां ब्रह्मविषयलंज प्रधानस्याप्राब्द्धयं मिष्ट्रदानीं ज जाती इन्यन वित क्रमत्वान्य द्यार्थं पुनर सम्यने नथाहितं दासम ज्याकाराः सम्पूत रुत्यादिकाचित्रेजास्य महमान्य क्राकान्य सम्बन्धान्यायते प्रार्थ त्यादिकामिवरोधान्त युक्तं सम्नव्यय द्रीतप्रास न्यान कारशासि अवनु सर्वे ने चेजु इ. मे विवादः वि नामनात्यं विषयं यात्र कार्यावितीयं व धाय तेषा मुक्यासा है। जुए रेज बलारा निह मं तसाद कवान्यतायाः पूर्व मार्द्रवायुक्ती जागात्व रतासम्बद्धाः ॥१२१॥ ॥ जगद्वाचिन्यान्।।१२२१ की बीत कितः वीह वैना के लीके एते पास्त पाराहित यस्य जेतन्क म सने ने दित्र त्या ही तान ने दित्र होता जी दि नेता मुख्यपारा उत्तवर पानित संशा के पारा व यस्य जैतरकार्वित स्यन्द्रती कार्योत्ती यांने त्याराय्य एक स्वाधवरिताति द्रश्ला चाति भूपा त्रीवः तस्मापि धर्माटामेल स्वराक्षिवा वर्षे जीवित्सं दर्शनात्यारा भट त्यां के ति यास्त्रशाहत

न्तर ता रहेश अन्य पा त्वीहीव्वर स्पेन तस्मान्यर एवं ॥१२२॥ समाक बेराति ॥१२३॥ तिष्नः कार गीवित्रतिपतिः न्यसहार्दमयः भाषी सद्वसोम्पेद मञ्जासि विनि मनपरि हरति सने 'यतोष्य स्ते व स्त्याच मिन्युपक स्यन्य सहादाय विद्नस्य स्तिवस्य स्तरां ब्रह्मात्रमर्गं निधी घीनाम तमवस प्रवाकृतवस्त्राने प्राधेशा सन्दर्कः प्रयुक्तेः(श्वतः रेशेवात अशुदेव सरीमा प्रापरा म्ट्रयम देवक भ मेष्यव्य विद्वति हितिचेत्तद्यारायात्रम् ॥१२४॥ गन्सम् मुख्यात्रारास्य चरित्र नियोरेव मेहरामि छोत्राह नीवित्र उपकेता वसहाराभ्यां ब्रह्म विव ंध्यस्य न्य नोबहीय प्राराण्याची । पित्रह्म परस्य १२४। जांचेन्त्र ने मिन्द्रमञ्ज्ञ याख्यानाध्या चापे नेवपेके॥ १२५॥ अजीव द जन्म वरम्वे तिमास्त्यन सन्देहा प्रन्या इय कृति पत्य चें तीव परा मध्य प्रतन्या रहेता ना ध्यां वाजन्ति मुना स्वष्टं विज्ञान प्रयाच्देनजीव ट १पन धानिरकेरा वरपान्यानं न्यापनीना मर नमयः पुरुषः केषं तस्म नकुत्रम् नदाजात स्माद्वहानिजी मिनिराहर-स्पन्याधीमीते॥१२१॥।

37.9 ।।वाज्यान्व पात् ॥१२६॥ नवीरसवस्य का मा पं सर्व स्थि जासवत्यान कायायसर्वि सियम्भवतिन्यानसाइ ए यह म अप्रसाकि विज्ञानासा वाचरीवाद् तिसंश येनी विज्ञानार प्रयोग विज्ञानीयात इतिज्ञाले जाप संहाराज्य विज्ञानानी परिष्ठाम वीवज्ञानवचनं भोजूषीन्वाङ्गायनातस्योष् कंद्र ए व्यय दु नियाय न्याह्या वेजीत इदं वा नीपर विचार साव सन्मानं य न्यान्व ताव पंटी श्याते न्य्रायतस्य तु नाक्षास्ति विनेने ति भुन्याये नाम तास्यां वित यह तेन क्यों वदिन धरामान्त् तदेवमे बहो ति योसं द है त्या ये ने य्या ग्या मी ज्ञार्न याज्ञवल्वय उपिदेदेश मनात्मज्ञानाद्र के त्राम पर्य प्रसित् न्यात्य विज्ञान न यव विज्ञान न रमकार ताजानादन्यन मुख्यंनसम्भवतिण्यन्त व्हानं परादादित्यादि घुनयो विनस्मान्यरमात्मन एनायंद्ध क्रेम सुपदेशः ॥१२६॥ ॥ वृतिसासिद्धेन्तिहुः मात्रमरच्याः॥१२०॥ यहुर्से प्रियमंस् विती यक्षमा दि ज्ञानात्मने राजी **ज्ञात्स** द्रश्मापदेशः तन्महप्रातिक्रोतिन्यात्मिति विकाति ज किय पिद्ग्विजातं पवतोति इदं सर्वे यद्यपाती त्यारिप्रतिहायाः सिद्धिं स्नुवयनि एति

स्रः ताः (६.४) अरार प्रयसंस् वितस्यात्मनाद् एव्यत्वकात्न नन्त्रसा मेहासिद्धयि वासासम्मेर सेहेनो पक्ष मरामि सरशा न्याचार्याम् मन्यता । १२०॥ क्रीम ह्यत एवस्भावादित्यो स्नामि।।१२०। ग्रमासम्बद्धिन्युड्रारिसंघातापादी, नवी भूतस्य ध्यान ज्ञानादि साधनानु शाना त सन्त्रसाद्द्वादिसङ्गङ्कामिकातः प्रमान ताय वंति दिल्य मदिना पक्रमरा मिन्द्रोड़ लो गह न्याह अदिति।१२०॥ प्रवास्थिति काशकृत्स्र ।। १२ जी विविधात्मत्में अने विविद्यानात्म भावेनाव ता हपपन्त मधे देनोपक्र मरााम् अने न जीवना मह न प्रीचिद्ध्रस्य ति सर्वी शाह्यारी वि चिक्त्यदी ने ज खुरिजार्तं बरस्यजीव भवा व स्वान्द्र श्रेवीत जन्सा इत्याह त्यव स्थित रिति इदमे अश्वति मा ।।१२०१ उत्तिष्या यह शान्य।। द्रिश्च पति सहस्रान्ता नुपरोधात ॥१३०॥ इनाद्यस्ययत इति त्यस्ताम्तः नत्रद्वस्ताम्त के बिद न दु पादान त्व रूपप्र कु तित्व कु लगात्मादि केर में के विसमान तंत्र कि निम तत्वेन

(E (31) ज्ञानकारशादवं उपादान प्रभू ति ज्ञेनको ति र्षा पूर्वकसाष्ट्रक यमात् कुत्मालमादिवी त्रकार सामन बस्मितिप्रासे उच्यते प्रकृति नक्रवत्तं निमत्त्वयेव विन्तु प्रकृति निम चेन्य भयद्वपम् प्रतिज्ञाह् लान्य यय था। उत्रत्या दशमप्राह्मो यना स्रतं भ्रतम्य वस् नित्यादिउपक्राय एक स्य विज्ञानेन सार्वे ज्ञानप्रतिज्ञायाः एकेन हर तिपराउन सर्वे निर्वा द्यान्तस्य नाम्येषा द्रिमन्त्र निम्ता पादास्त्रम् भयक्षत्वं ब्रह्म साविष्टा न न्तराभावा न्वा न्द्रोत उपादानान्तराभावात्यकि तित्वेद्यत्य चैः वि ।। अपि ध्याविद्शान्य ॥ १३ १॥ उभवरूपने युन्तानरमाह न्यूपियो मं ब्रेंड स्पा प्राजा ये ये त्यादी ध्यानपूर्व सा प्रवृत्तेः कर्र त्व म्बह् स्वामिति प्रत्व ष पत्नाहरू है भ वन स्वायादान च उत्त ।। साझान्यास्यास्य नातां १३२।। मा सा अंद्रिनो पादा यप्रभव प्रत्य यो रा द्वाता व पिप्रकृतित्वं सर्वारिशह प्रवाद्यानि भतानि

80

अ. सं ता. ८६७) अ.१ पा. ४

भाकाशादेवस्पत्वयान्त्र-आकाश्राष्ट्रवास्तं वं तीते यश्रसमङ्गीत यक्तर्यायते तस्यो तदान मितिष्टिस्स प्रेय बीखादीनाम्प्रियेन चित्रपाह साद्मादिति । १२३३।।

भ्या तमकते: परिता मान् ॥१३३॥
नुन्त्र न्याहा तमे ति इत सुन्न स्व क्रिते धतः
दात्मा नं स्व ममुक्त ते त्या तमनः करितं कर्मल
दात्मा नं स्व ममुक्त ते त्या तमनः करितं कर्मल
द्वा ति पाद पति नृत पूर्व सिद्ध स्पयतः क्रियोक्ते
माराह्य मत्र भ्याह परि सामगदिति पूर्व सिद्ध

विश्वविकारात्ममा सामं परि रााप पामास द्याप्तियमेन निष्मित्तान्त राम पेश्वत्वनोधना नाम् । दात्म कृति रचना परिशा प्रादिति एच

नामादातमकृति रचना परिशा मादिति एच नित्रं यत्त्र त्रा सम्पाद्य मिनो विवस्त्रवकु

यहार स्वाराय निकारात्मना वरि सामा मामा

१ न्या कार्निकारि नेति।।१३३॥

ज्ञित्राहिजीयते ॥१३४॥

मानिक रिता वका यो निश्च के वदा ने वस्त्र प्रमुण ते निर्मित करितः यथा कर्तार मीशं कुरूम प्रमुख मीती थिए

वुः सुः ताः (६६६) उनः पाः या निम्पिरपत्रपन्ति धीराइति च प्रिये राष्ट्रियनस्पत्रीमामिति दृष्टत्यात्। सपास म्यानवचनो वियो निषादो हुएः योनी लिया न्द्र निवदित्राकारीत्यादी त्या नन् पर्वात्र समते गरहाते चेडमारिवाना प्राचान प्राची वस्त एवं विस्तरसाग्रेष निपाद विखा म्य त्पाहया विस्ति।।१३४॥ । एतेन सर्वे व्यारव्याता त्यारव्याताः । ११३५॥ इति इस्ते नी श्रव्हिप्य दिना प्रधान कारता नार्थे अन ने रेव नि राक्त तन्पश्रस्मा पोइ लकानि । द्वा भारादी निन्यापाई तती मन्द्रमती न्य एव भानीतिद्वलाष्ट्रितिभाष्ट्रितिस्थानी न्ये व्यास्त्रिता सपश्चन्यतो त्यन्त न्त्र न्यस्य प्रार्थे दो अतीवयानाः मूत्रकृताकृतेः नारानीदेणार रसानाद्य तिष्ठा दिन तिषि पिदा ने रूप्या या इत्यतः प्रधानमञ्जत निवर्र सान्या प्रमुक्तं खारूषरामिने के व्यतिहिधानि एते नीपश्च वि यधानकार सावाद प्रतिषदान्या वेन सर्वधन माध रावादिकार सावादा प्रति तिहुतया व्याख विदिनच्याः तेवायोप प्रधानवर्षे श्राम

चिनी भारति विरोधित्यान्य त्यारव्याता द्वीतिष्य का भारती है। ाने के प्रयास्त्रचीः तस्मा द्रस्ने गजांद्रपादा निमिति विद्वापारिए। गेनी। व्याध्यकरराम् - इतिव्यसम्यन्त्रतास्ययिवनर रोग चोरी ने स्तुर नार्या प्रस्था प्रचास्य सन्तु चीर् वादः समास LENDENT GEIL चे खा म द्रमनवका श्रीष प्रसङ्ग इति बन्तान्य स्मृत्यनवका श्रा द्रीष ३५॥६ मध्याचे सर्वस्य द्रश्वरो जाभकार शां म्टहादिए न च्या ता थार्गी मुन्य न्यममनी नियन्तरनेन स्थितिकार्शां मायावीन काति । स्वात्म न्युपसं हारकारशाम न्युविति भृतयाम ती न्यु एवनस्विषान्यान्यातमा इत्यादि प्रतिपादि नम् करें भागारिवारा मार्यार्ट्न रिराकृगाः इहानीं सरितन्या न द्वारोधा प्रधानीदे वादाना भु न्याभास म्लकन्याम वर्ति गरंगचे द्वीत पाइनाय दिनी ची विशे धा ध्यायं प्रारम्य रणामण्य सारित बिरो धमाशङ्का परिहर नि सद्योति पेन यदुक्तं वृक्षकार्या मितितन्त्र कृतः कविन्त्रशास्त्रस्य नेति पश्च शिखाः दिशास्त्र स्यचानवैकाश प्रसंद्वाता ननाचेत रिक्ष न म्यथानद्वार सामिन्युक्तम इ खरस्यकार सान्वे प्रधा नस्तिन्यंनवकाशयसङ्गत् इतिनेहिन्याश्रद्भा द्षयति auk न्यन्यस्यत्यनवकाशिति न याचकापिता दिस्य विश्ववेद विराद्श वा

असे तन माधान मपनिवहं मन्नि सिरित वृने स्मरी कास्नुइदृश्चेनानेन विधिना इत्यश्च कर्न व्यापित वर्णाम्य मधमान्यातपार्यति तिन्त्न्षेयधम प्रति पावल्यात् मन्वासुक्त मीक्रां पर्गाक्ष स्पस्रते येचा कचार्रि दुप्पा क्रिय म्ब्रह्मितसरतेरेन विद्यासः युक्तषाचि स चामन्बादिसरतयो निरवका शास्यसिस्पा रसम् वेदिवहहुत्वात्सेवात्रमारास्ट ॥१॥ ॥इतरेषा चानु यलको रिति॥शा क वित्यस्पत्यनवका शे इष्टापतिम द्वायन ह इतरेषामिति इतरेषा म्यूपानव्यति रिक्त धेरे हो त्वानां लोकेवे देचानुपलस्मा द्वामारामिकः भ्रेनिद्याद्यस्तुन्तेकवेदप्रसिद्दन्वा छन्त्रन्ते न्तसान्त्रप्रधान्द्रार्शाष्ट्र।।२।! ॥ हतेनयामः प्रस्य करः ।। ह।। कतनिति सांख्य स्पनि प्रद्वाख्यानस्या वेन योगस्मी रिषप्रमुक्ता तन सां खायेक्षपावेह प्रतियादि अर्थ प्रकत्वेन या जाभ्य हितः यथा खातव्या यन्तव्यः सर्व काय शिता त्रीवस तां योग मिति मत्य ने वागिषे। सकुत्स मितितत्वरु द्यायोग इत्या शितिग्री

८७१) जान्य नात् 85 नः सः नाः जाग स्याचीत सम्मतले न तन्मति मिद्ध म्यान स्याना र राज्य स्थवीदन्यिक शंका निराशाय सूच मेरेन तकीद्स्यरलादिनीते प्रत्युक्त प्। ३॥ ।। न विलस्तरगद्रमादस्पत्रचात्व द्वाराव्यत्। ४॥ स्य ति निमित्त माद्ये प स्परिहत्य तकी निमित्तक लास्य गिहर निन विलास्योति युड्क होतन म्ब्रह्मकार सां एतन्त्रापपराति यतः जगिहन्त्रक्षांचेतनंशुई ब्रह्म १ जगद्धिल सरा मजेतन मशुद्ध भूत न्दृश्पतेनच विल सरायाः प्रकृति विकृति धाना दृष्टः तस्माद्नेतमञ्जग गररामिति प्राप्ति ज्याह न वित्त स्रात ने नि में ये का प्र ारतातेते सजाती ये ति जिन नियमः जाययाद विवरियुक शरिरदर्शनात चेतनपुर षाद्वेतन नखकशादीना न्दृष्ट्ताचा वेद् निरविष्तः शुष्टकतंकी न कार सा त्वीन वैते के स्माद्वर्य वकार राम्।।।।। ।। जीभ मानि। व्यवस्थान विश्वान गीत म्याम्।।५॥ न्रचत्रमप्रकृतित्वा ज्ञज्ञतीपिचत्र म् तंस्वात् भ्य त एव मृद् ब्रवीदांपान्व नित्यादि भूयते तहवाच मनु स्वे-उद्वायित तस्पाञ्चा स्वेतन मोतिया स न्याह न्याभवातीतित्र शब्दा न्याश्वरहाय नोदार्थः

नखलु म्ट दब्रवी दित्यादिना जगतस्त्र तनत्वस् म्मा वित म्मा विद्याति यताऽये से भि मानीव्यक् ब्राध्यमन्त्रीला कुतः भो क्तृरणास्त्र तनत्व मेगाञ्याम द्रा भूतेन्द्रिया गामस्त तनत्व मिति प्राधिवशिषकः श्रीप्रेवी म्मूला मुखम्प्राविश्व दित्यादिना मन्त्राक् बादेन सर्व जा भिमानीन्यक्स्त्र नादे वता स्वतु गा सन्तिः तदादा योषपादनीय म्हा । ५॥

॥ दृश्यतेत् ॥ ६॥

युन्तान्तरमाह दृश्यत द तिनु रादः पूर्व पश्य राउनार्धः युक्तक जिल्ल सरगद्वा जकाररापिति तुनवह्ना स्त्रना मास्य स्वादीनाय स्त न प्रयाद्रस्पत्ति दृत्रयते इत्यचीः।।द्रि।। ॥ असिदितिचेन अतिबदामान परन्यात् ॥ ६॥ न न ने तना द ने त ने त्या तियोद्दित हा पूर्व मसतः कार्यस्यारम्यः स्यादतः श्वासः श्वासितं जीतेषध मार्ने ही दंन हि प्रतिष धास्य प्रतिस्व ध्या मीसन्स यम्प्रतिषधात्रागुत्पत्तः कार्यसद्ये प्रतिवधीती। य चदानीद्वतर सात्यमा कार्य सदन मार्य स्पेरी निनद्दायः निन्मान यान्यस्त्रेसने प्रिनिस्कर्ण ॥ अपोनोनद्धत्यसङ्गारसपञ्चसम्॥ ॥

वास्ता १००३) अन्य पान प्रियून शह्म तदा अपीतो नेवसाते कारगास्या क्रम त्वा दिप सङ्गोह तोस पञ्च से मत दित्या शह्मोत जु पीता विति ॥ च॥ ॥ नतु दृष्टा नास्मा वात् ॥ ठी।

समाधननिति हृष्टान्यमाता दन भवदुक्तमः अशुद्धे श्रीकार राष्ट्रिय दूष य तीत्म अनु हृष्टा न्ती मिन यथा य दशरावादेश विकाराति माजा वस्याणा प्रचानन मेदाः सन्ती नाशात्रेम् इन स्वधर्मे दू ब्रेचेयु रेगम असेमाः घनाः सितसम्बयन विद्रार त्यादि स्वति यु पष्टामक तथा योज नी खाः ॥ ६॥

गस्यप्रहाषाच्य ॥२०॥
तथमते पिइदम्द खरापिति विस्व द्वारा त्या ने द क्रारा
त्यान प्रकृति कं श्रव्हादिही ना स्वयाना क्वकारे
प्रते नगर्र त्या सम्मन दिति स्वय हा पिद्राचा ना
तथाका धिस्यकार राग्विभागाम्य प्रगमान ह द्वीता
विद्यसङ्गः समानः तस्मान्त्र निष्म मः समानम्बद्धाः
श्री प्रत्याह स्वय होति ॥२०॥
॥तकीष्रिते स्वान द्यान्य पान् मेपिति वेदवमया वि
मा स्वा प्रसङ्गः॥११॥
ने युक्ता स्व्यत्तकी दिना प्रधानस्वय र माम्यादिनिय

न्य अस्पारूपत्रकोदिना प्रधानस्य यर माख्यादिनीय राग कारकत्व मावनु इत्याद्यद्वा समाधाने तर्काष्ट्र निष्टा ना दिति ज्या यो पेक यो पेडिकेन लेप तर्काष्ट्र विका

सः यतः खोत्रां सामान निवस्यना सर्वतः अप्रतिष्ट ताः भवन्ति उत्येशायाः निरुद्धाः त्वात् सर्वे त्येशाप एक ह्या भावात न न य मिड् माहात्य स्पक विल कसादिस्स्वीं प्रतिष्ठिते में विव्यति व्यन्पया पदार्थव्यवस्थानस्मात् भ्यार्षन्द्रमिषदेशस्त्रवेद शास्त्रा विरोधिया यसके शानुसन्ध ने संधर्म ह दनतरः इतिसरितरपीतिनतका प्रति छानन्रेप र्ति प्रधानाद्मकारगामिति ने त्रवमियंसार विमेग्स स्वेत प्रस्क्येत् स्वतिन्वनाकृतस्वकी प्रमा मनसर्वधामेग्यसमानात् विषयस्य वर्षाः पपत्ना पनित्र तान स्वन निर्देशता सम्मेग् ता तल मतावद विरुद्ध प्रधानकार रात्वादे स्वीकारे च्या न्या सामारा करपा पि को ख़ानसा त्रसान्द्रित्वनान्त्रिर्विवादम्ब्रह्मराः कारतात्मा ॥ छत्रनित्राष्ट्राचारियहान्त्रीय ब्याख्याताः ॥ १२॥ विद्यद्वीतस्यसार्यायायात्रीदः प्रत्यासन्तन्यात्री श्चिन्दि छः चरिग्दरीता अप्रिकति निरस्ताः इत्री चेदिकाष्परिश्हीताः केवला तर्कप्तला ग्राम दिकार सा नादा से पि एते म प्रदास का हैं तीन राकरणकारलाम यन्नास्य परिग्दिता सर्वः प्रतिविद्रतया व्याख्या ता स्तुल्य युक्तः ॥१२॥

भो जापतेरविभागश्चरमा त्वाकवत्।।१३॥ प्रमार्कता ग्रह्मकार रात्वमा स्विष्य समाधने भोन्त ति यदिव्यस्वकारराजि हिल्लाक प्रसिद्धा यो भोता चे तमः शारिरा माउपंत्राव्हित्वचे तम मितिविभागः सन स्मान्त्र मतः षरमकार्साद्वस्य रोतन सन्ति ह ति प्राप्तिसमाधते जाकवत् यया लोके समुदाद जन्य नवे पि नी वी तर इता दे रितरे तर विभाग इत रतरंसक्नेषारिकावहार स्तद्धह्त्राष्ट्रपादापा ज्ञान्तिभाग्यचि भागःसम्भवत्यवे ति नदाषः ॥१३॥ ।। तदनव्यत्व मारम्भराष्ट्राव्हारिभवः॥१४॥ तनेवोपपत्तिमाह तद्नेय त्वेति त्यावहारिक मेग का भाग्य विभाग मङ्गी कृत्य समाहितम् परमार्चन स्तुना योध्वभागः यतस्य त्वार्यकार्या योरत्य त्व पवम मित्र वियद्विक वंकारसान्य चक्न न पर मार्थना पिन्तं कुतः आरम्भराशस्ति दिश्यः एक विज्ञानमम र्वे विज्ञा में ज्ञा प्रस्था नार्थिष के यथा सो में के नम विरोडम मृदास्त्राविज्ञातेन सर्वे प्ररामयुड्ड र मनादि परदाविशेषा विज्ञातम्यवेत् यताष्टादिवि कारा वाजे व दारासी त्यार ध्यते नवस्व नतरं गाम द्रायमाने तद प्यन्ट तं मदेववास्तविकेष तथा अ हाव्यतिरेकेशानिक भीषका भीनात मस्ति हतदा- 20

त्यमिदं सर्व मित्यादिष्युतः नाज्यचे क निज्ञानेन स वीवज्ञानेच देत न्यून नह नक्त नाज्य पि निस्तर भया ज्ञाक्त म् त्रचाच परमा चित्राहन न्य त्व स्व्यवहारती

लाकने हुए। काल्य निकः॥१८॥

। भावाचापनान्धः ॥१५॥

युस्य नरमाह भावेच ति सदादिन त्या प्रभावेस त्वे एवकायीयत्वे सम्मत्वं न जनियममा न्यभावे त्या न्यास्पायला विश्व द्रिया ने तहा विश्व गारमाः सन्गाभिव एवा पत्न भ्यते नचनिष् मयारिप-प्रम न्यत्वं स्मात् उद्धाते यये नागीपा त्युरिकारी धूपदर्शनात् जिन यता वस्पानी म जानीचापलक्योरितिवास्य मह नकवलं च्योर वकार्यकाररा प्रारम्भावम् उपलब्धे जीवाद षि निहत्नु संस्थानेपरतन्तु व्यसरकता पष नामकाय दिन चिड्ड पत्नभ्ये ने न्या नान विनानपु का सन्तव एवड इपने एवन नु खंशनं इयुषु नद्वयवा इतिक्रमेरा लगहन्यकुकुलानि रूपारि॥ तय वाद्याच्या प्राचित्रं त्यनु मेयन्त्र तर्ष गब्रिया हितायन्त्र सर्व प्रमारानि ष्टाम वी वामः ।।१५॥

॥सत्वाचरस्य॥१६

与身

का की नो त्या है यु स्ता सर माह माने ति या तः प्राया त्या है। का रशासिन व मान मान माने स्व मा

। युक्तः श्राद्धान्तराचा । १ वा।

मुक्तः शब्दानराचानन्यत्व प्रित्याह युक्तिरितं हिरिएहर्स्य कार्याची पिष्रप्राष्ट्रत्यक्तिः नियतकारराणिन स्नीर घटत सुवर्गाहीने उपादिसन्ते नियमन तद्वराधिम म्हे निका इच्यति पिष्ट्रिय १ नत्सदा मे दिति

ज्ञरसकार्य पश्जोपपद्य ते पूर्व सर्वस्या सत्ते रुग्पाहर द्धीत्यादिनियमः कपस्यवेत् तस्मात्कार्शास्यात्मभूत शक्तिः शक्ते साम्ममं कार्यं किञ्चकारकार मानाई अ गाया साध्वमहिन्दर सन्त भेर्वु ध्या भावा तादात्म मुत्रीकार्यं व्यवस्थ कल्पनेतस्य नित्यत्वा नित्यत्वास्यार हतत्वात अतउक्तयुक्ता न यत्व शब्दान्तरपणिषु नीता ग्रामक कानारं सदेव सा प्येद प्रग्रन्थासीहर हितनदंशक्ति ग्रस्य नार्थस्य वाग्रसतेः सन्दर्भ च्येनकारतान सामाना धिकररापात ॥१ =॥

गण्यन्य गावरी।

दृ षान्य याह्य विविधिते यथा संविधिती विद्या क्रत्या महाते किम यं परो न्यह ते प्रसिद्ध ने ने कि तह्यं यह स्वितिन्य पिन्य उपाते सन जिनि इलिया मविस्तारा दि यहरोना सहरां नवा सत्वा सहवे वन

सरिक्षामन कार्य पाधिक तमसन्वं सन्वं तम्ब्र तीरित भावद्या १९००

।।यथानयह साहि।।२०।।

हृष्टानान्तरमाह यथाचे ति य वान्ति वाराण्यान दिशासायमें इसिमाया ने सानिसे देव कारणामार्थ हपेरास्तिमाने व जीवनमा नंकार्य निर्वस्तिम

कुंखन प्रसार सामिद कायी नार्टी के के किया में से पूर्व

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रम्बर नम्मथ परङ्गित ग्टसमारी विम वि ब्रिशया मिवस्ता रोग्टह्म वसर्वा व्यवस्य यते तथा कार्यान्ना रशामन

न्यत

(90) अरि न स्ता अववरते य जीवना हिकमाक य नादि विभवित्यं के नव प्रामा मे मदाना का राष्ट्रिया वे वाप्य मावा विशेषात एवं द्वा रिस्पनगरणद्नन्यत्वं त्रातः विषिद्वमेने विज्ञान सर्व विज्ञा नम्मात्रेनातम् ॥२०॥

र्तर्व्यवदेशा दिना करणारिकेषप्र सि हिः ॥२१॥

युनयुत्रमकारतात्व मासिपति दूतरिति इतरस्य जीवस्पनः ह्यातमत्वे व्यय दिशाति तत्व मसीत्वादि नातत्त्व द्यान वाविष्यतिबद्धाः कार्यानुमवेशेनवारियत्मल द्रशन्त एवश्चे भी आ नात्मकः पर्तमेव ची ६ कति दासंसारिता जे राज्यादि हित्रहुन्तो न निर्मित्रीत ज्युहिनं नरक हितु मधर्म क्तः कुषीत इतिनिह्यानाक सुन स्वस्पिहिर्तनक रितिन्य हितस्याकरितितसमाद् आत्माकारराम् इति॥२१॥

॥ श्रियकन्त्रिय द्शीतात् ॥ २२॥

समाधने अधिकन्ति व सर्वतं सर्वक्रीन ब्रह्मकारीयद धिकं, भारमाइ एयाः सा ने एया प्राज्ञ मान्य इंदर् निव्ह र्रक्रिये स्तिर्शात्त्र द्व नगतार्गा नजीव भावाय मं सर्व ज्ञाह्य जीवसंसार स्प मिखान स्यानि जेपत्वं चष्यपति न्यतानिहनाहिन भोक्तिन्यदौषः ॥२२॥

॥ श्रेषादिनचत्रदनुपपतिः॥ १३॥ अस्मितियचा एचिनीत्य सामासात्म भी पे अप्रमनां के नि महाही मरायात्र आद्यः मध्यप्रास्य कान्ता द्यो निक् ष्टावायस प्रक्षपाही यंचा य चिनीत्वा विज्ञेषिपिय व्यव of

य नार्वे चिन्यम्य नस्यते एवम वेकस्या विवस्तार्के वामात्र एथक्वम कार्वे चिन्यक्षीपण यते न्यतानत

नमुमोरा खनतमां निरवेद्या वाद्वा चान्तं नतुनुत्तालीद्द बन्नेतन स्पत्रस्रा द्रया वाद्वा मात्र द्रवादिति मचानत मुम्पि देन पित्र ऋखादया महाय मानाः न्यून पे क्षेत्र ब कित्तिह्य ह्या न माने ता ना ना प्रशेर प्रास्ता द्रिति निति मित्राः उपक्रियंते ययो शीना भिः स्वय मेन तं न्त्व त्ना का नोनेन व्या के मिर्टिस मित्रहरिति ॥२५॥

"कृत्स्त प्रसन्ति निर्वयवन्य श्रव्यक्ते वोवा ॥ २६॥ अस्र जगत्कारमा पिति स्थिति चरिशुद्ध घे पुनर ग्लिपति कृत्स्ते नि निरवयन त्वाकु स्त्रस्य श्रह्मा गाः का यस परा परि सामः प्राप्तो नि यहिसा वयवं तदा प्रिय व्याहि

7

TE

रो

9

9

वदकदेश विरित्तामा भगत तथासीती निर्वयवत्व प्रतिषाद क श्रद्धानां निर्श्वरां निष्किषं शान्तं दूषत्या ही नां के पो ऽपापा गयम्बास्मातः ॥२६॥

।। भूतस्यदम्लन्गत्।१२०॥

तुष्विद्याचार्ययोः नाय पास्पः स्रुतः यथेन न्रह्मान गट्ट त्यतिः स्र्यते कर्व निकारचाति रके साणि ब्रह्मावस्थितिः स्र्यते प्रकृति निकारणे भेरेन व्ययदेशातः व्यनमजीने नातनमान प्रविद्यति स्र तिस्यापास्त प्रकार करित्यापात्र स्राम्यत्या स्राम्य स्राम्यत्या स्राम्य विद्या प्राम्यत्या स्राम्य विद्या प्राम्यत्या स्राम्य स्र

।। ख्रात्मनियेवं विचित्रास्ति। २०॥

न्याप समान विवाद शंका सिन्यस शासक्षणनु पमहैनेवा नकाकार स्टाष्ट्र: सम्म विद्यात यथेक सिन्नात्मित्व में स्वह पानु प पेर्देनर याः पन्यानः स्टज्यन्त मामाविष्या नु प मेर्दनह स्टाश्वादि नचे वेकात्मिन नामा स्टार्शः स्वह पानु प पेर्दन सविद्यात इत्याहात्मनी नि ॥२ २॥

95

3

॥ स्वयस्दिषाच्य ॥२०॥

परवामिष निरवय गरि प्रधा मं सावयवका पे उसा

दयित निर्मापकु स्मप्रस निर्मित्वय गर्म प्रतिकेषा

दयो रोवाः सन्यवे ति न त्यया प्रति से प्रव्यस् देणसाम्या

त इत्यास्त्रस्वप स्नित ॥२०॥

॥सर्वा वता स्नत्व हरीना त ॥३०॥

एक स्वाचिनित्र शक्ति वागा दिनिन्न कार्य जनकर्ते दुर्गुक्ते त्र त्कच प्रथ गम्पते तनाह सर्वे तिस्वि शक्तिप् ताच चरादेवते तिक्ताः त दृष्टीनाने सर्वे कमीस्विकामः सर्वे गन्दाः सर्वे रसः यः सर्वे द्वाः ससर्वे वित् एतस्य भाषा द्वारस्पप्रमासने गाँगी स्योचन्द्र मसोविष्टतीति छतः दृति॥ ॥विकरतात्वान्त्रति चन्द्रक्तम् ॥ २१॥

नन् अवसु ब्रिय प्राच प्रवागमन इति द्वानाति विद्यस्व विश्व प्राचा ह्वतायाः क्यन्तिन क्वित्र प्रविद्य विश्व प्राचाः ह्वतायाः क्यन्तिन क्वित्र प्रविद्य प्राचित्र क्षित्र प्राचे प्रदेश प्राची त्र प्राचे प्राची त्र प्राची प्राची क्वित्र क्षित्र प्राची प्राची क्वित्र क्षित्र क्षित्र

य विश्व स्मापिक स्मापिक स्मापिक स्मापिक स्मापिक स्मापिक स्मापिक सम्माव के त्रोतिको त्रोतिको के त्रोतिको त्रोतिको के त्रोतिको

प्रवित्रान बसनः कर्नाती इरा।

गलाकवन्त्र जीत्वाकेवल्यम् ॥ ३३॥ ममाधात्रेला कविदिति यथाकस्य चिद्रांशेषणास्य राजा प्रात्यस्यवा किन्ति त्ययान्तम पनिष सन्धायं के वलंतीला ह्याष्ट्रव्यत्याः कीसाविहारेषु भवानि ययो छा समिक माद्याउनीय सन्धाय प्रयोजनं स्वभावादेन एव मीव्रव रस्पापान पश्णाय योजनान्तरं स्वभा गादवके व लोका क्रियमः केवलं तीनां ह्या प्रदित भीनेव्यति नहीशा स्पप्रयोजनं न्यायतः ज्ञतित्रोवा सम्भवति न्यासकामन्य ते नाम्युन्यत्तवत्यत्तासर्वज्ञत्वात्।।३३॥ ।।वेषस्य ने की रायेन साषद्यन्वा त्रचाहिद्द्रीयाता।३४॥ युन होच्छीय स्यूरानि रवन भ्याचे ने श्वरस्पकारराज्यमा शिय समाधने वे वाय तिकां सिंह वादी मान्य नाम रवभाजंकरोति मनुखादी साध्यम भोगभाजः वश्वा हा संस्थल दः रवधाना करोति एवम किसेवी प रेनेः खुत्यादि सिद्ध स्वक्षत्रे विलायः दः खदानात् प जासं हारादितिकूरत्वं ने दिरापं विवेषमञ्च स्पान नजेतत्स प्यवतितस्यान्तकार् गांद्रोतेषा हे न्याहन मापेश्वत्वात् धर्माधमिदि सापेशस्त्र्यात्ची त्याह्य ति स्टन्यमान प्राणीधिमी नुमरणात् इश्वरं स्नु माधा रगाद्वार राम पर्यन्य वत् असाधा रगान्धमी दिकं न्यप सत्तत्र विस्त्रमारामिति इन्द्रितः तचादशी यति एवं स्वासायुक मेकार यति प्रयोगी के मा

9

उन्तिनीषते पुराय नष्टरायाध्यक्षीत वापः वाच न तिसर तिरीप ययथामाम्मपरान्त इत्यादि ॥३४॥ ॥ नकमीविभागादिति चेन्नानादित्वात_॥३५॥ सदवसाम्यदमयन्यासी दक्सेना दितीपंड तिपाक स्टिशिव भा मा वधार गात स्ट श्रानरं विभा मापेशं कसकमीपस्य विभागद्गीन्या खपार अतीव भागादृद्धंकभी पस्न इत्रवरः प्रवर्तिता न्याप्रीवि भागात्री विचित्र्यकारिकमेशाडमावा मुल्येवा सारिष्टा स्पात् र्यासीया स्वार्य स्वर्य स्वार्य स्वार स्वार स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स निमाद्भर बता क्रिनादिस्यं कुत इत्याह उपयदाति नि श्वादिषद्वसंसारस्याकासा कद्वापने प्रकानास में संसार मजन पराइ इत्युपयतिः सरतानप्र संसारस्या नादिल म् पलभ्यतेन रूपमस्यह न सीप लभ्यते नान्ते नचारिने च सम्यति हा प्राराचा नारि तं संसारस्याक्तम्। ३६॥ ।सर्वधर्मापणनेश्च ॥ ई ।। इहितायस्पप्रयमः वादः स्वपक्षं उपसंहरन ब्रह्मारा काररा ग्रह्ममारा दर्शित प्रकारेशा सर्वेम पपदाते सर्वर्त्तं सर्वशक्ति महामाप खात्रस्मितित समानिर्दृ ष्टं न्वापिन घदनगत्क तरेल द्रश्वर स्यत्याह सर्वधार्मिति ॥ईवार् नेत्रब्रह्मस्नता त्यपविवररो द्वितीयस्या विरोधाध्यायस्य मः पादः॥

निवाष्ट्रपत्ने यते व । इद्

प्रधानाद्विष सर्व ब्रह्म धर्मा पर्याने मात्राङ्क्रीनेराच ष्ट्चनानुषयनि द्योत यद्यपिपर यद्यनि राकर राम युक्तम् तथापितेन विना निःसन्दिग्ध बह्मिनर्शया नु पपत्ते सार्क पादे सांख्यादि दर्शनानि निराक्रिय न्ते इ हाते नी शब्द मिन्यादिना निराकृतमेव त-याप्यनस्वतन्त्रत्याति प्रतिषधाये विचारःन न्ययाद्यराद्योम्रहात्मत्तर्याः न्वीयमानाम् ,सामान्यपूर्वकालाक दृष्टा सचासर्व वाह्याच्या त्मिका भदाः स्वदुः खमाहात्मकतया ऽ वीयमानाः मुखदुः खेमाहात्मक सामान्यत्मक प्रधानपूर्वका इति परिशामादिमि लिङ्गि स्तदेव प्रधान मनुमेष मित्यास्विसमाधानमाह यदि दणन्तवनेनेन दुस्ततिहिं नाचे तनं चननं धिष्टतं कि चिष्टि जाती यपुरुषाची निर्वतिम् समर्पे विकारात्यादकं द् छं नाक प्रज्ञाव दिः कुनानाः प्रानिय भिर्विना तीया चा न व पासादादयः सुखदुः ख माह स्वभावाः र चितास्त चादकागत् नानाकमेषलभागयाम वाह्याध्यासिकं प्रारो एस न्वितं प्रसाव द्विति वि भिमेन सापिन्य्रवात्नावनं कथ मधानमच तनं र्वपत् क्याका रादिचत्रना भे छिन्कुमादिननावत CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वः सः ताः (च्छे) अः २ पाः २ तसाचितन विना रचनानुषपत्ते नेगत्कारराम्ब्र-ह्मचकारेगाहे ल मिद्धिसमुच्चयः॥३०॥ गप्रवत्तेष्ठ ॥ ३०॥ युन्त्यन्तर माह प्रयत्ते स्वीते सर्गद्वः नुंया प्रयतिः प्रधानस्य साम्यावस्थातः प्रन्यतिः गुरागाना मङ्गा द्रि. भावाप तिः सापि चत्न मिना सम्भवति अ तः प्रवत्ते स्र वतन मनकाररां वतना धिरिष्टेतर षागत्यादिवत् नचप्रयति रहितात्मनः कथं परप्रवर्तक त्वं न्यू यस्का न्तवत द्वपादेव चस्व यमप्रसमिन्ययस सुद्वारोजा प्रवर्तक त्वं तथाष्रयतिर हिनापि ईश्वरः सर्वेगतः सर्वाता सर्वज्ञः सर्वेशक्तिः सन् प्रवर्तयेत् न्य्रतः ॥३०॥ ॥ययोग्वयचेत्रनावि॥४०॥ यथास्तरस्व बत्स विद्धेय सीर म्युवर्त ते यथा वामध्यन्तं खत्र एवलाका वकारा य प्रवतित चास्वयमेवाचेतनं प्रधानं प्रवर्तत दुन्पाशङ्कत तना विचेतन गवादेः स्तेह क्या पयः प्रव तेकतं क्वंजर्न निम्म स्यास्य विश्वमें व स्यन्द ते द्वीते समाधन पयइति॥४०॥

॥ न्यतिरकानवस्थिते द्यानपे सत्वात्।। ४१॥ युक्तान्तर माह्यतिरेकति गुराच यसाम्यानस्या त्मक प्रधानस्य कि चिद्रद्यद्ये सिन मन स्थितं नदृषं पुरुष सु उदासोन इने भ्यन पे सम्प्रधानं तस्मान्वकद्गिन तमहदाद्याका रेशा परिशामत कराचिन्तितिन्यतिरेकः स्थात् एत इस मावीद व्रवरस्नु सर्वज्ञुन्वात् महामायत्वा चेत्रवस्यत्रव तीनविरुध्यते।।४९॥ ॥श्रम्यनामावा चनस्या दिवत् ॥४२॥ नन्य चात्ररा जनादि स्वभावादेव झीरादिह्येशा परिशामने तथाप्रधान मोपस्याने इन्मायाद्यान आपि धन्वापयुक्तंतरगादिशोर मावातेनप्रहीरा मन्पण्तां वा दोन्वासम्बन्धि इतितत्रापिनतना चिष्टितन्व मित्याह न्यन्यने ति॥४२॥ ॥-प्रम्पुणमेऽप्यचीभावात् ॥४३॥ तनुष्रद्वया स्वाभाविको प्रधान प्रधाने रभुपगम्य त इति चेत्र यासित ययासह कारिशो नाप झतेत हिं प्रतिक्निमिय्ता पंस्ति ति प्रधानम्प्रषाचिस्य माधर्मं इति तवप्रित्ता भद्गः स्यात् तथानवन्धमा स्वयवस्थानस्यात् तस्मानप्रधानस्य नजगत्प्रवतेक त्व मित्याह न्य्रभ्यपगमे पाति।। ४३॥

ब. स. ता. (००) अ.र पा.र ॥पुरुषात्रमविद्तिचेत्तयापि॥४४॥ नगुयचाद्त्रीन शक्ति महित प्रयतिशक्तिरहितः अधि सुरुषः पृंगः अपरम्यय तिश्रातिसम्यन्त दुक्तश्राति र हिन्त्रं धं यह षम चिष्ठाय प्रवते यति न्यु यस्का तः स्वयमप्रवर्तपानाऽयः प्रवर्तपति स्वम्पुरुषः प्रधान म्यून तियव्यतीति शङ्का यां समा धने पुर वतितयापितेवदाषपरिहारः भ्यभ्यवतहान होवा त् त्याप्रधानस्य स्वतन्त्र व्यत्यस्य प्रमात्न यां वादायां नः युस्यः प्रवत्येत् पंशुरस्य म्वामि मिः प्रवर्ते पतिनेव म्यु मध्यकिष्यु द्वापारः नि क्रियत्वा निर्शास्त्रा न निर्धान माने गा यस्कान्तवत् प्रवर्तकः संनिधि नित्वेन प्रवरिति त्यत्वप्रसङ्गात् प्रकृति वृष्ठवा भा न्तरतीयस्य स म्बन्धरभावा न योग्यताया न्ययम छेदाद निर्माश्चया पर मात्म नस्तु स्वरूपत ज्या ए। सी ध्रमा या व्यापाराध यं प्रवर्तक त्वीमत्यस्य ति शयः॥ ४४॥ ॥ अप्रिः नामुपपत्रभू॥ ४५॥ । युन्त्यन्तर माह अद्भित्विति गुरा नयस्य प्रिचायुग मुताभाव मुत्स ज्यसाम्यस्वर प्रपानि सावस्थानं प्रधानावस्थातस्यां स्वस्वस्यस्य स्था सियोङ्ग द्गिभावानुषपतर न्यस्य झाभायन रभावात गुरा वषम्यानिपत्तामहदासुत्वादी नस्यात्।।४५॥ ॥ त्रम्यया निमती वज्ञाकि वियागान ॥ ४६॥

ब्र. स्ता, (च्छ) अर २ पार नन्कारी वद्रान साम्यावस्था यामिय वेषम्या प्राप्त पात्र्या एन गुरा दिनि इत्यन्य पा नुमीयते इत्या शहरीन मिषिप्रधानस्य ज्ञानशाकि वियोगार् जना नुषयितः स्वतः प्रवास्य स्यास्यः प्रविक्ता दायाः तद्वस्यास्य त्रा कानुमान त्वतमिकं ध्यतक प्रवश्च स्योषादान विति व्हावार प्रसङ्गः साम्यावस्थायां निमित्तामवान्तेववेष म्यं भावत् सवदेनवेषम्यमित्योपदाषः॥ ४६॥ ।विष्रतिषधाः वासमञ्जसम्। ४०॥ परस्पर विरोधाद प्यस मञ्जूस सां खंदर्शनं इन्याह विप्रतिषधे रते क्रिनिस्मि न्द्रियारि। क्रिनिइकाद्शतया क निद्ह इतारा तक निमहतः पद्यतन्माना त्योतः सर्व क्र चिन्निरायन्तः कर सामिक्ष चिद्केव वर्गायन्ति इतिप्र सिद्धरान ई श्वरकाररावा पित्रानिस्माने विरोधः नसा स्युक्तं सांख्यद्रीनम्॥४०॥ ॥महर्रीचेवसद्सवपरिमराङ्गाभ्याम्॥४२॥ २ स्र समंप्रधानवारं निराकृत्य भ्यराव्यादिकार रावारं नि गक्तें खपक्षेत्रहत्तं न्हां वीत्रकरोति मह देहियेया श्रक्तारा भ्यःश्रक्तोऽनयनीत्रयामभ्याऽराभ्योऽनयनीत्रया मरवत या चसजाती यात सजातीय मेवो त्य यते द्वीत नियमात् कथा होतना द्वेतन द्या दिता दिव नायं नियमः परमारानः चारिमाराड्लय युक्ताः नत्वराद्वस्व परिमार्गाद्वित - श्रह्मस्वान राष्ट्रधां न्य्र राह्म परिमारा

दूरानि जायतेत्र याह्नस्वा गायरिमारां यन्मह हो घी

व. स. पा. (००) अ. ५ पा. ४ परिमारारिह तं द्रशुकंता दृशे ।यात्रे भ्याद्रशुक म्योदीच परिमारा मराह्मस्व परिमारा रहितं-यगु कं एवं जित्रात्मार्याचेत्नं मित्ययीः ॥४०॥ ॥ उमययापितकमातस्तद्भावः॥ ४०॥ ३ व्य कारणदादिमतप्राम्द्रागुकाररावादं दूपयाते उ भयवात मगोहोत्स्या राषदृष्ट व शात् परमागुष् परस्परसंया गजनकं कमितानी विभा गारिक मेरा द्रगाकारिस्वमश्चित्रक्तावयविषयनंकार्य मानतिर्वितयत्व विभक्तानस्यायां च्युरार्नामं वागःकमीपशः कंमराष्ट्रजन्यन्यान्तिमत्ति चिद्मप्रगंतव्यं न्यनम्युपगमेकार्या भावा नाराष्ट्रकमेस्यान अप्रमुपरामेष्य निभिन तादिवी भवत तन्वनसम्भवति तदानीमश रारस्यात्मनः प्रयता मावान् सवमिष्वातास पिनतन्त्रनककियासमानात् उभययापिन कमे अती मियारा संयोगामानाः व्यदृष्टं नि-मिनिमितिन तदात्म समवेतं अप्रग्राममवेतं वी भय यापिनिनिर्मतंतस्याचेत्रनत्वीत् नत्वचेत्रनं प्रवर्तने प्रवर्तयाते वा इत्युक्त म्याक्त व्यद् एवत्यु ह्यसंयोगि निमित्त मित्यपिन सम्बन्ध सात्रे न प्रवाति सातत्यप्रसङ्गात् तस्मात्क भीनोमत स्पाभावा-नाराकमे नत्संयोगोदेहराकारे कार्यं किद्य एष संचीगः सवीत्मना एक देशे नवा न्यासाउपचयानुपपत्तः निर्वयवयाः सं

त. स्र ना (००) अ २ पान

योगाद्रीनाच्य त्र्यन्ते सावयवत्वप्रसङ्गात स्वाय त्रच १पि विभागार्थं नागुक्मे निमित्ताभावात्र्य वञ्च स्त्रिप्ययोग्नुपपतिः नात्रपरमा गुनां ह

त्वमा। ४०॥

ग्रमनापाभ्यपगमा ज्याम्पार्नवस्थितः॥५०॥ रवमराबार्द्धगुकंसमनतमित्रसमवायसपारितरित इतितवानुमतं तवत्रपासनि व्यतिरिक्तसमवायस्पा यतिरिक्तने वसम्बन्धन स्थितिरित्यत्यन्तमेदस्य समानत्वात तस्याच्यतिरिक्तद्रत्यन वस्यास्या दित्या इसमवायेति॥५०॥

।।नित्यमेन नभावात्।५१॥

विद्धारावः प्रवित्तस्वभावानिकाने स्वभावा उभव स्वभावान्त्रनु भयस्वभावा इति चनु धी विना वपस्रेते व्यास्त्रीनित्यमेवप्रवन्तः प्रलयाभावप्रसङ्गः हितीये सर्गाभावप्रसङ्गः, तृतीये विरुद्धत्वात् चनु चैंग्विनन्त्र्व दृष्ठादे निर्मनस्यतन्त्रत्वे वित्यसंन्ति वा ना नित्यं प्रवित्तप्रसं तोश्तं चत्वे वित्यायकत्ति प्रवन्ति सङ्ग् स्माद्यिनारावाद दृत्याह वित्यस्वेते ।।५१॥

॥ स्पादिमन्वान्विव वर्षयो द्रशानात्॥ ५२॥

हेन्बन्तरमाहरू वादी निह्यादिमन्तः परमाराचः द्वादि मनां भो निक्ननामार म्यकानित्या हो नि चे त्रीधका च- द्वानत्रम्म् स्वाहिम्द्वात्यरमाण्या म्याद्वात्य त्वविषयेयः परमकारणा पश्चार्य्व ज्ञत्व मानेत्यत्वञ्च प्रसञ्चेत्रस्य कृतद्वाते वत् यद्वित्वेक्षर्पादि महस्नु तत्स्वकारणापेश्चयास्यून्तमान्य श्चर्राति श्वात्यात्व सन्त्वपश्चस्यून्त्राति स्वस्व तन्त्वों द्वापे स्वया नजां प्रस्वस्थादिमस्य तन्त्रित्यस्य तन्त्वों द्वापे स्यया नजां प्रस्वस्थादिमस्य तन्त्रित्यस्य तन्त्रवों द्वापे स्यया नजां

॥ इसयधानहोषात्॥ ५३॥

यचागन्धरसस्यस्यश्रीगुराका स्थ्ना ए खीर संइसान्त्र षः रूपस्परीगुरान्तेनस्तनः स्ट्रमम् स्पर्शमा नगरोाना युः स्रमतम इत्येवं चन्चारि भूता च्यू प चिता प चित्रम् गानिस्यू असू इमतारत ग्यो पेतानि चलोको दृश्यन्तेत द्वत्यरमारावी युपचिता पचित ग्राः कल्प्यरभ्वा उभयपापिरोपोपरिहार्यराव उपचितापचित्रग्राण नां मृत्यूप वया दपासा गानव प्रसङ्गः, नवानतरेशा मु र्युपचयं ग्रामि अयोभवति कार्यद्व स्यार्गापचये द्रव्यायचयदर्शनात् तेषूय चित्रार्शस्त्रा नद्भीकारे परमारा ,वसाम्याययदि एके क मु सारावे त्य भ्यूप गमेने जन्माद्य स्पर्शादीना मनुपन्नव्य प्रसङ्गः बार्यगुरणनादुः,।ररागृरापृर्वकत्वात् यदिसर्वेन

TO BE THE THE THE THE THE THE THE

शः स्र ताः (ेश) अः २ पाः २ न्रिंशा स्तदा इस्विप गन्धोपलस्या पत्ति नचेतदन् भवा हर्दं तस्मादीयं न च्युराकार्शा नाद् दृत्याह उभयथिति। प्रा ॥श्रवरिग्रहाच्यात्यन्तमनवेसा॥५८॥ युक्तान्तरमाह भ्यपरि महादिति प्रधानका ररा ना हो ने दि के मन्वा दि मित्यत्का मत्वा यंशोप जीवनाय निवदः नत परमागुकारगावादों अतीकृतसी रिज्यन्तानादर शोची व

द विद्रिः विश्व विनाष्यवयव संयोगं क्षीर जन्मादिध्यो द चिहिमारिकाद्यारम्भद्यानात् आसारत्रत्तका स्वन्तम्ब नं रूखरारिकारराजादिष्नुति विरुद्धे निनत्र श्रेमो चिमिविश्वसनीयमितिवाक्यशेषः॥५४॥

॥समुदाय उभयहेनुके १ पितद प्राप्तिः ॥५५॥ ४ न्त्रः

एवमर्धवेना शिक नार्विकाही न्यू यि पन्ना प्रसङ्गान्सविना चिववीद्वारीन्द्रषय निस्मुराय द्रीत सर्ववीनाचिकास्त्र यः सबीसिन्व गदिनः विज्ञान मानास्तिन्व गदिनः सवित्र न्यवादिनःतचा सानाम्प्त भी तिक चित्तं चेत्तं बस्तु वासा भ्यन्तर भेरेन हे धार्ति भूत म्य यि वादयः भो तिकं वसु गदबी ह्यादय सुर चिनादि पर माराकेंद्र स्वर सेही कोरण स्वधावास्ते एथिन्यादि वावनसंह याने इतिमतं द्वितीयो निर्देषस्क कि स्था विज्ञान सक यो वेदना स्क न्यः संज्ञा स्क न्यः संस्कारस्कन्ध दृतिने द्याध्यातमं सर्व व्यवहारास्य दभावेन संहन्यंने इतिमतंतर्षशं पोयम्भयहे वका उभयप्रकार

CC-0, Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यायमवीत्मा जामानम्

सम्दायः अग्रहितृकः स्कन्धहेतुक म्नताहृशे ऽङ्गीकृष मारात्रदश्याः समुदायभागान् पर्यातः स्यात् समुदायि नामचेत्रम्लातः चिन्नाभिभ्यत्म स्याच समुदायाि द्वाधीनन्त्रातः न्य्रन्यस्यचास्यर स्य कस्य चिच्चेत्रनस्य भोकः प्रशास्त्रवीसंहर्ते र भावातः निरचेश्चप्रयत्युप्यमे च प्रयत्यन् परमायतः न्य्राश्चरस्य इन्यत्वान न्यत्वाभां द्वानिद्यालात् श्वरणाकन्वन निन्द्याचारत्वातः प्रयत्न नृषपत्तिरतः समुदायान् पपत्यातदाश्चयात्राक्षयात्राक्षयानाः नृषपत्तिरतः समुदायान् पपत्यातदाश्चयात्राक्षयात्राक्षयानाः

्या तथ विज्ञानस त्या मस्यद् श्रिष्ठान्य विज्ञानस्य

गइतरेतर पत्ययत्वादिति चेन्त्रेत्यत्विमान्निम तत्वात्। परे नन्नीतिरिक्तस्यसंहं नुरभावि निन्त्रविद्यासिनाद्यः पर स्परकार गामूनाः सन्ती त्रीक या त्रा मिनं धास्य निद्वतिस वैषां सीगताहीनां पतंतेषु मियोनिम तने मितिक भा वेन घरीय न्यव द निशमावते मानेत भी सिम्र उपपन्तः संचान इत्या शंका न्यू षयति इतरतर नितन इतरतर निमिन्द्रवात्,सङ्गतउपपरीत परित्रिनेमिन्यतिरिकं स्पात्नत्त्र संस्ति महिन्यविद्याहयः संद्यात स्विना न्यूल ज्यात्मनः संघात मपेसन्तेत हित्यानि मनंवाच्यम तन्वारगु भारो छोव हा ती का ना दे कि विक्री हा दिनि र क न्वयासमुदाय निमि तंनाद्गी कियते श्रय सं चातातां द्यातङ्ख्यनायनबस्यास्तु इतिचेत्तर्हि पूर्वसम्दायात्स जातीय एवसं धातः स्यात तथा चयुद्गतस्य मनु व्यदे वितयेंग्योनिमारक सिम्पमानः स्वात समाती यानि परे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मनुष्यश्वकदा चिद्धस्यादिद्वा गमनुष्या वास्यात् उभण मय्य नुभवना प्यातं न्यापि चयदणे सं द्यानः सं स्थिरो भोक्ताना स्येनित भोजा भाजाणे श्वेत्रस्तान्यम प्राचित्रीयः तथा मास्रा भाक्ता चिश्वति ममस्राणानान्यम् भीवत्रव्यम् त्याच्याचित्रं स्रिताका प्राचित्रकाला वस्यापिना भवितव्यम् त्यावस्यापित्वं स्रिताका म्युपणम निरोद्यः नं समात्सं चा तो तेन सि स्यूनी ति भानः ॥ ५५॥

॥ उत्तरात्पादेन पूर्व निराधाता। ५०॥

श्रिवाही ही ना प्रत्य त्तिमान निमित्त त्वा न सं द्वात मिहिर स्तित्व कं तद त्य तियान निमित्त न यिय सम्मन ती त्यु स्वते उत्तरित कृष्णिक त्वनारि ना दिउत्तर कृषी उत्यस्य या ने प्रवेशको निरुद्धाते इत्य द्वी कियते एवं सीत प्रवीत रक्षणा योहीत फल या ने क्यां श्रीवत्र प्रवेशको न न हे हिस्स निरुद्ध या न स्यता पूर्व कृषासा पा न श्रस्तत्वात उत्तर कृषी है हु स्व निरुद्ध या न स्यता पूर्व कृषणासा पा क्रासित्वात उत्तर कृषणाह तुत्वानु प्रयत्ते। परिति ब्वन्ता न स्वा कृषी कृषणि हित्र रितित् तथा व स्व स्व प्रत्ये वारक त्या वर्ष कृषणान्तर सम्बन्ध ब्रास्तुत्तत् कृषिक त्वा दु परामेशा प्रकारान्तर न सम्भवति तस्मा दसद्भातं हो त्वा त्वा दि स्व मा। ४०॥

॥ त्रमित्र विज्ञा परियो गात्र प्रसम्या ॥ ५०॥
त्रमहत् का महत् का वात्य सिरित विकल्पा शन्द म पति असती
तिस्वासित तव प्रित्ता विराधः वतु विधि हत् न्यू तीत्य विन वेता
उत्पद्य ले इति त्रम्पाउ परिधात सर्व सर्व तो त्यासित स्पृत्ते स्थातः
याव दु नरात्य निमा विरोधः ॥ ५०॥
विस्वारा करव प्रति हा विरोधः ॥ ५०॥

।। प्रतिसंखा ऽप्रतिसंखा निराधा प्राप्तिर निन्दि दात्।। प्रभी ्प्रियनम्मात्रामः नुद्रिमाध्यम् याद्रस्त संस्कृतं सारा कञ्चीते व पंसरमा प्रतिसंख्या निराधा गकाशञ्च त्युद्री कुर्विनि नयमव्यवस्त भूतं नि ह्यारवामिति मन्यन्ते न्यम वमानं तनानाशं परस्तात्प्रत्या खास्पति निराधद्वयम न प्रत्या त्या घते प्रतिसंखा ऽप्रशितिसंख्या निरोध यार प्रापिरसम्मनः कतः व्यविकदात्ते निरोधी सन्तानम वरो भाव जावरावा नाराः सर्व सन्ता नेषु सन्ता निना मविन्द्रेदन हतु फल भावन सन्तान विन्द्र रा सम्भना त् निर्मियः निह भागानां निरन्तया निरुषा रामा निना प्राः सम्मनीत समीनस्यासु प्रत्य मिलाना दृन्स या निन्द दर श्रीनात् दृष्टमान्यस्य विन्द्रमा न्यनापितयानुमानात् त स्मान्परिकाल्यत निरोधद्रयस्यान्य पत्तिः १५००।

॥ उमयानराषात् ॥ ६०॥ ४ स्त्रतिसंखा निरोधाना वीता या १ योद्धिविधोऽविद्योगिराधः परकाल्ये समगरिकर सम्यग्त्रामात् स्वय पेनना प्रथम निहित्न निना शास्य पमम्मनः दितीययार्गा पदश्रीन चेना प्रसंगः एवम्

यया विद्वात ॥६०॥

॥ त्राका श्रेचाविशेषात् ॥ ६१॥

यदिप निराधद्व पं अभनञ्ज नि हपारव्यं इति तन्त्र निरो धाद्रयस्पनिकपारव्यत्वं निराकृतं च्याकाशस्य निद्धा रयानं निराकरोतिन्याकाशिते पूर्वे व दूसन्व प्रतिप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

g. 甚. 刊.

॥ त्रमम्बर्गस्ति ॥ ६२॥

ञ्जापे वसर्वस्य स्वाता कता भ्यया मे उपल वित मन सर्यन्य पनि। ज्रुन भवसा रशाया रक्त हरिक त्वा हर नव त्वन प्रांचे न रात्म नो नष्टत्वात् स्मर्तरस्याणि त्वात् कषं वा न्यह मद्रा इत्स्यामिद म्पश्यामी ति चयू वात्तर दिशि न्ये क स्मिन्तस ति भवेत् यदा न्यः कतीस्यात् तदा इहं समरामिन्द्रन्या इदासीत् इत्यापतिः न्त्रह मदो इदा हा मिति दश्रेन सा र रायो रात्मान में ने ने ना श्रि को वान गळाति न नाहं रू ति द्रश्ने निर्द्धतें निर्हते एन स्वर त्रीनसमरमा सरा द्वयं सम्बन्धं सामिकाना भ्ययगमाने नात्रिकस्य नेवें सम्मवात पुरा ऽहं वा ल-प्रा संस्थ वाहं स्पि विर इति प्रत्यीप ज्ञानिराधस्म न तसार् १ मिनं प्रत्य पित्रानं वस्तु दय यहीत रेकस्या भावात् उभय साधार रोजित हा भी भावान्त एकस्य स् गाद्भया वस्यापित्ने झारि।का त्व हा निः तदेन देत स्तर्ह शंनीन मन्देश व्यान पपना, उपनव्धारित्स एवाई तत्सद्शालीत्र नेव समानति पराना हं पूर्व म द्राई सराना हि स्मरापीति द्रीना त्रमान्त्व नाग्निस्मान्त्रीह्न्। CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥नासतो ऽदृष्टत्वात्॥ ६३॥

युक्तानरमाह ना सत्र इति विन शान्त्रीं दी ना लिल्ना दूर उत्परा तिविनष्टान्सीरा द्धिनष्टा नर तिराहा हुए : क्र स्पान्न का यीत निस्तदा १ विशेषा सर्वे सर्वस्मा दुन्परे। तः न्यतं एवा क्ते नानु पमस प्रादु भी वा दि ति तस्मा द्याव हास्त म्वावीं जा दि भ्वा ५ दूर राही ना मूल न्तत्वादभावा द्वावात्यांति रिति मन्यन्तेवेनाशिकाः तत्र यराभा ना द्वान सादा न्युमान द्वानि शेखा, कार्यमच्य पान रूपमेन स्वात् न ह्युप म्ट दिन बीजामान स्य निः स्वभाव त्या विशेषान् श्राश्रश्

झारे विशेषासि यन नीजा देवाझार भीरादेन द माइ त्येवझा रता विशेषाभुपगमे। १ की नान्स्यात् निर्विशेषा भावस्यका

रगानेन शश्राश्राद्रषडू, रः स्पातं न्यु भावस्य उपादानहतु

त्व मापेन राम्भव ति न्य्रभावान तराकार्य स्पात् यदिशश्त्र द्रादापस्पात नरेनं दृश्यति कि हान्त भर्पः नित्त ने ता उत्पद्यने

इति स्वय तिज्ञा विरोधाः।।६३॥

॥ उरासी ना ना पापेने नं सिद्धिः ॥ ५४॥

यसमाबाद्वत्यत्तिसादा उदासीना ना मनीहमाना ना ना ना म कास धावितरमानस्यमुत्रमत्नात् सर्वं क्रषीवलाद रवयत् मानस्य स स्या १६ नि व्यक्तिः स्यात् स्वर्भापन जी दि नक छि इस मी ह स्याह

उदासीनीन ॥५४॥

॥ नामान उपल्यत्येः ॥ ६५॥ ५ म्

न न विज्ञाने कस्कन्धवाद एवा हिम मत सनि व हला ह देन दूपे शान स्प एव प्रमाराष्ट्रमेयं कतन्य न हार। सर्व। उप पराते सत्यपिनाह्य र्चे बुद्धाराहं विना ब्रमारणादिन्य वहारा नवतारा ता कि से नाही यो भ्यपग्रमानः किम्पर माराका द्यः तत्समूहो वा नाद्यः चर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पर स्त सी दिषु वरमागात्व प्रत्यवस्यां भासत्वा नुषयते; व्यप्तत्वस्त श्च स्पात नापि हितीय! पर मारावन्यत्वा न न्य त्वा स्वा न्द्र निहस्य तात किराज्ञानता विशेष इपियम् ज्ञानं इति विषय पस्पातः सत्रान गतविशेषम्बना नसम्भवति इतिविषय सारुव्यं ज्ञानस्या द्वीकार्य सितितासीन निष्पाकार स्पत्राने ने वा बर्द्ध त्वारा-प्र याचिकाचे सद्भावकल्यना किन्त सहोपत्मित्रा स्ट्रागद्यभेदा ज्ञानविषयपा, यथास्वीस गत् द्या मन्दा वेन गर प्रत्य या दीना मिनेवार्षेनयाहायाह्य भावस्त्यानायत्पत्यया अपीतिनी मां कर वत् ज्ञान वासनपार त्या न्यं निमित्तने मितिक भावन वैचित्यमप्यप पन्नंतसमान्य विज्ञा नातिगरे तां व स्वितिहि तीयम्बोद्धमतं द्षयति नेति नवाह्याची पत्नापः सम्मवीत उपन्यक्तासमाः कुम्भः वर इत्यादिष्रस झेरोनि सिद्धः विज्ञा न व्यक्तिरक्ता ना पत्नमा इतित्न निरंक शहना नव मुख्यम यक्ताताताति नाहिउपला विशेष स्त्रमः मुद्रां नित्रपनमते म न्यया कसमाद दि ति वृषः नहि ने नीर्यं व न्या पुत्रवदव भाम ते इतिदार हा नं यर हानिमिति विषय भेदान धीवे न झरापम्य वाश्रक्तो गे। कु द्यां भितितस्मात्तामं च या भीद सव कि हा ह्यों की त चोः पूर्वा पर में घाः स्व सम्वेद ने ने नो पक्षीता यो रिनरेनर श्राह्य दकत्वा न पप तिरतो विज्ञान भेद प्रतिज्ञाक्षां गीकत्वा दि धर्मप्रति ज्ञा विद्यो य प्र बन न्य मो स्व प्रातिज्ञा ही चेरन न्य तः प्रश्निपनत् स्व व्यतिरिक्त गाह का जम्। ६५॥

गवेधार्यान्तन स्त्रप्राचित् ॥६६॥

यह कं स्वप्रदेश हिलय स्विनेवस ने प्रत्यया साद पिद्धयाति वेदा स्वी दिति नस्वप्रादि ने ता जा यत्म त्ययः वेदास्वीतः वा ध्यत्ना वा ध्य तक्ष्यदा में में दात स्वप्नात रंजागर शामि ध्या म या महाजन समाग मा दृष्टा स्वप्नी न सन्य। छवं मिध्याज्ञ लंड दं स्ट गत्र स्वायां मिध्यारापी CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by \$3 Foundation USA

र जो दृष्ट इतिवा धात नहार्व जागरितं घरादिताने मिखादा धर्ता दिकिन सदेवदाशदि दृष्टमिति धर्मभेदा नजा गरित वाद्यं पिखा। १६६ ॥ नोभावाऽनुषलकाः ॥६७॥

यराच्या नय विज्ञानं ना मनास ना स्वय त्वन क न्याते न्वया पूर्वाप स्वारोगिक त्वा द्वय व स्थित मेव श्रू न्य ना द स्ति तीयस्तु सर्वे प्रमाराग प्रतिसिद्ध इति त न्वित कट राग्डना दरः ॥६८॥

॥ सर्वेषान्य पत्रेष्ट्र ॥ ६०॥

किश्वाय में नाह्या समय उप पत्त य परी इस ते यथायथा तथातथा प्रिकताक पत्र हि ही पति रूवं नका मध्य प पत्ति म्प १या मीतः सर्व धान पप रें! ना समय न्यु प्रदू यहत्याह सर्वच ति ॥६०॥ ॥ ने किस्म न्यसम्भ ताता । ७०॥ ६ १९००

निरसः सुगतः न्याहितः यरो निनसनः तस्मतन्द्र षय तिनेकासे किति न्याहित मते जीव न्यू जीवधाति हो यदा वो जीव क्यू तनः शरी र परि माराः सावयवः ग्रुजीवः न्यू गां मही अरादि पर्यन्तः जी वाजीव न्या सव सम्बर्ध नि जे र बन्ध मा झाः स सपदा थाः विस्तर तः। न्या प्रवित प्रने न जीना विषय कि त्या सवः इन्द्रियसम्पातः (प्रवितः) सम्बर्धातीनि सम्बर्ध नि कः (यद्या नेप मादिः) निः शे ब साजीजीत्य ने का मका थादि ति निर्वरः केशो त्यु ग्रुवत तस्ति। कारोहरणादिः क मा एके न द्या त्यादिना जन्म मर्गा सरम्य सवन्धाः जारोहरणादिः क मा एके न द्या त्यादिना जन्म मर्गा सरम्य सवन्धाः

नाश सति न्यूनोकाका श्रायनिष्टस्य जी नस्य सनतो धर्व गमनम या सः एते षु सस् मङ्गीरूप न्या यं व्यवस्थाच्य नो स्यादिस्तिस्या जासि स्पादिसिच गिस्ति व, स्पाद वक्त व्यः स्पादिसिवाव क्त य द्वा स्वान्ता स्ति चा न क व्य द्वा स्वाद स्ति च ना स्ति च न क श्रीति स्यान्द यह यद्येना नी ते वाम्याते ना प्तन, सप्त सहा रीन्यस सरी सदस हो री न्यू निर्व न नीय ता ना दी सह निर्वीच्य गरी-प्रसद नि वी न्यवा दी सदस द निवी न्यवादी नित मस्तंत्रमते मोक्तास्तिनवति सद्यादिनः प्रशे इषात्त थाचित्) न्यसीन्य तरं एव मुत्तरे षाम्य श्रेव यु उत्तराशि ततः सर्वे नोत्तरम्पति पयन्ते न्यतोस्य समानामाङ्गात सम्भड़ी न्यायस्य सन्गाङ्गीवादिसम् पदाचीनां मिह्नीक इतर रामिति प्राप्त -पाइ निति सप्त भड़ी प्रन्यायर न सकति न्धि मिंगि यगपत्सद्सत्वादिविद्यस्थमस्यावेशासम्मनान् श्रीतो षावत् नचनीवस्पयावयवत्वं न्यानित्यत्वा यते रिष्टायनीकस्य मो सः युरु बार्यः त्यात् तस्मान्याया ए धासन सस मङ्ग्रामनी मिस्सिसिहः॥७०॥

॥ एवं मा साडका स्मिमा ७१॥

यन पद्भन संज्ञ भ्यो इराष्ट्रण संद्या ता साद प्यशा काररामाद निरा कर रोजि निराकृतं स्वाजी वस्या का त्रक्तं यादन न प्रारीट चरिमारा प्रारे त न स्य निराकरोति स्वन्द्र ति जी निर्मा प्रारोट परिमाणात्व द क स्तो दसर्व गतः परिच्छिन् स्था ती न्यु तो मदम म परिमाणात्व का त दाहा दिव द नि द्राद्व प्रसङ्गः स्व स्थावक मे व प्रात् मन म परि णियो ति का दि परि मारणात् स्व का नमन्य पिकोमार चोवन १

।।तजपर्धा पाद व्य विरोधो विकारादि थाः ॥०२॥

॥ न्यन्या स्थात स्था भया नित्या त्वा द्विशा खः ॥ [] । व्यापिया स्था साम स्था पिनः जीन परिमारास्य नित्यत्व मिळ्यते हो ते द्वत्य स्था पिन्या स्था मध्य में परिमारा पोर पिनित्यत्व प्रसं द्वार वित्या प्रमुख मध्य में परिमारा तेव स्थातः नो प्रचिता पिन प्राप्त व परिमारातेव स्थातः नो प्रचिता पिन त प्रारी राज्य परिमारा तेव स्थातः नो प्रचिता पिन त प्रारी राज्य परिमारा हो स्था सहित ॥ १०३॥

॥यत्यरसामञ्जस्यात्॥७४॥ ७ 🚿

षक्तिश्वप्रतिशादृ ष्टानान्से धादित्यादिना उपादानान्त् मानम् तदशहमाना स्तार्किक श्रेवाद्या के वन्नं निमिन्तिना मानं पन्यन्ते तदृष्याति तन्मतिकार्यकारसा योग विधितः खानाः पञ्च पदार्थाः पृथ्यपतिनेश्वरेशा पश्चपाश्चिमाञ्चायोप दिष्टा पशु पति रिश्वरे निमिन्त पानं इ तित्रित्रोत्त दे पृत्य एति पत्य रिश्वर स्य पृथा न पुरुष पोटिश्वातः लेन का रणात्वं तन्त्र - प्रसामञ्च स्यात् श्वम स्वात्तानम् भागनं भेद्रान्निद्धातः इश्वरस्य रागदेषादि दा षप्रसक्ते रिनेश्वरत्यापनाः क्रस्मापेश्वित्वे परस्य राष्ट्रपद्वाषं प्रसङ्गः न्यनादित्वरन्य परम्परं पत्ते स्तस्माद्रपादानं निमित्तन्त्रम्।

।सिम्बन्धान्ययनेवा।०५।

न्त्रसामञ्जस्यान्तरमाह सम्बन्धोति न प्रकृति प्रस्थाति रिक्ते देववरो विना मानन्दं देखिता सन्तरं योगः प्रधान पुरुषत्रवरागं निर्वयवन्वात्मर्व गतानान्यनसमवायः प्राध्याद्विभागानिस्प्राणिर कार्यकार्या भागमा मिद्धालेन सम्बन्धान्तरामिद्धे : अस्मानन्त तादात्म्य मेन ख्रुतिननात् तन नुरुषान्वलनम्बार्षम् मनसर्वेन मृतिवलात् न्यामित सर्वज्ञितिहः सर्वज्ञानयान्वागमासे दि रिज्यन्यान्यास्यात् तस्मान्सांख्ययागवादीना मीखा क लयना एवं मन्यास्विय वे दवा सक लयना स असामद्वास्यं मोजनी

यम इत्यार सम्बन्दा ति। छिए॥ ।। श्रिषाना नुपयने स्ना १०६॥

किञ्चतार्किककान्यतं देशवरस्यष्य तेकत्वं स्ट्राहीनां कुम्भकारस्यन नम्मानति नयप्रत्यक्तं निर्षं प्रधानं -प्रिष्टियम सम्यवति मदादिने नक्तापा त्रत्या हन्यिष्टानाति। १०६॥

।)कररावचान्त्रभागारिभ्यः।। ७०।।

नन्यवाकरता ग्रामञ्च झुरादि (शत्यसो स्वादिहीन श्च प्रकाणि शितारन म्प्रधान मय्य धि ष्ठास्यतीति चेन्त पुरुषस्य भोगादि द्रशीनात् नचे प्रनरस्य भो गाद्या इतान प्रधाना धिष्ठा तर ज्यमित्याह कर सोति।। वेगा

।। ञ्चनावत्वमसर्वज्ञतावा।। ७ =।।

इतस्तार्किको तर् देशवरकत्यनं नसमाक न्यननम् धानमनना भ्रमुत्या पियोधिनाः, त्वयाद्गीकीयने तनसर्वज्ञेने श्वरण यह वादीना म्यातमन स्रयत्तावरिक्रियतः मवानासः प्रधान यह वारणाम्परिक भावार्यम् त्यत्व प्रसङ्गः यद्वित्ताक इयनायरिहि लं धयादिन दन्तवत् हु एम न दि तोषः इत्रवरस्य म वैज्ञतान्य धत्तेः तस्माद्यङ्गतस्ताविक समयङ्ग्याह अन्तवत्वीते॥ वद्या ॥ उत्यत्यसमागत्॥ ७०० ८३७

य बाम्पुन ई व्वर प्रकृतिरिध ष्टाताचित्य म यात्मकं कारराम् तेषां मतन्द्रव याति उत्यतीति न न्विद्माभन नि मिना गादा न त्वं पिद्रान्ते यानु म तं अ तः कथंदूषरापितिन उभयस्यन पद्षराणि पत्वरपि पंशानरद् षरागियत्वातः भागवता ईश्वरकारसावादिनः वाम्देवो नि स्त्रतस्य पर मात्माएव चनुर्धाभूत्वा वासदेव व्यूहः परमात्मा संकर्षशाच्यूहा जीनः युद्य म्रानाम मनः अभिहद्वा ५ हं कार। तत्रना सुद्वा परा पक्रिते -

सङ्ग्रह्मिता इति मानवन्त मिन्या स्वाध्याय पोने ने बी शतमि द्वा सीरा क्रिज्ञो भगवन्त मेव प्रतिपद्यते इति वद नि तदेकस्या ने कद्या न्यू हस्थित इत्या दि रस्त यन्त्वा सदेवात्सङ्ग्रेष एए जीवत् उत्पद्धते ततः प्रद्यसः प्रश्च स्वादनि हृद्ध इति तद्द्यते न जीनो त्य नि । व्य नि त्यत्व प्रसङ्गः। ते तत्या च भगवत्या प्रिमा द्वा ने वस्यातः कारगा प्राप्ती कार्यस्य प्रवित्वय प्रसङ्गा ज्ञीवस्या नित्यत्वं च श्वत्यादि प्रति बिद्ध स्व तस्माने वस् ॥ ६०॥

नित्रीनात्मर्तः, करणा मृत्यद्यमानं र ष्टं श्वतं वा निहि हिराक तः, कुगा युत्पत्ति हे ष्टाश्वताना द्रात्याह नि च ति ॥ २०॥ ॥ विज्ञाना दि धावेगा नद्र प्रतिषेदाः॥ २१॥

तन्ते ते सद्गु, परणाद्योभीना कि न्विद्यस्थ एते इत्युक्ते वि प्रका सन्तरेश देश माह विद्याना दी ति धि दि भिन्ना एते तुन्यद्य मारागृत दीनके श्वरक्ष न्याना वे पर्योग्ध भगवाने वे की नायु देवः परमार्थ तत्वि मिति विरोध स्त्रु धि दि चत्वा रो व्यू हा स्तृ व्य ध सीरागः ति दि पूर्वोक्त तद्व स्पष्टको न्यत्यसम्भवः नच चतुरागि मेन भगवद्युह त्व वहा दि स्तम्ब घ धेन्त स्वनातो भगवद्युह त्वे तन्त्र तु दक्तस्या पार्थक त्वात् ॥ २॥

॥ विप्रतिषेधान्त्र॥ च्रा।

विद्यतिषधण्तान दृश्यति रागारान्य कल्यान या जाने प्रवर्ध वा क्तिन नवीधितें जां पि गुगाराः न्यालमान रावे ते भगनेतानाम् देवाः स्वाइत्यादि र शे नाच्य न द्विह्द श्रुचन र्ष्य ने दे ख्र यर्थ सेपोऽ न न्द्वा श्रा रिष्ड न्य इद स्माम बत श्रास्त्र स श्रीतवा नित्यादि वेद निन्दा दश्री नात तस्मादसङ्गते बाकु स्ट ि ।। ट्या इनिन्नी ब्रह्मस्त्र ता त्य ये निवर शा दि ती या ध्या घरम दि ती या या श्रा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्रः सः ताः (२०५) उत्तर

।। निवयदध्नतः।। च्रा।

वदान्त्यान्त्र तन्नीमन्तक्र मेरागित्यनिः कचिदाकाश्र क्रमेराकाचिद्वायुक मिराकिनिन्नः क्रमेरो ति विरुद्ध उत्पन्ति क्रमः स्त्रूयने रूवन्त्रीन प्राराणि नां क्रमादिद्वारको निप्रतिषध उपन्यन्ते न्यनोऽ विरुद्धाय परसन्द भीः प्रपश्चाति न नियदिति।। च्ह्र॥

97.3

1979.

॥ अस्तिन्॥ च्छा।

तनादान काष्रस्थात्यत्ति रस्ति नने ति चिन्त्यतेन नियदिति उत्य नियक्तरशा श्रवशामानाशस्य नापनामते सदेवसाम्यद् मयन्यासीदित्य पक्रम्य तनेनोऽस्ट नते तिन्नयाशामिन तेनोऽनिना श्रवसानां श्रवशात् ना काशोत्यति रितियासे न्याह न्यस्तीति न शब्दो ने न्यचीः श्रुत्यन्तरस्य मंज्ञान मिन्युपक्रस्य न्यात्मन न्याका श्राः सम्भूतः इन्यादिश्वतरस्ये वोत्यतिः।। ७४॥

गमिरायसास्यमाना । = प्रा

नन्परस्पट्यति विरोधानाकाशस्योत्यति। सम्मनि इतिविषति वेधा दितिष्ठासेक द्वि दाहगोशीति समग्रीयकारणादीना मध्नन सामत् सम्भनोगोराः न्यस्तीत्यकीकः न्याकाशंक्र वि तिनत् ॥ च्यू॥ ॥ प्रान्य च्या॥ च्द्र॥

स एव स्वार्क उप शम्मक माह प्रान्त ति वायुश्चान रिसर्चे तद स्ट तिमिति प्रान्त दिपे ना त्यति र्घ रेखे त्य थे। ॥ ट्या ॥ स्यान्वेक स्य बुक्ष शन्द वत् ॥ ट्या

नमु तेजाः प्रभाति षु मुख्यः सम्भवः क्यं न्याकात्रो जीशा इ विचेन्ह्या ह स्पाच्चे ति यचे क स्वापिन हायास्य ते पो ब्रह्म न्याकी अवन्यादिष् जीशाः न्यानन्दे मुख्याः तद्व दाकान्त्रा त्राच्दो पीत्यर्थः ॥ न्ह्या

॥प्रतिज्ञाहानिर्यतिरेकान्क्देभाः॥ ==॥

क चिन्नतंद् षिय ति त्म मखात्य ति मुपपादयति प्रति जेते वेनाम्न तं क्षुत्र स्मवत्यक विज्ञाने न सर्व विज्ञान प्रतिज्ञाहीयेत तथा सत्यन पपत्ना स्यात् यदि निन्यं स्यात्तदा कारशात्म कत्वा देक विज्ञान प्र तिज्ञाही निष्ठाव्य स्पन्ने वंकार्य मातं ब्रह्मशाः प्रदर्शा व्यति का प्रदर्शन

शक्याः हत्तात्यिति सर्व द्वा दि द्वं सर्व पद्यमोत्मा ब्रह्मे नेद्रमः न्य मतं पुरस्तादि त्यादि स्वः ते अञ्चादि व ते अञ्चल मे वाकाशस्या तही यं स्वाति स्वे के प्रवाद प्रवाद प्रवाद स्व में विद्या देश प्रवाद प्

॥याविद्वनारं न विभागो लोकवत्।।=भी

यां प्राव्यमानकृताप्राद्धाः निव्यत्यर्थाताता ॥ वि॥ गञ्जसम्भवस्त्रसतो इनुपवतः ।। विशा

नन्वनुषत्रभामा (भूसमान्यमाना) त्य निकस्पाकाशादे सन्य ति स्तरिब्रह्मरोगिर प्रत्यितिर स्वित्याशंक्याह न्यसम्भवास्त्विति स मानंब्रस्न नतस्यस्नमानादेवात्यन्तिः न्यसत्यतिशयेष्वकृति विकृति भागानुषयत्ते, निह विशेषामा सामान्यात्मति। म सामान्यादिय टार्पा विशेषाः सकारर्शं कर सा दिषा दिषो न चारणक सिन्नानितान बाधियङ् तिस्रातिश्च नचमू ल प्रकृतेस्तु दुन्य राते सर्वमूलप्रकृतरेवन

वस्ताताता ॥०१॥

गतेजोऽतस्त्र याह्याह् ॥ ब्रिग

ननु हान्दे जिस्तु मक्रम्यन नेजो १ स्त्रते निस्ने सेजसः सन्म् नन्तेने तिरीय गणुमूलत्व मिन सन्दे हु प्याह तेन इति अतोब हारा। सदे व त्युपक्रम्य तत्ते नो इस्ट नते तिश्चता सर्व विज्ञान प्रतिज्ञामाः सर्वस्य ब्रह्म स्वभावते उपपत्तः र तस्मा भाषाते प्राणा मनः सर्वे न्द्रियाणिने त्यादीसर्वस्वावित्रावया श्रह्मजन्यत्वाय देशात् यत पस्तस्वदं सर्व मस्य जात यदिदं कि श्रेति जिनेश मधनरगात वाया रिमिरित त पार म्यूर्यशाप्य पन्नंनापेस द्वानापुभाना पन्नं ब्रह्मतेनोऽस जतोतेकत्यानात् तस्याः यसंतस्याः दिध इतिनत् तदात्मान स्वयम कुरुति विका शत्मना वस्या नं श्रह्मण उपयस्ते भवनित माना भू नोनां प्रतर्व प्य विचा र्ति भगव र लेस् एते नाक्तपना दिन्यभूतयात्यात्याताः सदं श्यत्य मान्तस्यायभ्रातात् भाव्यवधा नमपि पंपरि। नम् ॥०२॥

॥ अपायः ॥ ज्या

अवाम वितद पोइस्ट जत असराव इति श्रुतिनी मूलेसन्देह इत्याह न्यापद्राते न्यतस्त्याद्याहत्यन्यतते ॥द्या

॥ एथि व्य हिन्तारस्य वा या नारियः ॥ विदेश

ताञ्चापः जुन्तमस्टनति सुनैतनान्तं किं खेद न वो द्यारियां उत य चिळादितत्रा न्यं शब्दी ब्रीह्या हिष् नोके व द न प्रत्ययात् यस्माहरू

क चवर्षित तद्वम् पिष्ठ मन्त्र मावती ति कि हि सारहात्व भूवाणा द्रीह्यादि वित्रास गाह ए सिनी ति कि विवेच कृतः, तत्ते ने उत्त मत्त तद्या ध्यनते तिमहा भूता चिकारात् यत्कृ स्यान्तर न्त्रस्यति द्र पाधतः महिनी ह्याद नादिक स्रामिन न्यद् भ्यः प स्विति स्वानित्र व्यापतः त्रिकी ह्याद नादिक स्रामिन न्यद् भ्यः प स्विति स्वानित्र व्यापतः स्वित्र ह्याद स्वित्र ।। विना ।। तदीम स्वानादेव नृतिस्त्र इत्सामिन ।। विना

कि स्विपराहीनि भूतानि स्वयमन स्वतन्तारि। विकारा न्यनिन कि स्वात्या पर मे प्रवट एकति सं शये - प्राक्ता प्राह्मा हाण्डारिति स्वातन्त्र्य स्वत्राति पदाद रे ने तिषासे- प्राप्त तद भीति दृश्व रण वतत्त्र तमना व स्थित मीम ध्या मन स्टन नि लिद्धात्त एः ए चिन्या नि, छन् यः ए चिनो मन्तरे ए मध्य विनो ने दे पस्य ए चिने शेरी रम् यः पृचिनो मन्तरे एमय ती त्यादि साध्य स्वारामिन भूतानां प्रवटित दृशीनात्त नान्यो तो स्ति दृष्ट त्यादितदात्मानं स्वय मनुरु ते ति रृशीनान्त्र ॥ चिर्वा ॥ विषयीयेण तु क्रमोडत उपायत्त्र ना चिद्वा

न प्राच्या योह प्रमाणिक प्रेशान नित्र महोती ने ना निय बात्। वि गन्य नरा विद्यान मनसो के प्रेशान नित्र पा रिशान रव म्वाय न्यों ति राष्ट्र एतस्मा जना यते प्राची प्राची नित्र पा रिशान रव म्वाय न्यों ति राष्ट्र वि चित्री विश्वस्प का रिशोनित चुने। स्व पूर्वी ने ते स्पत्ति प्रकाय के स

"दु,प्रसद्दें, भू ताना मिति प्राप्तिन्याहु - प्रनार नियहो न्द्र यादी नि करणानि मोतिकानिना उभयचा पियूनी करानेत्यति प्रनायक्रमः न तयारक्रमा न्य्र भोतिक न्ले प्यतिष्य न्य्र नम र्या हिसी म्य मना आणा मय। प्रारा। तेजा मधी वाक् रूत्यादितदाभूतत्वाविश्रषात भिला व्यपदेशो बाह्य साचरिवाजक न्या वनाती विवर्ष ये साक्रमो नेप पराते श्राह्मरा। परिज्ञान कन्यांच न यसमी तिकानि तथा विनिवेश या प्रधामं करर सामि न तो भूता नि न्या दो भूता नितनः करसानि मयापि सत्यगात्पति प्रन्तेया तस्मान्त पूर्वोक्त भूतोत्मित्तयक ममद्रः । । है।

मभद्भः १९७॥ ।। वरा चर्या पाष्ट्रा स्थान स्त्रा स्थान स्त्रा व स्त् देवदत्ती जाती मदत द्वित व्ययदेशात् जातकमीदिसंस्का टिविशाना क्य स्वादुत्यति प्रत्य योजीनस्व त्याश्रद्धाया माह नराचरिति नजीन म्लान्य नि प्रतिरामु वि ना त्रि निकी ने शरीरानार गते छा निष् प्राप्तिपरिहा राची निधियति वेथो न्यन ची की स्वातां यन भाजीनापतंनान किलाई सयते नजीने सियते लोकिकी जनमा दिकायदेशी नरा नर न्यपास्यः स्वानर नद्भानिषयी भाकतिन द्राव भावित्वात शरीर पादभी विनाशयो जीनस्य तीन्यवहारा न तोत्रारीर क्लिना नहिद्यारी सदन्यन नौजी वस्य न्यय म्युक्लो नायमाना शरीरमीयसम्बस्माना सउन्क्रामन म्रियमारा इति आतक मी दिक मिपिदेह प्रार्भा वा वहाम देहा स्प्रोत्य ला नुत्यत्तिप्रत्न यो नीन स्पने त्यतान इनो न्यते उत्तरन विषदादिवत् यरात्मन् जीवात्मति विंवार्यते ॥ वि।।

शनात्मा ऽत्र्वते नित्यत्वाच्य ताभ्यः।। ठीते १९३५। जीवः शरीरिन्द्रय पञ्जराध्यक्षः कमेषान्यभोती सवियदादि वत् वरमारुत्यराते यथाग्रीविस्फ्रीलङ्गार्त्यादिद्शीनात् ञ्जयहत्या प्यत्वादि धर्मकात्य त्यात्मनो भि जड्नादस्य विकार सिद्धा विकारत्वादेवास्यनमा दिइति शासे न्याह

90

व. स. म. (१९०) अन्त या- इ

न्ति ने ने ने उत्पद्धते न्युष्यते , विस्कृति इत न्दू न रो। विताम्या ने नी में स्टिपते न्युने ने नी ने नात्म ना न प्र विश्व नामरूपे न्युनो नित्यः श्राञ्चतो प्रयम्परा रा। तजायते स्टियते र त्या दि भ्वा नित्यत्ना न भारसात्म चकारा दज्यत्नं ग्राष्ट्राम् ॥ विता

॥ ज्ञाडतस्वााश्वना १२३न

दितकस्वाभास्य ॥१००॥ स्यक्तेश्च । क्रिकान्स मामती नाम्। ११०१॥

विषयाभावेत्रानान्यपते द्वीतेयुक्तान्तरमाह्यक्रेद्वीते॥१०१॥ ॥उत्क्रान्तिमात्या जतीनाम्।।१०२॥ विद्वा

इदानी श्रीनाडण परिमारा ; उत्तम द्यम , महान्य नि चिना तम प्रारी रात्सम काम तेमित अन्द्रा नि स्व गाति चन्द्र मसंस्व ते गढ्नीति गते , तस्मात्मेका त्युन क्षेते नि इ इया गति श्री स्व नराति यरिक्टिना , तम सस्य स्यारे सारास्य न्यार्ट्स निरासे निरस

त्वादर्णरात्मे ति-प्राष्ट्रह्मते उत्कानीरीते ॥१०२॥

।। स्वात्म माना सर्यो। १९०३॥

नष्ट्राणीर्म द्यादिना शुक्तमादाय प्रनरितीति स्वास्म नेव उत्तरियाः गमनागमनयो सत्वात् गम धातोकर्दस्य द्वियत्वात् नप्रव्ययुग्तमधीत्याह स्वासमेति ॥१०३॥

वा स् ता. (१९१) अ. २ पा ३ ॥नागुरतन्द्वते रिनियन्त्रतराधिकाणन्।। १०४॥

मध्ये स्एव महानान्यात्मीते अतक्रतेः ध्रमान्व विषयेतम्ह त्वस्तेनीमान्व-मितिसमाधान मार्शन्य दूषयति नीमा रितिनेतत् दूतरस्य गरीत्मनः अधि कारान्त्र जीवस्पारमन्वितिरोधाः नचयायाम्ब्रिमान स्यप्रामे बिति क्रीरीर स्व महत्व परिमारमञ्जनितिर ष्टः श्रास्त्र हृष्ट्या वामदेववत् निर्द्शान् तस्मा जीवि दर्गाः ॥१०४०

गरनशन्त्र न्याना भ्याञ्च ११०५

ष्ट्रणाहातमाने तसाने दितव्य द्वीत साझात् श्राते । वात्मा यश्रात भागस्यश्रा तथा क त्थितस्य न भागा जीना स वितय द्वीत न्याराय माना द्यावरा पि दृष्ट द्वीते चान्मानात न्युराज्ञ मिन्साह प्राव्हे ति ॥न्यविरोध स्वान्द्रनवत्।।१०५॥

नन्त्रशृति एकदेशस्पस्पं सकल देह गतो पलीना विस्हा प या गङ्गा ह्रद निम्धानां सर्वोङ्गा श्रीत्यस्प निराधे परितापस्प-नोप लब्धे विरोधा इत्यम्बास उत्तरस्पति न्द्राविरोध द्रोते प्रशानन्द्रन वि म्डः प्रारोदेक देश सम्बद्धीय सकल देह माह्याद्यति तद्धत् न्द्रातमाणि सर्वनी पलान्धं करियतीति न विरोधाः ॥१०६॥

॥ न्यास्य ति वे शे व्यादिति च नाम्य प्रमास् दिहि १९००॥ तद्युक्त निर्माण इत्युक्तम ने हु शान्त वे शम्यातः च न्द्र नस्य त्ये कदेशस्य वे वे वस्य न्द्र प्रयति न्यातम ने कदेशस्य वि तत् वस्य न्द्र प्रयति न्यातम ने कदेशस्य वि तत् हिता श्रां का माह न्यवस्थिनी ति न्यातम ने प्रयत्य स्थानं हितते व न्यातमा प्राण्य ह्यान्य जीति गिति स्थाति य न्यातमा प्राण्य ह्यान्य जीति गिति स्थाति य न्यातमा प्राण्य ह्यान्य जीति भिति स्थाति य न्यातमा प्राण्य ह्यान्य जीति स्थाति य न्यातमा प्राण्य स्थान्य न्यात्मा प्राण्य ह्यान्य स्थानि । १९००॥

एगाद्वाताकवत् ॥१००॥

नन्न अस्तर्य सावयंत्रज्ञात् स्ट्राशानां विसर्वशा नाणे सर्वेद्र व्या भित्ने यशा मारा ध्रीपादि एकद्रास्य मचि सकत्र है वर्गते यभादिकाथे द्रव्य द्रुरोति तद्भित्र कस्यापि जीवः सर्वेश्वरी नेतन्य श्रा व्यासं करियाति वेतन्यस्य श्रात्वा नहि श्राणाशी व्यातरक्राणा न्यत्र वर्गित सिष्ट समान द्रव्यनश्राः तस्मान्त्री स्थारणा त्यत्र वर्गति सिष्ट समान द्रव्यनश्राः तस्मान्त्री

॥व्यतिरका गन्यवत् ॥१००॥ महा पूर्व वद्दी समायते व्यतिरकेति सपाश्रामाणि जन्यस्य कुम्म व्यति रकेता वतिः अप्रामेव्यपिक्षुमेष् त इन्यो पत्नव्ये रच वर्गा रापि चेतव्य गुगाव्यतिरकः॥१००॥ ॥तथाच दश्रीयति ॥१९०॥

हृद्यायतम्बं भ्वागुत्वद्यं भ्वात्मना भिधीयते न स्पेनात्नाम भ्वंभ्या नखाम्य इतिने नन्त्रेम्यान समस्त्रशरीरन्यापित्वं च द्त्रीयतिनण नद्वीयतीति ॥११०॥

॥मृष्युपद्यात्॥१११॥

प्रमुखा शरीर मारुद्धोते च न्यात्मनः प्रमुखायाद्ध करीकरण भावेन च ब्यु पदेशा क्रेनिय शरोतिनास्य शरीर व्याणिता न्यास्वते तदेषाम्बा गामा स्निज्ञानेन विज्ञान भादायेति कर्तुः शहरततः च च म निज्ञानेण देशः एतमि प्रापं उपास्त्वपति च च मुच देशेति तस्माद्णुग्रसाणिणः। "महुशासारत्वानु मह्य परेशः प्राज्ञवत् ॥११२॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

थ, स् ता. ८११३) अने, २ वा. ३

127

॥ यावदात्म भाविद्वा न्वनदाय सद्शेनात्।।१९३॥ नन्याद्या प्रयुक्त म्याद्वं यहि तदा गुद्धात्मनाः संघो भागसान न्याग्रयक मितिन हि नियोगे तस्यात्नस्यत्वा इसत्व मसंसारि त्म इसा दत उत्तर यति यानिदति वूर्वो कं न शहिसंयो ग स्ययावदात्मभावित्वात् वावदयं संसारि तावद्यव्यद्धिसंवा गः परमार्थनः नास्य संसारित्वं जीवन्वं न किला न द्वापाधिकान्य तं स्वरं पन्तु ब्रह्मेव मान्याता मित द ए नान्याता मित्रधा ते ति न्यहम्ब ह्मास्म तत्वपासे इत्यादिश्व तिराते भ्यः कथायेत द्वागयते तस्त्री नार्त्त या भित्र युट् यत्वात् चायरिव्यान ययः प्रात्ते बहुयन ज्योतिः ध्वायतीव त्नलापती ने त्यादिण हा दिमयत्वात्र हो तदुरा सारत्वमेव घयास्त्री मणाऽयम्ब्रमान द्राते किला मिरवा ज्ञानपुरः सट एव व द्युपारिय सम्बन्दाः विष्या ज्ञानस्य य स्वा तम द्र्यानेनायाद्रीत न्यतायानत्तं ज्ञानं मात्यनं तान्द्रसंसात न नवप्रित मेनिनिद्वाति म्यत्यमित्ना नान्यः वन्यत्यादिद्वीयाना ११११। <u>।।पुंस्ता दिनत्वस्य संतारीमन्यत्ति चाजातः ।।१९६॥</u>

नम् मुषुप्रियुत्तययो जीत्मनी उद्गिसम्बन्दाः सनासा भ्यसम्बन्ताम विति द्रत्यादिना सर्वे विकासाराणं लयद्श्री नात्-कर्य यावञ्जीव पानित्नं निद्ध सम्बन्धस्य तेनारु पुंस्तादिनदिनि प्रयापुंस्तादेन निवान्ये इषिनी जात्ममा विद्यमा नाज्येवा नुपल व्यमामा न्यावे रामानवद्गिष्तानियोननीदिखा विभेन नित ना विरामाना स्यत्य यानो बंबारी नामिषतद्वपत्तियमञ्जात् एवं वृद्धि सम्बन्दोरिष या नारा मास्य प्राप्ति प्रतय यो ; सन् यवो ध प्रसव यो राविभीव ति न ह्याक सिमक्री करवा प्यत्य तिरति वसंग्य सिनसम्प अनि डः स्रितसम्प्रयामह द्वाने तहह व्याद्यागार्महावा नराहा नेन्याह तस्माय त्सिड् येत शा वतात्म भावीत्रायका इति । १९९६॥

णित्यापम्या प्रमुख्य विष्णिक्ष के स्वा प्रमान के स्वा प्रदेश मिल्य प्रमुख्य के स्व के

। कतीशास्त्राचिन्तातः ॥११६॥ १ द्वा । तदुता पाष्टिका स्वान्वेडिव समी इत्याहं कतीते न्युयन्त्रीवः कती नस्यार यनेत स्यान् सह भात इत्यादि विस्पेत पि सार्वुका भवन्तिन्यन्यपाड नचीका स्व स्युः स्वं हि इसा स्वाता मन्तित्यारि॥१॥ ॥विहारोषदेशातः ॥१९६॥

जीवप्रक्रियायां सन्ध्यस्यानं सई यते उपता काम भितिस्न शरीरे यथा कामं परिवर्तते ज्युन्मीपे जीवस्यकरित इत्पेहिन्होती ॥उपादानात् ॥१९०॥

प्राराणनां विज्ञाननं विज्ञानमा दाये त्युपादानं प्यवसाहित्सक र्द्धत्वं इन्याह उपादाने ति ॥१९=॥

गन्यपदशान्न किपायां तन निर्देशनिषययः ॥१९९॥ कर्तन्यसम्बद्धारमाहन्यपदेशे तियता ने दिकाकिपासन त्र स्ता (१९५) अ २ वा ३ त्र तं व्यव दिश्यत विद्यानं यदं तन्ते कमीणित्नते १० विद्यानं यदं तन्ते कमीणित्नते १० विद्यानं यदं तन्ते कमीणित्नते १० विद्यानं कि देशा नव् हैं। स्वेशकी कमा निर्माति जीवस्थानायं निर्देश निव्यान्यः स्वात् यथा करणात्व निवस्थानामा मिन्द्राने मिर्देश विषययः स्थात् यथा करणात्व निवस्थानाथाना मिन्द्राने में विद्यान माद्योति तथा हाणिस्पात् इहनुतन्ते १ तिकर्त्या माना हिकरणात्व व

।।उपनिद्युवद्नियंस,।भ्रे २०१

परितृ दियाते एक्ता नावः कर्ता स्यात् स्वतः सन् प्रियं हितं वा यात्मना नियमेन सम्पाद्येत्न विषरीतं तथासम्पाद्य कृपन् भवते न न स्वतः अस्पृष्ट् श्रीय कित्रि विषयेने प्रयादेत्न ने तर्मा उपनिद्धा दिति घषाऽ मात्मा पन्न द्वि म्याति स्वतः क्यो प्रानियंगेने स्मानेस्त्रो पन्मन्ते एव मानेपंगेनेन्द्र स्मानेस्त्रम्याद्धियातिन न्या गन्नियादि तिहे त्नां व्ययस्त्रीह्योपन स्त्री स्वातः क्यं ने विषयक न्या मानेहे न्वेषस्त्रात् बुद्धो स्वातः क्यं मन स्वे तन्ययात्रातः किञ्चारि कियायाम् ये द्रशकानि पित्ताय विद्यतात सहकारि विष्ठे स्वान्ति स्वान्ति कियायाम् परित्रात्वि विद्यते ॥ पर्णाः

यदि वृद्धिरेन कर्नी तदा कर्रतन कर्यात्न विषयपाद्यातः कर्यात्नं होचेत कर्रतनं नसात् तपाच यंज्ञा सान नेद्यस्यान्तनस्तु भेदाकरणाः भिन्नस्वकर्तत्वाङ्गीकारात् इत्याहश्चाति ॥ १२१॥ ॥समाध्य भागान्न ॥ १२२॥

यो विज्ञो व निषद प्रति पति प्रयोजनः समाधि हकः न्यानमाना ग्रारे ६ ष्टन्यः भ्रोतन्यो निष्ट्या सितन्य ॐ द्रत्येन स्यापय न्यानमान मित्यादि सोपिकर्तत्वे सत्येनो पपदाते द्रत्याह समाधीति ॥ १२२॥ ॥ यथा जनभा भ य या॥ १२३॥ विश्व अने । यत्क त्र्रत्व नतदेन प्राास्त्रा र्थन्ना दिहेत् भिः स्वाभा निक्ष्मना

पानि प्रयुक्तं इत्यत्राह् ययाचेति स्वाभाविकत्वे ६ विमेश्नि प्रसङ्गः त्र त्र रिवो खायांत् साधुन विधानान्मा सङ्गति तन्त्रसाधना पन्तस्या वित्य त्वात्त किन्द्रीयुद्ध मुक्तात्म मृतिषत्यामा आकृत्वति विवेतुहुप्

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वा स् ता (११६) अन्य या ३
परात प्रति रिप ध्यापतीन त्रात्मायतीने ति यन त्वस्य सर्वमाः
सेनाभू त्रात्मेन के स्वश्चेपदित्यादिना कर्रदे लगा दि निषधात स्के
नकार स्वर्थः यथात लोके तथा नाश्चिर कर राग्योपद्देश दुःखी भ वित विष्ठकः नाश्चि दिः स्वश्चेह स्वासः स्वस्था भनति तथा मा द्वा वस्यायां यातं निद्या वध्य केन्नः सुखी भनति एतेन निहा रायादाने वास्ति विक्र परिहते ॥१२३॥

भाषा धिकं करित्व मिण किं ईश्वर मनचे सं उत्तर्र श्वरा वर्स्त न प्र मोजना भाग निर वेस स्पेन का रका नार सर कृतस्य कृष्णि न त्र जिन्तूनां धमी धर्म महकार राग ने बम्य ने की तप नार सात्रीर ति प्रास्त्री न्या ह परा ति ति व की: पूर्वन ने जी नान स्थापां व्यक्ति द श्रिंग सित मिरा ज्यस्य स्तृतः कमा ध्यस्मात् सास्त्रा चेन यित् रिश्ला सर्ग ज्या कर्र हन मोर्क्त न रूप मं सारस्य मिनिस स्न र्णु शहरे तु केने न वित्ता ने माझ भिद्दि भीनित तृत् स्तृतेः एष हा नासाध्य कर्म कार यित्र मं मो नो नी बने य ज्या नान मन्तरा धमपती न्यता। १९४६

मोनीते प्राप्त न्याह न्यंत्राङ्गीत न्यंदाङ्गांत्राः निर्वयवन्यान् छ । १९०० । स्यांत्राल्य नते न सम्मानीतिकृताः नानान्यपदेशात् सोन्वेष्ट्यः मः जिज्ञासितव्यः एनं विदित्वा मिन भेजीते याच्यात्मिन तिष्ठ भात्मान मन्त्रोधमय तीन्यादि निदेशो नामित भेदे छन्तते नम् स्वामि भरत्य साहत्ये युच्यतः नामान्य व्यपेषशः इत्यना न्यु स्यवा नाचि हीते नाना व्यवदेशा देन नांश्रान प्रतिपत्तिः कि ल्बमेर प्रतिपादकोषि न्यपदेशोऽ सित एके न्याचिमीताः; बुसरात्रा बहा राया बहो में कितवा द्ति व जान्येकितवा सून कुन से सर्वे ब्रह्मेनिति हीत जनत्राहररों न सर्वेवामेन नाम रूपकृ त कारी करता संदात प्रविष्टानां जीवानां श्रहाल माह एनं त ह्यी तं प्रमान असि तं कुमार उत ना कुमारी तं जीकी ह राडन बच्चीम तो जारी अवसि विश्वती गुरव इति सर्वाणी ह्यारी नि चित्य भीरोः नामानि कृत्व त्यादिना मान्यातोगिते इसे त्यादि ध्य सार्थस्य पिहि। नेतन्य साविशिष्ट कीनेत्रापाः व्याप्ति निस्कृतिक्ष में में नी स्वयं न्तरमांद्र दा भेदा मंत्रा न मित्य के ॥१२६॥ ।।मन्त्रवरतीन्त्र।।१२६॥

तानानस्य महिया ननी ज्यायांसु युहव यारोस्य सनी भूतानि निवादस्या स्टर्न दिनि न्यून भूत शब्न स्थानर नंत्रसानि बाह्य शा दुर्यम खीलर मिति यव्यवसीष्ट्रयी त्याहम ने ति।।१२०॥ ॥ अपि च समर्थते ॥ १२ =॥

स्मर्यते च ममेगांत्रो जीन लोके जीन भूताः समातन इत्याहरोत्या ह = यूपि-ते ति ॥ १२ = ॥

गम्बाद्यादिन लेन म्पटा ॥१२०॥

नन्नं भां त्रि त्वां जीकारे जीव दुः रवनां त्रित इत्वर स्वापिद्वा रि त्वायति। यथाहरत यादादि द्वाला देनदत्तस्य द्वारितां स्वान्त सम्पाश् दर्शन्म न खेळा मित्याशं का म्वार पति स्कारति व दिति

जीनस्य ज्यानिसक नामस्य नामस्य कृत देह न्द्रिया युवाधिना राज्या भिसानेन देह गत्र दुः खादिकस्य न्यूनुभवः न चारमाचिकः नेवं सर्व दूर्वरस्य द्वा द्वास्म भावो दुः खाभिमानोवाः स्ती तिनदः ति त्वं स्त्रहातिशाचे युन मिनाद् दुः खम्मा न्यानचेति भावः ॥ १२०॥ । स्मरन्ति च॥ १३०॥

नहि नेवेन दुःखेन परात्मा दुःख भाग्भवेत तत्र यः परमात्मा हि स नित्यो निर्श्वरणः स्टतः नानिष्यते फन्नेः वाणि पद्म पत्र मिवामा सत्यादि तपारन्यः पिष्णनं स्वाद्धतीति च ॥१३०॥ ॥ज्युन्त्वा परिहारो देहसम्बन्दान्न्योतिरादिवत् ॥१३१॥

नम्नीम ब्रह्मता हित्य मं थां ग्रेन्सं ने त्युक्तं नहिं मह तो भा बीप्त वया दित्यन ज्ञा गृनेहुनां नो य शक्कि दितिय हि हार, रुवं त्योक्त मि म् खा से ते प्रामुः यहि हतेयाः इत्यन ज्ञायहिहारी न यो रुव यहि भी खो ते ना माह न्युन ज्ञीत दे हेन सम्बन्धः न्युमिन्द्रियादि सं धा तो देहोऽह येने ति विवधित प्रत्ययो त्यितः सान सर्व प्राशी नां न्युहुइ च्ह्य मि न्युह नि खा प्रिइत्यादिह्या न ह्यस्या स प्रयम् ज्ञानव्य ति हित्तं निवारक मिता ते देव पवि ह्योपिय सम्बन्ध कृत विशे वा देकात्म्याङ्गीकारीय न्युन ज्ञाचीर हारा वयक्त व्योते साम्यम् द्योने सित न यो हान श्रीन्यं कृता चीत्वा निम्न प्रान्य ना ह्या प्रकेश स्वाद् हि सम्बन्धा देवा नुज्ञा परिहारी यथा ज्यातिय एकत्वे हित्तं व्यादा श्रीः स्वाद्वा हित्तं नित्र स्वाह हो। १३॥

गन्यसम्तत्याच्यतिकरः ॥१३२॥
ननेन मिलकि फल्म सम्बन्ध हेकात्मे व्यतिकीर्यत् स्वाम्ने
कत्वादिति वासेन्याह न्यसन्तते रिति महिकत् भित्ति रात्स नः सन्ततः सर्वप्रशिरसम्बन्धः उपाधितन्त्रान्तेनः इन्युक्ताः वादि न्यसन्तानान्य मनीन सन्तानः ततः कर्म न्यतिकरः फलान्यतिकरोना न भिन्न व्यति॥१३२॥
॥ न्याभास एन च ॥१३२॥ न्याभास एगे तिन्ययन्त्रीगः वरमात्मनी नल स्र्येग निव्हाभास एव नेव्हार एवं सा सातः नाणिव स्त्वन्तरमत स्र प्रयाने कन ल सूर्षे कम्बमाने नल् स्र्येशं कम्पते एवं ने के नी वे कर्म कल सम्बन्धः सितनीमान्तरस्य सम्बन्धा पतिः न्यूनपापि सन्त्या कर्मे कल प्रार्थितकरः न्याभासस्य चा विद्या कृतत्वातः न दा स्रयसंसा रस्पाव्यित सा कृतत्वातिरासे पार मार्थिक ब्रह्मात्मभावस्या पपतिः वहवो नीवाः वास्तवाइ ति वे द्रोधिका दीनां मतेन एक स्यात्मनः सुखा दियोगे हे त्यित्री बात्मन्या विद्योशान्य स्वीत्म नामेव स्थान सुखिदः विद्यं वसन्यतः ।। १३३॥

॥ अदृश्यानि यमात् ॥ १३४॥

न्प्रद्विनिमित्तो नियमोभिनिष्यानी त्यनाह न्म द्वेति नह सुम निगते व्यातम्स प्रतिश्वरीर म्बाद्यान्तरा निशे बेरा मिनिहित्षु मनोक्रिनाक् कामेर द्व सुवानेत द्वि न्यस्येने दमद्व मस्य निति नियमहत्वभाग देव एगदी बास्यात्। १३४॥

गन्द्रिमसन्द्रमादि व्विष्णे वम्।११३५॥
नवह मिदं का लंद्रामनान इदम्मरिहरा मिद्राने म्यू यते
द्रत्यं करना शोद्रत्ये व विष्णा ज्य भिसन्द्रया द्रयाः यत्रात्मं
प्रात्मं स्विभाना व्यव्हर्यात्मना वस्य स्वापि भाव नियद्यन्ती
त्या शंक्याह व्याम सन्ध्राही ते व्याभ सन्द्र्याही नामि सादार राजिना सम्बोधिन सर्वत्म सन्द्रिधो कियमा सानि यमहे न्य भा ना दुक्त हो स्वस्यात् ।११३५॥

। प्रदेशा है तिले नान्त भी बात । १३६॥ है तिले ती या कार ना विभन्ने व्यात्मन, शरीर प्रतिक्रन मनसा संयोजः शरीर व चिन्न मनसा संयोजः शरीर व चिन्न ए मनसा संयोजः शरीर प्रतिक्र साथि मन्द्र मनसा स्वीत स्वात विभन्त विभन्त विभन्त विभन्त विभन्त विभन्त विभन्त स्वीत स्वात स्वात स्वीत स्वात स्वीत स्वात स्वात

12/

यदेश विश्वाभ्य पश्चित विस्त मान सुखदुः त भाजो द्वे घोरा-त्मनाः कदा चिद् के ने मशरी र गोष्य भागः मात् द्वे घोरा त्मनोः स मान प्रदेशस्मा दृष्टस्य सम्भवात ब्राह्म रागित् प्रति र प्रदेश स्वरूः ष्ट नि खाने स्वर्गायभागस्य च शरी रान्ति एदे शान्तरे च जायमान त्मात भवन्य ते या शाहिक तीः स्वर्गा पे स्वृ ध भो शोन स्यात् । प्रात्म प्रदेशस्य भिन्तस्य कर्रे त्वातः भिन्तस्यात्मान्ते हैं भान्तत्वातः सर्व शतत्वान प्रयानेष्ट्र तस्मादि व हाने चिन्या देन सर्वो प्रपत्ति स्व भवे नु प्रात्मे कत्वप्रस्थ व निर्देशद्वाते भावः न्यत्रप्या काशाहीन प्राची व मृत्व म्हास्तवा हे सिद्या स्वकारीत्वा तः ॥ १ द्वा इति व ब्रह्म स्वतात्व ये विवरता द्विती घा द्या यस्य स्तीयः वादः ॥ ।।।।।

-प्रया निर्मा ।। १ वर्षा ।।

॥ जारायसमाना ॥१३०॥

मिराति किसीन्त अगवा विद्याते द्त्यादि नाएक विद्यानेन सर्व विद्याने प्रातिद्वा भद्ग भयात जो गण पिया त्या ति नी सम्मवित किन्तु मुखोनेत्य विः न्यसम्मवान यतः एत स्मान्ता यते द्वाराण्यनः सर्व विद्यारिण नरनं वायु न्यति ति रा यहा त्यादी जायते इत्यस्य न्या का प्राप्ते मुख्यात्य निया विद्यारिय द्वाय का प्राप्ते विद्यारिय निया विद्या विद्

॥ तत्याक्ष्रातस्या।१३०॥

इतस्र प्राराणनामिष् मुरक्ते वजनमञ्जातः कृतः जायतङ्ग्यस्य प्राराण्याः क् श्रुर्तस्तु उत्तरेखा याकाशादिखनुवर्तनङ्ग्याह्तस्य भिति ॥१३०॥ ॥ तम्पूर्वकत्वाद्वाचः॥१६७॥

-प्रनेव प्रकररातिनात् न पूर्वकत्वं नक् प्राराधनसां -प्राम्नाधते -प्रनाध पंहिसास्य प्रतः, -प्रापाप्रधः प्रापाः तेनामयोनाक द्रीतेन्य ताऽपिष्रामानां वहा विकारत्वभिद्धिः ॥१७०॥

।। समगति विशेषितत्वान्व। १४४॥ नि अ

उत्पत्ती म्याराणना म्या व स्याच्या सं खाविना रः कियन क्रानित्समया राणः प्रभवन्तिनस्मादिकियुताः - अष्टा यहाः - यष्टानित यहाइत्या नाष्ट्रा सस्वे श्रीष्ठिरायाः द्वानवाञ्चा द्रत्यन न व न व ने यु रु स् द्वाराण नी भीर्दश्रमेणित द्रश्यक म्वियति च तो ससेव मनः - युव जानः सम्प्राराणः प्रभव न्तिनस्मादिन्य न सस्वे श्रीष्ठी राणाः प्राराण द्रति वि व्याष्ठितत्वाच्य द्रतिपूर्व चसमण्ह स्राजने रिति॥१४१॥

गहस्तादयस्तु स्थितना नेवम् गरध्या

हस्तीने ग्रहःसकमिलाति ग्रहता ग्रहोता हस्ताम्यां हिकमेनराती तिस्ततः समभ्या व्याति गरेन्हाः प्रातााः, उत्तर नदशे मे पुरु वेपाताः व्यात्मेकादश्रा त्मका इश्चत्वस्रवरणतः स्वात्मानान्तः करतां क रता दिकारात् इतिस्ताना हहस्तादय इति हस्ताने ग्रहः मकंभि तातिशहरा। त्यादिना सम्तत्वातिरे केस्थिते सम्बन्धं पा न्ता भीननी यम - स्रताने नं मन्त्रकां सहाने ति सर्वे सांश्यात्रीनां लगका पनं इत्यान द्वादश सङ्ख्य इस्टमम् स्वान न योगदश इतिक यमकादशित नश्चादशस्त्रा कार्यनात्रमाः ना विक

विश्व स्रिताः (१८२३) उत्त २ पा । ४ क मीम्ति यद्वीमधिकं करगांक ल्यान प्राव्हादिवञ्च यह सामें जादीन पञ्च नंजनादान विह रस्मात्स्वीमन्दा र्थाने पञ्च स्वी ये विषयं जे काल्यं मनः स्वं दे स्वकादशमनोन्द्र ति भेदात् के चिन्मना नुद्वाहंकार श्वित मिति स्वं संस्थान्त दं व्ह नि भे दादे वी हिनी यस्त स्मा च्ह्रव्हतः कार्यतस्त काद्वी विष्रागाः॥१६॥ ॥ ज्यु सावस्त ॥ १४३॥ दिन्ति

पारामनान्दामीन्तर माह-ग्रसानइ तिष्टतेष्वारामान्यसानः, न्युरम्लक्षे बां सूक्षान्तं न्यानिन्द्रमन्तं परिद्धिण्यन्तं च वर मारामनंकुत्स दे हन्माणिकाणीन पपत्तः योद स्यून्ताः, मररामन्त्रन्तद्द्वा निः सर न्तानीना दे हि रीनोणना भ्यर म स्प्यूमा सास्या पार्थने स्थाः, न्यूपीर दिल्लाने प्रत्या प्रतिष्युत्तिकाणः, त दुराम सारत्ने हो जीनस्य म सिट्येतः ॥१५३॥

। से ब्रम् । १९६१ | ६३% पुरववा लाडिपेश्वस्तिवकार एवेन्याह खेरह हो न नव विशेषसा सर्वे या म्नुस् विकारन्य मुक्तमेवे तिकुतः पुनविवारः न्याधका शंकापोरहाराय नासदासीयव्हास्क न म्दन्यरासीद्मतं न तरि नरा-या अहन्यासीन प्रकेत: यानी द्वाने स्वथ यातदेकं द्रितमञ्जा उत्मत्तः प्राक्त न्यानादि ति न्यू नम्य पाराकर्मा पादानात पूर्व म्यारेगा प्यस्ताति सूनयोत्तासमा ट्नः प्राशाः इत्य धिकाशंकायां न्यानात मिति विशेषणा त-अपारणसमगङ् तिचमूलयक्तः पारणदियने रहित न्नस्यद्वित्तन्वात्कार्शासत्व प्रतिपादनाचे खनायम् च्यानीत शब्दः ख्रष्टइति मुख्ययासामिय पाति पाता वाव ज्यस्स स्रष्टिति नवेशस्यामस्य रुते जीवित । मात्रुसा। धन्य चुते: ॥१४४॥ ॥ नमायुक्तिच एथ्याचे दशाता। १४४॥ अरे. के सामुख्यप्रारा इति विचारयतिन नायु कियइति नायु नि सू ता (१२३) अ २ मा छ नीतः कियाना मुख्ययाराः उत्तताभ्यामन्यम्नेतित्त्रयः याः राः स्वायः व्यायमास्तान्तरान्समस्तकरणान्दितः प्राराः द्रति मासे ज्याह नम्यः प्राराग्नापिकरराज्यापारः ख्याय पदेशातः प्राराण्यनग्रहार राष्ट्रानुर्थः पादः सवायमान्या तिवाः भाति नतप तिन वाजादिकररा क्रेक्ष्यः तान्यनुक्रम्य तत्र प्रथक्ष्यारास्यानुकः मरगातः चित्तित्रहतारभेदातः महिक र राज्यापारः सन्कर राम्यः प्रथ युच दिश्ये ते ति एतस्माञ्जाः यते प्रारागमनः सर्वे न्द्रियारिन रगम्यायन्त्रीति रिज्यादे । प्रथायदिशानः पाः पारगः स वायुरि ति नुन्य स्थान्मपञ्च न्यूह विशेषातः प्राराउन्यते नतन्त्रान्तरिनिते भेदाभेद्यः स्पृत पत्तः ॥१४५॥

ग नसुरादिवन तन्सर विसादिन्यः।।१४६॥ न न प्रारास्याणिनीव वत् स्वातन्य प्रसङ्गः तनाह चसुरा दितिनु शब्दः स्वातक्यं निवारयति यशानभुरादीनिराता जीवस्य कर्र त्वं भा चुन्वादा उपकर राग निनस्वतन्त्रारा तया मखापारागराजमनीवजीवस्वापकर साम्तः कृतः प्रासा सम्बाद हिन शुरादिभिः, सहिन मुखा प्रासाः विखाने समान धरोता हिसहसासनं युक्त स्टब्सान्तरादि वत् न्यादिनासंहतत्वाचेतनत्वादीनांहत्नां ग्रहराम् ॥ ४६॥ ॥ अन्य स्तारवाच्यानरायसायाहिर्शयति॥ १४०॥ ननुषाराह्यकररात्ने च शुरादीनां ह्या दिनदस्यापिति वयान्तर स्वात इष्टावनो पूर्व मेका दश विषय दाराष्ट्र कार्श गहरावत द्वादशस्यापि-प्रवादातेपादनं भनेत् न्यनात्तरं न्यकर सात्नीते न च सुरादिनत चिषयपति रहेदकः किमरीन्तिहिषारगः त्रारीर स्थित्यर्थे व्ययह पारागः - यहं भ्रेयंसे न्यू दिरे इसुपक्रम्य यास्मे न्यः उत्त नो इर्शरोर भ्यापिष्ठमिनर इपते सर्वः श्रेष्ठइन्यादिनांते प्राणा निमनांशरीर व्हिंगास्थाती व्रश्नेमाते ॥ १४०॥

वं सः ताः (१२४) अर २ पा ४

॥यत्र वित्तिमेनाव द्वापित्रयते ॥१४०॥

इत्रभारितम् त्यप्राणस्यकार्यविशेषः प्राणादियम् चित्रिचः प्राणाः उक्तासादिकमान्यवाकं निश्वासोऽमानः त्यानस्तयोः सन्दिः वीषेव त्कमेत्तः उदानः उद्धेचितः उत्कान्त्यादिहितः समानः समंस विव्यद्गेष् व्यप्तितयोत्तरसान्तयति इतिपद्धवितिकः प्राणाः मने वत्र व्यत्र एवनीवीयकरणात्वमपिद्धाः पञ्चति ॥२४०॥

त्मक्न ॥१४०॥

"आ तिरासिष्ण न त्रदामननात् ॥२५०॥ 9 % त्रियाणाः विस्त स्व सहित्त स्व कार्याय प्रमान न्युत् देव ता रिश हिता त्र स्वत एवे त्युत्ते कार तासामन भोक्त त्य समझ त्रियाल खाह ज्या तिरादा ति ज्य प्रमास्य भिमानी देव ना दिर हित हित वाणादि स्वकार्य य प्रवर्तत कुतः तदा भननात् ज्य गिर्नी मा भूत्वा मुख्य प्रमानिश दित्या दिनान पुः या राजित्वा द्र त्या दिनया नाजव वत्येः यादः सो ग्रीना ज्या ति बाभाई ति चत्र पति च तिवक्त व मा विभूत्वा द्र सो ग्रीना ज्या ति बाभाई ति चत्र पति च तिवक्त व मा

॥प्रायानना शब्दान् ॥१५४॥

युक्कन्देनतानाम्मभाक्त्रनायत्तिस्त्रगहयाणि होसितिब्ब विद्वतासु प्राणावता संघात स्वामिनाजीनेन यागसम्बन्दः, खुत्यावगम्यते अथ यनेत वक्ताश्रमनु विव्य गराम् सन्त्रस्य युह्या दश्राना ये लिख् विवश व्यत् तासामने कत्वात् एका शस्म न्शरीरे भाक्तावशम्य ते योतस न्यानात् ।१९४॥

॥तस्यन नित्यत्वातः।।१५२॥

शारीरसाशिर माक्तिन नित्यहनं देवतानां ताः हि पर स्मिन्तेष्रे र्घ ५ ब ति हमाना नहीं ने श्रीर भी क्तृत्वं प्रति लेखुं - प्रहे निस्तृति स्त पुराण नवा मुंश कि नित्तृति देवान म्या पङ्ग हि ति प्रारा पशु का मन्तं सर्वे प्रारा व्यनु क्राम निकररा पश्से स्पेन देनता न भी क्राम स्वास्तिहत स्पेन ति ॥ १५२॥ त्र स् ता (१२५) अर र पा ४

॥तर न्द्रियाशा त द्रव्यपेद्र १ द्रव्यत्र घ छत्। ११५३॥ ट्रि. कि मुख्य पारास्थान कि ते मदा इतर पाराश ना दयः उत्त तला लस्सी इतितत्र त स्तस्य क्षण ममन नि ति खुत बत्तयस्व । ते दित्र पारा नि न्याह ता इति तत्वान्तरास्थान ना आदी नि स्तस्मा ज्ञा यते प्रास्था मनः सर्व न्द्रिया सि नि से सा सा द्व्यत्र भिन्तव्यपेद्र शातः नच प्रनो के ती ना मि प्रे न्द्रिया शां पार्यनां एका दश द्रवे द्री नातः ॥१९५३॥

॥मेद्ध्रतः ॥१५४॥ प्रत्यन्नार् मेद्बेचनान्तरम्मीत्याह मेर्इ तितेहनाच्**उ**त्र्रिस् पक्रम्यवागारीन न्यसर पापिते ध्वस्तान पन्यस्यन्यस् इम मासन्धं प्रारा मुनु रितिन्य सुर ध्वं तिनो मुख्यप्रारा स्य पृथ्य पक्रमात् ॥९४४॥

॥ वे नशराया च ॥ १५५॥

युक्त न्तर माहने लक्ष रायित सुराष्ट्र गाणि यु मुख्य स्वेक जागिर्ति इति देह धारराहित न्वी वेषया लोचन स्तित्व देन्द्रि । तस्ये व पाराणं न प्राराणस्य ति लक्षराण्ये दे। स्ति तस्या जन्ना न्तराणाः व्यासाल पाराणे इन्द्रियासे । १५५॥

नु श्राचावत्यचः संज्ञाम् तिक् मिनाम हणवाकर्गम चिक्त जित्र होते परम स्वरं लाङ्ग यति उपदेशात् निकलाते तस्यनिर पनार्कतर्वनिर्देशान् यं यं मनेक भूत्रभौतिकप त्याकृति अनेक प्रकारा नाम ह्यादिकृति। सातेजीनन्तकृते रीश्वरस्येव उपद्यात् वाकरनारामे ति उत्तम पुरुषप्रवामा रूपास्पव निर्द्रशात् जीवेन निन्नविश्य न्य ना ना यी अव्यक्त तत्वात् न्याकाशावेनामस्ययो निर्वहिते त्याद् युत्राथा।

॥मांसादि मोमंययात्रक्तितर यास्त्र॥१५७॥

नन्भ्रमादिसर्वे निर्त्त्तां चेत् मां समनः प्रातादीनां वितस मालाउपपतिरतन्याङ्मां सादीरतेन्य नाम शितंत्रधानि जीयतेतस्य याः स्थाने का धानः तान्य ती वं भनाति योमज मःतन्मां साइ ए ति। इसन्मना भवती ति चिट इताम्रेन बी यारान्त हेपरा। त्याराने तस्य स्यूलं हुएं प्रार्थ मध्य पंमां मं सूक्साशामन न तस्यूल मागस्य मूनं मध्य मस्य लोहितं स् समं प्रारा।; न्यु शिततेना, स्यून्न भागस्य-न्युस्यी ति प्राटम मामना स्स्मानाक इत्यादिश्वतः स्मानादिक्तमेन ने नस्रापं परना त्रिक इकृत येने तिमानः एनं यथाशास्त्रं अपने सार पिना व्या

।।वेत्राच्यान्त् तस्तद्दः॥१५०॥ यदि मर्ने एव नियन्तृतंतत्व पंददंतेनः इदं नत्न मित्मादिव्यवहार स्तत्राह नेशेखादि ति निशेष स्प भागों नेशे व्यं ज्या है। वर्त च्यान्सिनी भ्यस्व उरक्स स्माप् भ्यस्वं ए जिल्या अन्त भ्यस्वं इत्ये व चियत्कृत खिपान स्मानां ने शेखा नदीयत्वव्यवहारः नि य गार्जित स्माद्वेश व्यान दाद स्ताद्वा दः पद्म भ्या मो ध्यापस माम्यर्थः।।१४=॥ इतिब्रह्मस्य तात्पर्य विवरतादितीयात्व

c450 31.3 द्यः ताः

॥तरन्तरधतियनोरंहतिसम्पारिव्यक्तः प्रश्निनस्यसाम्।।१॥ द्वितीया ध्यां वस्ति स्टिति न्याय विराधा श्रह्म दर्शने पर पद्मार्श्व स्वयन

परिहतः जीनव्य निरिक्ता गोन ज्वा न्यु पकरता मिनव्स ताजायन इत्यासु कं इदानों सो वक र साजी वस्य संसारमति प्रकारः नद्व म्यान्तरं व्र हा सत्ता त्वं विद्या भर्ते भरी य त्या न्यमं इति सम्यग्दर्श नोषापारित तीय चिन्त्यते प्रथमपाद नेराज्ञायपञ्चा भिविद्यामा १एत्य सं सारमति भेदः प्रदर्शते नीवः स न्द्रियपारणे दविशाकर्भपूर्व कै प्रज्ञा चरियहः पूर्व देह स्विहाय देशन्तरं प्रति परा ते इति अपना मात मिति देह विनेव उत् स्काः मारि खक्तः इति या विन्यंत तयक रशाचा यान वत् भूतस् सोवा दानस्या भूतत्वा त्वावाश वेन सुराहीनामेन स्वराति स्यतास्तेनो मानाम माना द्रान इस वापि मा वाश्वेन कर रागापादानात् यवे वदेशरम् स्तवे व म्ता नां मुल भत्वात त्रेषां न यनं व्यर्थ तस्माद्सम्प ते व्यक्ता यातीन पारी बू तेत द्नतरीते दशन्तरप्रीतपत्ती भूतमां नसम्परिष्वका रंहीत गर्वातकतः पद्मनिद्धपरणम्याम् मत्य यवापन्तमामाइता गापः प्रस्वन वसा भननीति प्रक्रे युपर्यन्य पि नी पुरुषयोषित्य पद्मारीमु अद्भासीमय थान्तरतो स्पाः पद्माङ् विस्काइ विन पम्म म्या माह तानापः पुरुष वनसो भननी ति निरूपरणत् यतिनर नात्त सम्बद्धि। परिन हितोयातीतिगम्यते अदिभरित्यन्य षाम्भ् तानामप्तस्यां एनच दहानारं त्य काश्रकादिवदाव्य व सान्तर मिनद्हानारं मळ तीत्यादिक ल्पनाः निरसाः भूति

वित्यान्।।१॥

॥ न्यात्मक त्वात् भूयत्वात् ॥ १॥

न्यप्राव्यमा नामन साम त कर्यम में भूति गरित शंका म्वार यति भारमका ते न्या त्रिकाञ्याय स्त्रिक्त साम्रते न्या सक्ष देह। अया सां नेजो व न्या नाम पत्न बरे नात पित क के धीनिश्य नियार्तित्वा तिस्मानयात्मामाध्ययने उपश्चतः न्यपाम्य स्वार् अवज्ञन अव हारः॥२॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥पारम गते श्रा

प्रामानां दहानरे ज तिष्तुमा तम् दक्का मन्तं प्रामानुत्का मतीत्र तो प्रामाना माष्ट्रयम्बिमा जत्यसम्भवा दतो होषे प्रतान्तरो पस्ट ष्ट्राना मेखां ज ति मेहि निराष्ट्रया जळ्ळान्ते ति स्वान्तेवा जीवताऽद्शे नारित्याह प्रामाणिते॥३॥

॥ श्रुत्यारिमनिष्नति विन्त भाक्ताना ॥ ४॥ नम्यास्यपुर षस्यस्त स्वाभिम्वामच्योतिनात भ्यारणइत्यादि प्रते: कथं सहम्बद्धिनाइ त्याशं का न्य्र श्यादिमनं में राम् श्रीक्षिमानिवनस्य ति न्केशाइत्यादीत् द सम्भवाति श्रीमा माधीधस्रात्या मञ्चादिद्वता नां उपकारिन चिम स्य मन्द्रितत् स्वरूपलयोभव तिइत्पृ पचर्षते इत्याह्न्य श्र्योद्द

गत्रचमे इस्वराग दिनिच्नता एवस्य पनः ॥५॥ तन् कर्षे प द्वम्पामा इता नपा मुक्त पन च स्तु व प्रमाइपाममु तत्वात् युलोकप्रभातिष् पञ्च स्विमेष् सद्दारि पञ्चानांहोष द्रयाने न उत्तरेषु व पर्यन्यादि वतु ष्रीमादि चत्रामिल हला पपत्ते भवत्नामाय् भूय स्वात न्य्यप्तवं प्रथमीत म्रद्भायाः कत्वव्यमानिम्यस्यस्यनाप्तवामावात् अ मुक्त मास्त्र म्यामपामपुरुष भाव इत्याशंन्य मयमे स्त्रीतारवाप श्रद्धाभद्गो ज्यनो उपयते; रुवंसीत एक वान्यन मुपपरातेन्य न्यणा प्रक्रम प्रतिवचना भावानु प पत्तेः ताःसो मव स्तादि स्पूर्ती भवदब्बहुलं मूझाबार्य कारता स्यापि मुझाया न्यु पतं गपप ति न युन पत्रवादिभ्योत् हदया नीव नी व धर्मा निस्त्योव शेषः भद्भाग हीनं शक्या होमायो पादान माशक्यत्वाता नम्मता तरकाषां नुत्तेधात्र न्यू प्रवानम् द्वा भ्रद्धा थीः भ्रद्धा वार्ष्य इतिस्तेः तन्तेन मद्भवम् द्वाइत्युक्ते पंवश्यद्व मद्यस्य व अद्वाहत् ना चौ ची व्यापीहां समे अद्वां संन यन्ते युरापायक मे CC-0 Chroku Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गत्रम्तनगदितिने न शादिकारियां प्रतीनः गद्दा

गणाक खाना सिन्ना तथा हिर्श यति ॥०॥
कथम्पनीर हारिका गरेगां स्वित फला पमाणाय रहेगां सम्मनति
यत स्तेषां भूमादिन सेना चन्द्र मसंगता ना मन्त मानन्द्र भीते
हथ सोमाराना देना नामन्त्रं ते देना मस्यान्ति ते चन्द्र साव्यान्तं म विने इति चद्रेने भी सित्तत्वात् कथन्तेषां फलो पमाणः, आष्ट्रा दि मास्त्रा ना मिने ति या से आह भाक्ता ते च शक्ते व्याख खर्थः भाक्त मे बामदनी ग्रत्वं न हा खां किन्तु उपभाण साधनल मार्थं मन्त्रीन ते निशानं श्रां पत्रावोऽन्तं विव्यां इति नत् भाक्तम स्त्री पत्र मत्यादि गत्तारिन इहादिका गरीभ मैत्सखिहा गदि तदेने बां मस्यम न मोद्का हिन्ता वित्र विव्या महस्त्र विगरता म्वा नहें वे देना न्यु इन न्ति न पिन न्ति एत देना म्ह ते स्वास्त्र स्त्रारिका स्वा न्यु ति गुतामाना पत्र ताना स्वा प्रा ति विव्या त्र ह्यादिका गित्ता देना न्यु ति गुतामाना पत्र ताना ना अप्य प्रमा अपया ते स्त्रा मिन मार्थित स्वा स्त्र विद्रा स्त्री स्वा स्वा स्व

अति ॥ मृतान्यय ६ न् त्रायवान्द्र एसरित स्याय येतमनेवनु॥ य इसिकारियाद्यन्द्रमराइलं गताना म्लेगातरं नता उनराह्यां भूतं पावत्सम्पातमुखित्वाचेतम्बाद्वानं युन रावतेन्ते पचेतमितित्म मीय बरला बाद्धरणादियानि कव्यवर्रणाः व व्वादियानि आति तन्त्रभूक्तक्तकमाणा निर्नुशयाः न्यवरोह निउतानिशिष् कमोराः इति निर्वृत्राया इति घान सम्पाति नित्रेषणात् सम्पातः कमेन समान्तिर नुत्रापारम्ब इत्यात्रां न्या दृष्ट सरितार्थात यहरमागीयवर साम्ब्याक्षाहवेरमसीयां योनिमापयर न्वास णायानिम्बासनियमोनिस्वत्यादि द्रीनात् चरराष्ट्रवनानुत्रयः सर तिरिष न रणास्त्रमास्तरमं निकाषे द्यानम् सन् म्याततः त्रेषाणि शिष्देशनातिक नद्यापः युनवनं वित्तस् रवमे ध्यान नमें प्रान इतिसा नुस्याना मेनान रोहरां द्रिय तिन्यानु शयो नाम स्वर्गार्थस कर्मरागाऽवत्रायः क विद्वत्सेह भाराउ। नृशक्त स्त्रह्वत् न स्वशेषमा त्रेता नन्दो १व स्थिति; सम्भवति सनकस्य भुक्तसर्व सामग्रीकस्य षादुका माना विशेषस्य देशान्तर तव स्थान विव ति तथा वपूर्व कृतस्यूता निनाना विति पि र्युभूष स्कारण स्कार्य मान वरोह तियथा समाने सा निध्येडीप स्थ्नं ह्यमभिन्यनोक्तेनस् इमंत इत त बाबरोह राम्य यथा गमनं तो द्वियरी तक मेराान्य्रभा युप में खांनात् रात्या सम्बर्गात्।। या

।। चरमा भिक्षी दि तिन्नन्तयलस मार्च तिनावार्यानिनः।। ।। मन्यनशयः सूक्ष्मंकमे नर माधान रर्गा प्रचानगरी प्रधानारिनि सुती भिद्रेनोक्तल्यात्ततस्मान्नरमादेव यो न्या पाने स्रोत जीनु स पात्त र्यमी प्रनरमार प्रमा पा पो निमितिस्नेन रित्या शंक्य न्यनु सा जाय जस्मा पा नरमास्तिरितिका स्पानिने निमेन्यते इत्याहन ररामा दिस्ते।। ।।

। न्यानचिकामितिन तत्तदण सान्याना । १२०१ मतु नर राष्ट्रिम निविद्या मन्द्रम्य मन्द्रम्य स्थान्य स्थान्य स्थानि त्वा क्रिका कि भागे हिन्न राष्ट्रा प्रसं मस्तानार ही नः कि सिद्धिकृ तः न्यानार होनं मणु मनिवेदाङ् नि सर ते (तचानक मेशाः स्रावर ।। सक्त दक्ति क्वीतेवादीरः ॥११॥

आदीरस्त सुक्तदु कुत स्नें नरसा शन्दन नि प्राय्यने इसि पन्यने कर्म नरसा चोन्नाह्मसाय रिजाजक न्यायः रायसी यन र सा: र परसीयक पीरसः, इस्य चे इन्याह सुन्क ते रते 11991।

11-यनिलादिकारिशामिष वस्तु मेर्र 119211 इ ष्टादिकारिशाश्चान्द्र मराइत्मे ममत्म सक्तं न्य्राने खादिकारिशा इणि बन्द्र इंग्ड्रान्तिन व नित्र ने न्य्रानिष्ठा दिका रिशामिष मस्त्रीन्ते मे वेकेंं ता स्मान्न्त्रो कात्य यानिसर्व तवन्द्र मसंगट्याने इ निकी पित्र किन्नु ने रिमा प्राइत्ते न्य्रानिष्टा होती सम्माने 11921

॥संयमनेन्न भूयेन रेषामारहा नरही नहूरेन इशे मान् ॥१३॥ सं माध्यत्ते सं धामति ति ति ते ते सर्वे नद्भसं ग्रन्थतीति यतः मा जायेन तनारोह रागं नि न्यू घाननं यु त्यन रोहायना निह्म प्रवाद कि मा जाया निष्य घाननं यु त्या के रिश्वा न स्था रोह ति मा जाया निष्य कारियां चन्द्र परित ना वित्त वा सं धामने या मा प्रवे भो जो के देश मा रोहा वर्षा है ति मा ति देश ना त न्या हिन्द ने सम्प्रतियमन न दर्शनात न सीं ये रायः प्रति भानी ना ना प्रमा हा नो नित्त मोह नम् हे न्य पम्ते को ना रित्त पर हीते मानी प्रनः प्रनित्र पाणहाती में हीते ने सम्माने ने ने ना रोहा पर हीते मानी प्रनः प्रनित्र पाणहाती में हीते ने समने ने नो ना रोहा पर हीते मानी प्रनः प्रनित्र ही ना नि स्था रायः सी रायः सी

किहा मन न्यास प्रस्तयः सं यमने यमा यनं कप्यकमे निपानंसा रान्ति ना चिकता पारच्या ना दि खु इत्याहस्मर निजेति ॥१४॥ ॥ न्यायिन सस ॥ १५॥

रीरवयम् लाः त्यन रका चाययत्न भागभूमिलेन तो राशिकाः सम

एनि इतिकचं च द्रन्त प्राप्त्रपु रित्याह श्रीपेचीते।।त्रनाचिन्त द्या पा एदिनिराधः,॥१६॥

नन्य चैतर्ने यमा श्रीनायात नात्र नच्या साद यो डिलामणः स्मर्थने द्रोते प्राप्त नक्तीय यमप्रयुक्ता स्वत डिली सानारः द्रोते

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

145

तना पि प्रया नक लोन घमस्ये ना विश्व हात्रले मित्याहतन्त्रीं जी

पत्राणी विद्याया म्य त्रन ष्र निव बनावसरे हार्न प्रयोग यो। पणी निकतरेण न्त्र तानी मानि हाद्रारापसकृदावर्ती नि भूगानि भवनित है प्राप्त किय स्वतेत स्त्रीयं स्थानी नासी त्नाको न प्रयोग दिन यो निप्त यानिपत्र यानपो प्रहर्ण प्रकृताना विद्वानिपदे व याने दिन होता है कि शाः पित्र यानतेषा र नियम्तानां हाद्र नन्त्र व्याक्त र विद्वानिपदे व याने दिन होता है व त्या भवनि व्यतोपिय निष्ठा दिकारिशां नचन्द्र नोकार हत्याह विद्वानि

निषा दिकारि सार्व नवद्रतीकार इ.याह विसे ति ० अवराहा ध्युष अधार सम्पूर्णिपपति ति ॥ नरहती पेराको प्रत्यकः ॥ १०॥ वेना सुत्रताह

नम् कीटादीना नाताव राहराम ध्ययममा नाव सम्पूर्धत द्रत्यस्य विरोध द्राम श्रंक्याहावरोहे मिति-प्रभुतात्म दितितयास तित्तः तीयस्थानेत्वस्य पंक्यप्र मं गात् ॥१८॥ ॥ न ति तीयतेचोणत्मन्धेः ॥१८॥

नन्तेषामपिचन्द्रपत्तमारहो वतः तीयह्यान जमन स्मनाः देहान्तरता भाय संख्या नियमः तथापत्तव्दाः निनेव संख्यानियम् पूना क्तप्रकार ण तः तीयस्या नपासि हकानाय स्वैभियस्व ति मनु व्य रहहे नुत्ने नसं व्याश्ववणात् पारो हावरो ही व्यर्थत्वात् प्रसान्नाको न सम्पू पता इतिस्त

।समयति इपि च त्योके ॥ २०॥

सर्वनाह तिन्य नियम हो निर्शे ने नाह स्मर्यत ही नो के ध्ट ए सुम्प ध्ट ती ना सो ता दो पदी प ध्दती नाल्या यो निज्ञत्वं दो शादि नां यो बित् विषया भारती नी स्ति ध्ट एसुम्ना दो नां यो बित्यु कथा विषये दे न्यु प्याह ती नमा

तद्व ह नाचि एव म्बलाकाणि देतः सक म्बिला इति ॥२०॥ ॥द्रश्रीमा ज्या २१॥

नरायुत्राराइन स्वदंत्रा द्रियं चतुर्विधाभूत ग्रामिषि स्वद्नोगिद्रन्त्राया श्रीम्पधर्म मन्तर तोवोत्यित्त द्रश्नीनादाह ति संख्या नादर इत्या हु द्रश्नी दि ति ॥२ १॥ ॥ रहतीयत्राव्दावर्ति धाः संशोक नस्य॥ २२॥

तम्म्राचनरेजीनअमराइनम्बद्धानि कि ने से ध्वद्रिमात कं यञ्च स्वित त्नीमः यो इसंका उद्गित्राद्ध स्वद्भ स्वाणि सं ग्रहान् स्वद् ने पि क्षेप के पुरक्षेद्ध द्वपनः वस्पाद्धाः न विरोध इत्याह रिट-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S'3 Foundation USA र्षाः स्तः । (१३३) आ ३ वा १

गसामान्यायनिहयपत्तेः।।२३।। १३।६।

मानुशयाना मनरोह प्रकार मा ह जीती, ययेत माका श्रा माका श्रहायुत तो पूमंतिता भूं तितो मिटा, ततो वर्षेतीति ता ना का शारिमान: ता स्वस्व त्वं तत्मा म्य न्वति स्वस्य में विति प्राप्त सा भाव्यति वन्द्र भ राइ तेष्ट्रमा यं प्ररीट मुप भो अस्मिति प्रवित्तीय मार्न प्रान्त श सं मं सूस्मम् नित्त ता उप पत्ते, न त्वन्यस्यान्यभानो मुख्यः अअन सहपत्व दसा

दिनी वरो की सम्म व, वि पु ,वा व्याक। शेन नित्यसम्ब त्यात सार्वे को पपने, 131

147

पाक् बीह्यादिभागाय ने; जजनादि साइक्र्यन दे चैका तमन स्वाय गानुमा ना दि उतात्मा प्रत्य से ते ता जानिय में प्रति न्या ह नाती रेते न्या त्य मत्यं का तं जजना दि सहक्रों भृत्वा करिया गीमः सह मां भूभि मापतानी ति विशेष द रीना । व स्ता विशेष ने माने स्व हुई निस्प्यतरं द्र मितका रस्को नु सः हा न्या ना द दि माना ने स्व हुई निस्प्यतरं द्र मितका रस्को नु सः हा न्या ना द विद्या मता ने स्व र साम लामते ति स्व स्वा माना ने स्व र साम लामते ति स्व स्वा माना ने स्व र साम लामते ति स्व स्वा माना ने स्व र साम लामते ति स्व स्वा माना ने स्व र साम लामते ता स्वास्वा अल्यो ने न का तो ना व रोह । ॥२४॥

॥ अन्यादि। छितं अपूर्ववदीयं तापात्। १२५॥ नं तृ वेष्ट्रापिद्यावर देश भिमानितः, तत्र सुखदु, खभा जो भवन्यु ग अन्य जीवा दिन छित्रे वेशी सादी अनु शपितः, द्वात संत्राचे संस्कृ मान्यं तहदे वे, यीभ पायात् यथा कंत्रापेपवविष्णात् न तेषु कि नित्र क मेव्यावा दः वरास्ट इच ते एव ब्री साद्या विषय स्वा न्तरान्य मुखदुः, केवि भार्त्स द्वाह श्रु न्योति।। २५॥

॥ त्यायाद्व मिति चेत्न प्राच्यान ॥ २६॥

तन् यद्याहिसारियां गा सामारिकमा शुहं खाने एक हंद्र तिन समा न्यर्थमेन बीद्वारिन नमानु शिषामा मस्तु इ ज्याशं व्याह ख शुहु घी कि नेशं हिसाइ छा में। प्रमोध में थी; श्रास्त्रे क माम , गत् प्रकाल्यत्र छ मी; सर्थान्य देशका त्माहाव छ में, श्रास्त्रा के माजी पहि सांश्यां ध में, वं क च मुण्यन ममने ते न हिं स्यात् स्वी भूता नि इ , पुत्स जीती ति बे जा, तद्यवाहों जी सोमीय यश्च मातम ते ज्युत्म जीवाह चो कीव स्थित वि बण्य नं तस्मादिश्व ह स्विद्धं कि नि नास्यक्ष मंजातिस्थावर में नव श्वाह कराहि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

S

न ना तत्पतं तस्यकप्यवरणा न धिक्ते योक्तत्वात् अवो वी विसंस तिवात पत्राचिनामिय माव न्या माता घोषा सन्तपति यो रतासि चित्राद्य एवं भव तो ति चता पिनी असा दिसं स ते मार्न नवान मुखारेताः सि मानसमानति चिर्नातः प्राप्त कोन नोरतः सिडमनीत क्षमनुष्निर्ति। द्वारं या समानान्मानु मतानु यो प्रतिपद्यते तिरतः विश्वात्र मानंतनता द्वत्वी या दिवात स्वत्य वितेष इ.पाइ रेतः सि मिति॥२०)

॥यानः व्रारोरम् ॥२=॥ इति त्रतीयाद्यायस्यप्रयमः पाद रतः, विम्मानाननारं पोनो नि नियुक्त रतः, सि, म्योने रिपयरि मनुत्र चिनामन् श्रमका व भागायना पत्र, बाह यो ने रितिरम्सीय वर सारमसीया होते तस्माद याव मन्य तनाव रहिनी सामा वसर गन्दरीर मव मुखारा निर्मा संत्रत्वमानं गन्मनीत सिद्धम् ॥२०॥इर्रान्सस्य म् मार्गिने निनर्शार्गायमा थन निरूपराष्ट्रायमः तादः॥

॥अयदिनीयः वादः ॥

।। सन्वस्थि गहाही।१॥

जीवस्पतं सारगतिमद् पद्रिनाननारं तस्पेवनेद्र अवस्थामद्राप दक्यतेसय नस्व वीतिद्रम् पक्ष्य नत्त्र स्वा नर समाजा न पन्यान भवन्यवर्या रथमात्रात्यवः सः नतः इत्यादिन नवने चे इवस्ते विवार पाचिकी सीष्ट हता माधिकी जाते प्रवाध सम्म साइ स्थानपो ह्यार्लाक मी खान पार्वा सन्ताप वनी है। सन्यंत स्थिनसन्यव्यान मंग्रतथ्येवस्परिः अपरथान इत्यारिष्मृति एह्या ह्रुता सन्यं सी ॥१॥

13791

। विमातारं चैक प्रनाद्यस्य। १।।

न्याप व के विन्हारिवनः सन्त्य स्थान काम निर्माता एं यात्मान यामनीन पराव स्वप्न बुना गति का मं का मं वुरुषा निर्मिषाता वृतियुत्रार्यस्यकामा। कामानां नाका मभाजं करापिइति द श्रीनात् यात्रध्वनतीयकर्गात् प्रास्त्रस्ट छः नागरित स्याना

वं सू ता (१३५) अ ३ पा २ पाः सत्यायाः दृष्टः वाना प्राञ्चक र्रः वा विशेषाना स्वक्रेपत्या श्रामा स्वल्वा इजी मारित देश एवा स्वेष इति या त्यव जा श्राम्य श्रामितः प्रतिस्वा द्रीते च प्रांशंक ते विसीतं ति।।२।।

॥मायामा अन्तुका न्यंना नीपयक्त स्वरूपत्वन्॥३॥ समाधने माया मान भित्रियदुक्तं सन्देशस्त भी तानिकति । तनकारस्यो नद्रने भिन्धा इत द्रपडनात् द्रशका नित्त सम्यन्या तियुना वे त्रामियन्त्र भागान तिह्या माने वस्तु नियनानि द्वाप्रदेशने खाँ सम्मा यन्त्र न हि संचते ६ हद्शे र वाद पाइन कारांत्म भन्ते उति । दशलाभावात् नहिच नहिः कुलाया दमतेस्रीर, योते खुतेर हा झाहरेव स्व ध्रं यत्र यति व्यसम्मवाते न हि सुसस्य इत्या मा जेशा यात्र नश्तानारितं देशं पर्य नुंसामकी मनीत क्रविख्यागमनर हिताः स्वयः भूतः कुह बह मध शंयानो निद्यामियुत स्वय व ज्ञानान् यूमिमत्वासि न्प्रमुद्रम्भित्र यन्ययाश्वस्याशयन द्रा स्व प्रपत्नि न. स्वशरीर यचाकामं यरिनर्तनाइ ति प्रताम् न पार माचिकी इति वाहं कु लायम् की में ती नहि रिनक नायादि की स्वंका लागिनस्य युवास्तनः रजन्यां सुसा भारतवसे वा सरं मन्यत मुद्र नेमा यस्व प्रवड्सम्ब सरा वरतावाइयाने निमिनानि नमसीना सर्वकरिशाप संहार। त ख्वासामानाच्य रपाप ामे तिस्य मिलीरितः स्रान मनुत्यः सम्बद्धतं स्रान य सर्तिन तस्मान्मामानां स्वप्न पर्यामा ।।३॥

शस्यकद्याहित्रत्यस्त वताद्दः ॥४॥ भिन्नकाद्याहित्रवाद्याचिद्रा कुल्तराराह्णादी निधन्या निस्तर्य यानादीन्य धन्यानिद्र नि यदाक मेसुकाम्य पु स्नियं स्वयुष् पश्चित समिद्ध ना यानी मां तिसं स्वयुष् देत्रे ने युहलंकु द्या भिन्यादि पनिर्जीवि । ने मन्त्रदेवना द्वयित्र वानिमा सक्तिस्य प्राः सत्या प्रान्थाना भनीने द्रायानस्त, त्याप्यस्य प्रान स्य शुमा माजानं एनं नियदादिन्यावहारिक अपस्य स्वर्मक्रियाना माजानं एनं नियदादिन्यावहारिक अपस्य स्वर्मक्रियाना

या के श्रह्मजानात् व्यवस्थिति, स्नाग्रिकस्न या ते ग्देनं ना स्वत्य व तो ने वो प्रकामिदं सन्दर्शस्य भाषा मा नत्न मुक्तम् यद युक्तं प्राज्ञण्या स्विमोता ते तदसत् शुर् यन्ति द स्वयं ग्विम प्रवासि विकास पासा सन्वाति प्राप्ति के विवास पार श्वन्यात्ति म स्वन भाषा सन्वाति पास्त्र यो ति ने विवास पार श्वन्य ता तम् ए ष्रमुखु ना गिति द्वित्व मित्रा नो ने त्र सुत्तीः तस्य नु वा स्वया ता द नशुक्त द श्रह्म ति वहस्य भाव उप दि श्वते ता तमित्र विवास पात्र व्यास प्राप्त स्वया ता स्वया स्वया प्राप्त स्वया स

॥वरामिध्याना नुतिराहितं ततो ह्रस्यन्य निव ने या॥४॥ न नुनीनांश ई श्वराउशी अग्नि निस्कृति इन्य तथाः समान्यानेश्व धशकी एन ससामध्या त सांन्य हिन्युकी स्वश्व र खारि स्वास्त्री स्वित्य भिष्य ती तियाश चाह परित सत्य ध्यं शा क्रीआन प्रत्य समान जीनस्य श्वर निपरात थ मेलां ई ख्वर समान ध मेल्च ना प्रानिश्च तथानिस् ध्वे था ना तो राहितं तश्मध्या यता मा न स्वित्य स्वानस्य प्रवर प्रसादात संसिद्ध स्य कस्य निद्याचि भीन तिनस्य भावतः सर्नस्य विभिनते इतिकृतः जताहिई श्वर स्व स्वापरि जानाहन्य, सन्स रिज्ञाना स्वासि

कृतसाह इयरहणने तिरस्कृत ज्ञाने श्वायां भव तित्र नाह दहित्री स.म सेवेज ति तथापि प्रियाणकृत ना म स्व दहे यो गाइह न्द्रिप मना बुद्धि बप वेदना पा गाद्धास ति रस्कृत त्वं भव ति यथा प्रेर् हन प्रकाशन समर्थस्या प्यरिया गतस्य दहन प्रकाशने तिरिहिते मस्मळ्न स्पाणि बताद द्विकक कृति स्ति रस्कार; वाशको तीवाश्वर

यार न्यत्वाशंकाव्याव त्यर्थः ॥५॥ ॥तद्भागानाज्ञेषु तच्छते रात्मानिच ॥०॥ [3] २

स्वयावस्पायका सुष्मिमार तदमान इति । यन तत्सुस, समस्तः सम्प्रसन्तः सर्पन निजानाति स्वासन्ति नातीसु स्राण भव ति गामि, प्र त्या स्ट व्य पुत्ते र तिलेत पराष्ट्रसः स्वप्नं न कि ज्या त्यास्म स्वारा एवेक धामन तिरासासाम्य तदासम्यान्ता धन तिपात्र नाता ना सम्पार स्वका नवाहां कि ज्ञ न न दना न्तर मि ति चता ने तानि ता द्या दी वि वरस्पर निर व द्वा रिलाध न्या नि सु में स्वा ना नि उत

CC-0. Gurukul Kangri University Hardwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

的思想

वास्ता (१३७) अत्य पान्

तत्र स्मानिका चित्र मित्र प्रमानिका में मित्र प्रमानिका से मित्र मित्र प्रमानिका से मित्र प्रमानिका मित्र प्रमानिका से मित्र प्रमानिका मित्र प्रमानिका से मित्र प्रमानिका मित्र

गञ्जनः प्रवाधाऽस्मात् ॥ =॥

पत्रत्यात्मेवस्य पिस्चाम पत्रक्वा स्वाइत्स्नः प्रवाधः दुत्रस्तर् गा दिनि प्रत्रम्पति वचनावसरे प्रथाये विस्कृतिद्वा ब्युक्यरीने एव मेवेन स्मादा त्मनः सर्वे प्राशाद् त्यारिना सत्रत्युगत्यमित्रः सत्र न्यागन्द्वा यह द्वे तिन्तस्य पृक्षिस्चान विकल्पे न्यात्मस्व प्रवे धर्वे निनो पपस्ते ह्त्याहन्यत द्वि ॥ ए॥

॥सण्वत् कमीनुस्र तिश्र विधि भ्यः॥ ॥

यरं वसित सम्पन्नः सरं व प्रतिव ध्यते उत्त सवान्त्र न्यां वाद्र सिव प्रमेष
पाकित्र ज्ञानं विन्दुः जन्तराश्रो विति हो सिराणि ह्र पः पुन हर् रिशे सरं विन्दु रितिन नि यम साचे हा पी निष्ठा से न्या हसरं वित्वा ते कृतः कमीनु
स्र तिश्राद्ध विधि भ्यः पूर्व धुर् नृष्ठितस्यक प्रे शाः परे धुः श्रे यम्मृति
श्राति तस्मादेक एवं पूर्वी नु मृत स्य प्रने भो नरस्म एशा एक त्वे स
मावतः नद्यान् मृत्र कि न्यः सम्र ति पृनः पृतिन्या यं पृति
यान्याद्व ति वृद्धा न्ता येवस्त्र विद्याः सम्र ति पृनः पृतिन्या यं पृति
यान्याद्व ति वृद्धा न्ता येवस्त्र विद्याः सम्र ति पृनः पृतिन्या यं पृति
यान्याद्व ति वृद्धा न्ता येवस्त्र विद्या न्या प्रवि विद्याः सम्र ति प्रवः प्रवि विद्याः विद्याः सम्र ति व्याः स्पृति व्याः स्पृति क्षाः विद्याः स्पृति व्याः स्पृति विद्याः स्पृति विद्याः स्पृति व्याः स्पृति विद्याः स्पृति स्पृत्व स्पृति विद्याः स्पृति विद्याः स्पृति स्पृत्व स्पृत्व स्पृत्याः स्पृति स्पृत्व स्पृत्व स्पृति स्पृति

व. म. ता. '(यह) अ. र वा. २

॥मुज्यर्धसम्पत्तिः वारेत्रेषात् ॥१०॥ असि

ति सस्तानदन स्थाः जायस्वप्रमुष्माः नतु ची शरी सद पर्धातेनीतः पत्रोगी ्यवस्थास्त्र होते मुण्धा मुर्च्छिते : जि. मवस्पद्र ति चतु रन्यतम इ जिपास याहमुम्धइतिनजाम्तस्यान सद्याम् म्धतार् नि ये विषयानीक्षणत नवष्कारवत्यामकमनानान्यान्विवयान् प्रभ्य इसते हीते ह्युकारो हिर्षु मेवतावत्कालम्यतम्यमानोऽभ्नं भुऽधस्तु युन्यतम मिन्द ह मतानंत्काल स्वसिहा निकिञ्चिदवीद षामिति अञ्चानमिभन यति ध र रापाञ्चयताते ज्यतानयामक्त मान मत्वं मुज्यत्वं नापि स्वव्यस्यानः निःसंत , नात्नापिनतु थीं मरसानस्थात स्वान्यारामे व्य रोगई शैनात् मारी मुष्मिर्वित्वस्तात्वात् मुर्हितः कदा चिचिरमणि ने द्वापिते सवप शुक्त मण्डु रवन्त्री विस्कारितने तः नेवं मुशुसः यतः वारित पद्धरामात्रीत उत्तिष्ठति प्रताः परिशेषाद् पेयम्पतिः मुण्यति न नेपायुपरमा न्द्रातिवत्सवेव्हासम्पत्नार्वसम्पन् नसर्वसम्पत्नीवस्प ब्रह्मतपत्र निविधाना क्रिल् पूर्णन मु श पशस्य मुख्यतं अर्थनान स्यानारयसस्यति पर्धममादं ब्रह्म विद्रू चिन्त एवन्ते यमान्यमी अवस्या लोके पायुन देन प्राप्त दुर्वात मानगरापते ॥ १०॥

३ १ ॥ नस्यानतापियरस्याभपतिन्दं सर्वत्रिह ॥११॥ यन हारेग मुष्यादिषु नीन एकां उपाध्यय तमात् वाद्यातिन स्प्र नीस्वह्रपंनिजीर्यते सर्वकती सर्वकामाः सर्व गत्नाः सर्वरस्रतिस विश्व निहं पर्यूनमनराव ह स्वरे पिर्जारी निविशे खनिड्रम त्रो। भयनिङ्गम्बल उभयनिङ्ग्री उत्तान्यतर निङ्ग्युत्पन्य यहारुभय लिङ्गमितिप्रासेन्प्राहनस्याने तिनस्वत उभय मृत्यस्त विरोधात नाचि स्थान तः याचिमारुपाचिनो भषम न्यु वाचिना व्यन्यादृशं भवति नवस्वन्दः समि के ज्यून के कारिना ज्यस्व व्हा प्रतीन्य तरपरिशह समस्ति विशेषरहि तंनिविक त्यं व सर्व ववस् वाका व अंत्राद्भा म सारी मह पमवायं इत्यादि निरस्तम्वीव शेष मेनोप दिश्यते पता न न मिना हि प्रति निसंत् लाकात उपदिश्यानी नत्रा वाद्वस्वाउशकर्त्रवामनी भामनी वेशनारं नेलाकात्रारी रंजूत्या दे तस्मात्सिवरो खमें ने त्या रांकार न मद ति क्ताः प्रत्यकं अतहवनात प्रमुपाधि में दं ब्रह्म मदं एववस गाः साव याति भेरदर्शन निन्दायूर्व क मभद्दर्शन मामनिन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मनसेवद् माध्यां नहना नास्ति किञ्जल ध्दमाः स म्टन्यु च द्वायम स्माम्य चिन्यां ते नोमणी इमृत मणः वृह वा चन्द्वाय म व्यत्मं शारी ट सेनोमणाइम्टनमणः वृह खा इय मेन स चोणाना त्म त्यारि त्यतोनीम ज्ञाकारः शासीयः ॥ ४०॥ त्र्याचेनके ॥ त्र्याचेनमेने ॥ १२ (॥ समस्यिन ने न्याचेन मतद्वनात । १४२॥

किन्नेक्याम्बनाः मृत्यासम्दर्धमा व्राति य इह्नानेन प्रयानि भाका भा त्राम्योदितारं नम्नासर्नम्याक्तम् निविधम्ब्रह्ममेन त् इत्याहन्द्रीपनेत्।।१२॥ ॥ श्राह्मपनदेन ग्हेतात्यु धानत्वात्॥ १३॥

नन् साकार मृत्या सिव श्रेषमेवकिन्त्रस्यान् स्वत्र त्याहन्य ह्योते व्यस्पेते वकुतःत्रस्य धानः नान् त्यस्यून्त्रः मन सिवज्यादे निवह स्वतिवान्यानि निष्यु पञ्च ब्रात्मतः वयधाना नि नायोन्तर प्रधाना निर्ति व्यवस्थापि तेममन्वयस्त्रेत स्मान्ति विश्लेष भेववस्त्या। १३॥

॥ प्रकाशन न ने यथ्योत् ॥ १४॥ कात हिंसाका एकु तीनां गति स्तनाह प्रकाशन हित घया सीर प्रान्दे । वा प्रकाशः विष द् व्याण्यान ति ष्ठितानो न्युड् त्या घुणीधराम्ब त्यानेषु नेष्ठ वक्कारिमानं प्रति परानी एवं प्रति परानी एवं प्रवृत्तापि एक् प्रवृत्तापि एक् प्रवृत्तापि एक प्रवृत्तापि पराने प्रविव्या सु वा सि सम्बन्धान्त स्वा सामे प्रविव्या सु वा सि प्रविद्या सामे व्यक्ति स्व एवं स्र १ ता स्व व्यक्ति व्यक्ति स्व एवं स्र १ ता व्यक्ति व्यक्ति स्व एवं स्र १ ता व्यक्ति व्यक्ति स्व एवं स्र १ ता व्यक्ति व्यक्ति स्व एवं स्व १ ता व्यक्ति स

॥त्राह्चतन्मात्रम् ॥१५॥

श्रुतिरप्पाह चेतन्त्रमानन्ति दित्याह त्याह त्याह चेति वया सेन्धनपनाऽ न नरोऽनाद्यः कुरस्तारस्य न स्वैनम्बा त्यरेऽय मात्मानन्ते रोऽनाद्यः कृ तनः प्रज्ञान यन स्वेन्या दि॥ २५॥ ॥ दर्शयति अख्यो त्युपिस्मय्येते ॥१६॥

निविशेषतादेवपरप्रतिषेधेनेवब्रह्माक्तंबा व्यक्तिनापः श्वाद्यः
भवन ने वब्रह्मप्रावान सहावानाधीहि भोद् तिसत् श्रीम्मम्व
तंहि दि ती पेवात्रतीयेनावन्न उन्नान् म्रात्वज्ञन्तन् विज्ञानाश्च
उपश्रान्तोऽ प्रमात्मीतिस्म्रतिर पित्तेषं प्रतत्म्वश्म्यामियञ्ज्ञान्वा
म्रात्म प्रमृते न्यु तादिमत्परम्ब स्मान न सप्तन्ते मामाहोषा
मपा स्र श्रात्मां पश्चासिना एक्से मून्त्रभू शोर्यक्तं ने नं मां त्रात्महे

सिर्विष्ट द्रीयतीति॥१६॥ CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ अप्रविज्ञापमास्यिकारिवतः॥ १०॥

एतर वात्माने तन्यह्या नि विश्रेषा इत एवास्यापाधिनि मि ना मणा धिकी

एतर वात्माने तन्यह्या नि विश्रेषा इत एवास्यापाधिनि मि ना मणा धिकी

पिवश्रेषवता माराप जला स्विज्ञा दिव दि सुप मो या दी प ते मो स्वशास्त्रेषु य

या सुपं ज्योति रामा विवश्रवा ने पा भिन्ना वह धेको नु गळा । उपाधि

ना ब्रियत भर ह्यो देवस्ते चेव व मजी इय मात्मा इ उपादि त्यास्त्रात्री

॥ अप्रावद शहरातान् न तन्या वस् ॥ १०॥

तन्त्रमुक्तः सूर्यकादि दृष्टानः सूर्यादिस्तत्य चाम्तं निष्नु ष्टं सूर्रेश्च जनम्युत्य क्षामितियुक्त स्तत्यति निम्ब भावः न्युन्तु न जात्माम्ती नजा स्माल्पय म्मृता निष्नु क्षाउपाध्यः सर्वे जत्ना तः सर्वो नन्यना चे त्यात्राङ्कातेत्र्यम्ब व दिति ॥१०॥

॥ महिद्वास माद्वा मन्त भी मारु भयसा मद्भारादिवस् ॥ १००॥ निहृष्ट न साद्य प्रमेश शेरा ही नित्त स्य मान्त विनेत्र सित्त स्य मान्त तृत्र माणि श्री का स्यानस्य में हिद्धास भा कृत्वे न विवस्ता तरा श्राज्ञ त्र सूर्णी जल यद्धी वर्ध ते जल हा से दूसित जल ने चल ति जल में दि भा धते इ ति जल प्रमेश जी बिधा घी भवति न तु पर मार्चित ; स्पिस्य तथा नं स्वस्पुर मार्चिती हिस्त में कद्म मीप सत् देश द्युपा ध्यन्त भी वात् भज इ वा पाचि प्रमान्त यद्धि हा सा दी नी ति समा पत्ते यद्धी ति ॥ १००॥

॥दर्शनाच्य॥वन। मृतिरेनाह बह्मामोद्देश मुपाधि व्यन्तरनुमनेशम् ष्ट्र रस्त्रेकि पर् मरस्र क्रचनु व्यदः नु दः सपसी भून्वा पु दः पुरुष म्यानिश नि अने नजीने नात्मनानु प्रिचेश निच तस्मा सिद्ध में के लिद्ध में ने ब्रह्म ना भय लिद्ध मित्या हिश्री नाहीति॥ २०॥

उन ६ ॥प्रकृतेनावत्वं हिष्रतिषधितततोत्रवीतिवसूय:॥२१

द्वावब्रह्म रोग हते मूर्त च्रेनम्र तिशे न्यु पक्रम्य महता प्रपञ्चन छिला म् तेनो न स्रां म् तें वाय्वा का शाला स्र रां म् मूर्त व्य मूर्त स्य ह्यं , व्यू म् ब्रह्मा पद पूर्व द्दमुक्तं व्यू पात व्यादशो नितने ता ति न स्वतस्मा दिति न त्य न्यत्यरम सीति तन्त्रिं ब्रह्म रोग ह्यं व्यव्या भयं निष्धि ध्यते उ तेकम बत्र ना व्यव्यत्वे किह्यं निष्य ध्यते उत्र ब्रह्म वा य ति षि ध्यते किं

भ्यनिश्च हानु हान्य स्थानित स्थानित न स्थानित का स्थित में न्यू यह होने के स्थानित का स्थानित का स्थानित के स्थानित के स्थानित के स्थानित के स्थानित के स्थानित के स्थानित स्थानित के स्थानित स्थानित

कर्मसुउपान्धिष्यम् विशेषाद्रवावभा सन्तेनस्वाभाविकीमविशेषात्मता

व.स. ता. (१४२) अ.द पाद अहित एवमी पाधिक मिरावाय मात्म भेदः। स्वतं स्वेकात्म्य मेवनेशने षुन्य स्वासात् न्युसक् जीववाज्ञे पारभेदउक्त स्वस्मात् ॥२४॥ । युतो इन नेन तथाहि जिङ्गम् ॥ २५॥ ्यूतः स्वाभाविकत्वादमे दस्य प्रदस्याविसाकृतं त्वाच्व नीवः पात्रेना ननोनेकतां गन्हतितथालिङ्ग मस्ति वया हने तत्यरं ब्रह्म नेद्ब्रहोत भवतिब्रह्मेवसम्ब्रह्माच्यतीन्याहः चुनइति॥२५॥ ।।उभयवपदेशात्वहिन्गडलवत् ।। २६॥ मं एक संरा धक्याने प्रतान्तरे स्वमत्र शुद्ध स्वमाह का चित्र राजपि व्यते क्रिवर्मदः उभयम व्यहिक् एड लनत् -प्रनाचिमनितृमहीते न्यहि रित्यमेर्:कुराद्रलामोगवांश्रत्वादिङ्ग्तिमदः॥२६॥ ।। प्रकात्रा भू पबद्घाते जस्वात् ।। २७॥ च याष्रका त्रः मानि त्रः तर्म्यः स्विता चनात्यन्ति भिन्ते उभयोरीष तेनस्वात् व्यवचे भेद्यपदेश मानो तद्वद्वत्याह शकात्राति॥२६॥ गपूर्ववद्वा । । २ च । । प्रकाशादिव चार्वेत्राच्यामितियू वेवद्वियाशित त्या हत्या स्यवियया मास्य उपप हाते इत्याह पूर्व बरितीत । २०११ ॥प्रतिबंधान्य ॥२०॥ मतः या समादातमना इन्य होतनं वृति ये पतित्रास्त्रं नान्योतोष्ति इगुन्या दिनतिनेतीतिब्ह्ममानपरिशेषा च्येनिम त्या हम्रतिबंधादिति॥नेभी अ ।। परमतः सेत्नानसम्बन्धमद्रमपदेशे म्यः ॥३०॥ कानिविद्यान्यानिव्रस्ताः। परंत्रुत्यता वंत्र्यापाततः यानेवाद्य नीत्याश इते परमत इति परसार तलाना मन्यान मे नकतः सत् नमान सम्बन्ध मेशनांवापदेशात न्यूय पञ्चातमा मसेनु विंधुनित न्यूव सेनुं तीर्नी व्यनाता नमसेनं प्राप्ति एवं तरेन क्रह्मचतु बार ष्टाश परिवाडक क नं इति उ निम्तार न्यद्विता का बीय गो नियता द न्यत्स्व तिस् यथानस्त प्रात्नेनात्मना सम्परिष्वक्तर् तिसम्ब न्यं उक्तः सचीम न सम्बन्धिनो भीवति असीपि भेदः आदित्य पुरुषो रूपाते वस्तीषपुरुषद्वारा वादारा दोचयो में दादीप मेद्द्वित्राङ्गा ॥सामान्यान्॥३१॥ मन्यापि समाधने सामान्यान्विति एकमेना द्विती येष्ट्राति ध्वः न्यूनन्यत्वे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

निर्धारित सित से त्वारित्यपदेशः सामान्या त साद् त्रयात् भीताः

मर्वविधारकत्यातः सनु रिवसिष्ट्राः एवमग्रीपे।। दश्।

व. स् ता. ८१७३) अ २ पा २ १९ उपाधिभदाद्भेदयपद्भा

157

।। शुद्धार्थः पादनम् ।। ३२॥

उत्मान व्यपदेष्रोयः मा व्यवासनार्थः नयुनने ऽ निर्कारे परामित्मानं ममानतिरु त्याहनुद्धार्थेर्दानी पादनत् घषाकार्थी पंपापादादिषिभा जोव्यनहाराष्ट्रीसहन् ॥ ३२॥

॥स्वान विशेषात् प्रकामादिनतः॥३३॥

सम्बन्ध त्यपदेश मेदव्यपदेशियाः समाधा न माहस्थाने निनुद्धारुपा धिस्वान योगात् उद्गू तस्य निशेष निज्ञान स्य उपादु ध्युवशमेउ यशमर ने ति उपाधिक उपरमातम् ना सम्बन्ध द्रत्युप चर्म ने प्रयाद्यकाशस्यापा ध्युव श्रमे मेद्द व्यपदेशी ने हत् मेदव्यपदेशाच्यापा धिक द्रत्यर्षः ॥ ३३॥ ॥ उपयोग्रम् ॥ ३५॥

उपचरात्र वार्यम्बप्रकारः नान्यार्शः स्वमप्रेमीभवती त्यादिभूते रिन्पाह्उपपत्ति।३४।

॥तशान्यप्रनिषधात्।।३५॥ एवं भेदं निराकुः यस्त्रणक्षंहे त्वन्तरेस्मापमंह रितेतथिति सण्वाधस्तात्सर्व तं षराक्षेत्रा न्यनात्मनः सर्वे वे दः) वृत्तष्यवेदं सर्वे नेहनानिस्ति किञ्चन, यस्त ,परंनापरमिति कि जित्रिद्धादिवाकाश्चाति वस्त्वन्तरम्बारयन्तीत्यतो

नतत्वान्तरमिति। १३५॥

॥ प्रनि न सर्वे जतात्व मायाम शव्यारि म्यः ॥ इ६॥

हते - प्रने नितिस्त्वा दि व्यपदेश निराकररोनि ज्यन्य प्रति षेध समाप्त्रप्र
रात्वसर्वे जतात्वम व्यात्मनः सिद्धं मनित व्यपदेश स्य मुख्य त्वेत्रात्मनः
परि किन्तत्वं स्यात् - क्रायामश्र व्यात् सर्वे जतत्वं सिद्धं व्यायामश्रवस्य
व्यासिवचन त्वा त् यावा न्वायमाकाश स्तावाने मा उन्ति द्यव्याकाश,
ज्यायान्दिवा ज्यायानाकाश हिनित्यः सर्वे जतः, स्यार्ण द्वात्मा अस्ति नः इत्यारिभ्यः ॥ ३६॥

॥फलमतउपवत्तेः ॥३६॥ विनि

॥मृतलाळा।३०॥

स्वार्षमहान् बात्मार् नाराम्याम्यान्यादियु स्पर्कतन्तरात्यान्युते म्रेश्वरादेव कर्नाम त्याह भूतलीत ॥३०॥ ॥धर्मेश्रीमिनिरतरम्ग ॥३०॥

ने मिनिस्न धर्मा धर्मयाः अपूर्वद्वारा फलपार त्वं योक्ति वलादिया व्यवला व्याहत्याह पार्मिति च्यू तरम्बद्धते । उपयत्ते प्राईश्वरस्य पत्न दात्त्वने यामने ई रापापातात् विचित्र कार रणादिन त्वाच्या विचित्र का विस्वत्ययः।। ३ गी

॥पूर्व नुवादरायरोग हु नुन्यपदशात ॥४०॥

वादरायराम्नु जूर्वोत्तामे वे त्रवर स्य पत्लदार्य ले वे सम्यन दिरामा पातात् विचित्रकारसाधीनत्वाच्य) व मन्यत् कृतः धर्माधर्म कार वितरत्वेन पत्न दातर्व नच हतु व्यपद्शान् ए षउ एव सादुक मेकार पती त्यादिवा हे तुल प्रति पादनात् यापायां यां तनुमात्ता म्युयाचित् मिन्द्रीततस्यतस्याचनांस्युद्धांतापेन विद्धाम्यरम् मतयात्रद्वयायुक्तः तस्याराधनमीहतेलाभताचततः कामान् मपेन विहिता नितान् इतिसमते स्वतद्वनेषवर स्पष्यत्वदातालं यत्व म्बनमानुहणाः प्रजा समतीति नवे लम्पादिवेष प्रस किरित्याह पूर्वन्वितितदेवमधिकर गाचतु छरान त्वम्पदार्चः शोधितः त त्य रार्चापि, चयमनब्हारागि निरुप लं दितीयन निष्धाविषप तं वित्यतीयना दितीय वं बतुर्यन सन्तर द्रापां के पे पत्नरात त्वं उपलक्षरात्वा चाक्तिमितितत्वं यदाची शोदि तो ॥६०॥इति व्हास्त्रतान्पर्यविवरशात्रतीयाध्यायस्य द्वितीयः पादः

्रा १ ॥ मर्ववेदान प्रत्ययन्तो द्वार्यावित्राचात् ॥१॥

एतावतावुसतत्वं प्रतिषादितं इदानी म्युतिनदान्त विक्तानानि भिरासेनवारू मी वे बार। ननु ब्रह्मरायेक त्वेष्ट्या रिते कुत्र भरा भर बिन्तानसर्रित्तमगुरानिस् निषया प्राराणित विषयान चिन्ता युनकर्म भरावेदु पासना नां भेदा भेदी सम्मनतः तद्वदेवो पासनाति दृष्टादृष्टकनान्य रिप सम्पन् राज द्वारा कममाक कतान्याचे तनपूर्व वसः शन्दान्तराम्यास सं त्यादी नि पदन

त्र.स. ता. (१८५) अ.इ या.उ प्रीमान्य माचि सम्म ते तरियम तासनेयम को बीतकं इनियम मिविद्याणां का चित्राष्ट्रमामन निर्दूर्यादिस्पमदः एव न्यर्भमदाप विरोजनारि कनम्युन हतादिगदी निज्ञानस्य उपासनस्य मह ति प्राप्त सर्वव्यास्वाभागानि वि ज्ञानान्यापि भिन्नानि कृतः वोद्ना य विश्वषात् ्या दिनात्राखाना साधिकर्या सिद्धान्ता ना व्यक्त दहतवी महान्तेय विनाम स्वाद्या भेदहत्वा भारत स्न तना मास्या दिति प्रथम का राद्यन निराकृता;इहा वि निराकिर खन्ते तसा लोपासनागर्दइसगर्सने रिते ११९११

गमदान्ते तिनन्तेन स्वामिषा ।। २॥ सर्वसम्बद्धाः निर्द्यामदाने नां यवापन्तामि निरायां वामसनिधनः वरुमात्री व्यार नितास्यात्रिरवात्री भीव तिर्तिह न्या सा-नामन-तीतिनवान गुरागपसंहारः पद्मसंखाविराधान्। गा प्रामास म्बाद स्वाय व्याण्यानु रोजा के नशुः खात्रम मां सिपासानी रुन्तामा सुमान निवानसने यानाः पद्धम प्रायारे तीने प्रभाष निरिति-याम नन्ति विद्यामदर तिप्रास नेत्याह भराने नीति नमदायकत्यामचित्रायां बाडिता ग्रह्मा ग्रह्मा न युमाप दउपपरा ने नान्वारियनां तस्मादेक विद्य मेव ॥ २॥ ॥स्वाध्यायस्यत्वाः,वेनहिसमाचारेऽधिकाराच्यसन्वनियमः॥३॥

यो व्यक्ता त्रिरोज्ञ नादि प्रमिनदः, सावाध्य य नार्षरुवन विसार्थं यतस्त्रणात्वनसमानारवेदवत्पर्यान्यं ज्यार्थेर्नातानान्यःते य भते ने तदनीरी अतो भी ताइ ति घयामीर्याहपः शतीदनानाः ससम्वावदान्तरोक्ताः ने तायसम्बद्धाः च्यायर्वितीानामाम् नियमानी तहती तसमात नियो कां द्रांगाह स्नाप्याय नि ॥३॥

गद्रायति नगरा वहापि विहोक, वन्द्वीय ति सर्व वदा यत्मदमा मन नि एत मेननह नामह , युन्य मी मांस ने एतमगान ध्वरीन एतं भाग न ते इ न्हामाइ ति एति समानु दर वन्तरङ्ग हते द्वातस्य भयम रतीत्यारिद्र त्याहद्रश्यतीता। शाप

113प मंहाराची भेषादिषि त्राबन, समानेन ॥५॥ विरोक्ये स तिष्या जन माह उपसं होरे ति छवं सति विरिश्लावनत् त्य विहासना दि धारी गापिन उपासना गुरामना निताने सित तेतन्द्रशिवकर्त प्रयोगे उपसं हारोधिव खाति व्यक्ती भेदा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

व.स. मा. (१४६) अ.३ वा.३ ॥ त्रुत्यवातंत्रवादि तिवेला विशेषात्।। ६॥ वाजयनेयक्ता जादीन्यासाम् स्यापित्द्र तन निन्द् लामुख वारााः परिमहिनाः न्य्र यहममार्सन्यं पारामुनु स्लांन उद्गायिति ब्रान्तान्याचि इतरान्तिन्दः ना मुख्यः प्रासाः चरित्रहानी प्रचह्य रुवायं मुख्यः पारा। १ तमु द्वाचा मुवासा हा किर इति मेय नापि प्राता वास ना व ती पता त्र कि कि या भेदाड भेदीना, उद्गायस्य करित्वन प्राणामामनित्वन्त उद्गिरीया जसने येउपक्रमात् क्रान्ये उद्गेय से नोपक्रमः तमुद्रीयम् वासान् किरे इत्युव क्रममेदात - प्रन्यमाः नं शन्दा त निया भद्दीत मास न स्तावता विशेष गा विद्या भरे भ वितु मह ति स्तरिश व स्यापिन इत्रास र्श्राना हा दान्य पिकार त्वंलक्ष प्रांता एकमव विज्ञा में मर्वभारताष्ट्रम् मर्ने कर्म तिन दिः याहन्य न्यव्यति ॥६॥ ॥नवायुकरसामेदा,परोवरीयस्वारिवः ॥ ११ ११ कान्दान्य मिना मि, यहदस्य मुझाय मुयासाताः युद्राचा वयवस्योपास्य ल मुद्दा पुनरीय सारिवके दि यशीन हषासान्दिवानां ता प्रसिद् यन नि हपारा न्यस्तासान्त मंत्रामम्काषाराम् द्वायम् वासाञ्च किर्द्रस्य द्वायावय वे पारा दिल रिन्यु क्तं यह दार राय के तु उद्वार्थ मात्रप्र गात्तानो धुद्राचा पासन मि ति निनेदित्य विदेव तिसमारवा वाएक त्यां व्हा खाद्वयं प्यक मेनो वा मन विति वासी व्याह नवीतनेन्यं किन् विसाभरः प्रकर्शा भेदा न प्रक्रमण दात् यतः द्वान्तात्रपे अवयव स्थापास्यत्वे प्रकान्तेय इ दारतपने उद्गायशन्य मा ने साम प्रमार सन ल हमें द्वी य भाग उपकाल इति वेद्या से दः प्रयाकारा, पतपराां म ए वपरावरायान उद्गेर यः म राषा उन नाइति परावश्यस्त्रगुरा विश्री छोई। यो वासनात पिन्नं त्याद्रमी

परावरा यस्त्वगुरा विश्वा छोद्गा वासनात पि न्ने त्या सर्वा प्रमानात प्रिने त्या स्वाप्ता स्व में वे जानी

यके खिषा ।। ना

॥मंज्ञातस्त्रनहुकमित्तत्त्रतद्विष ॥=॥

नत् मंत्रामा समास्यामा एक तार्वे व्यपि ति तन हु उत्तं परोवरी यस्वादि वत्र तितन्य प्यासंत्रे वे विवस मेदस्य स्वाद द स्तद्र द्वापि मंत्रे क्रीपि मृत्तान्तरा तन्त्रां त्यल्य स्त त सुन्यन्तर मध्यनास्ति इत्याह संत्रिति॥ ।।

खा मित्रेमते दसर मुझे चम् वासी ते दु मारी जासरे दीच अद मंस् रेवप समर्प के मी) सा मान्य में दिन कर रापं भुनं ते ने कि नाम ब्रेस तिन र ध्यासात ते दिकम्बाबाधान अम्रोप्त सम्यासा पि तिन ते उत्त भ्यानी व स्त दूस त्येक त्या ता उननी तो ता ता ता मिति विद्राल सा विद्रोद्धा भावा दि ति सं प्राय निया मका भावा र नियम इति प्रास्त स्व विष्मु प्र स्र स्था सनीत् विद्रो खपसे उद्गाय श्रम् स्व ते रववने तस्सा सिन कु स्र ते से ग्रासा व्यव हित्त ता स्वता यां तो रना ता ज्या स्व व्या सिह तो विद्रो स्व सा भित्त समन्त्र सं पर ग्रामा दिश्व स्व इना नयने स्व ॥ ने।

महिना संदाद स्वर्गमा १९०॥ अर्थ बहुदार रायकारो द्वाराण पासनायां विशिष्ठ का पिशु सा उक्ता रेतर यंको बीतकारो द्वाराण पासने ना नक्ता : उष संह ते व्या न ने ति र मं ये दे ति स्वशारा का ना मवग्रह राण नो पसंह ते व्या इ ति प्राप्त व्या ह स्वी मे दे ति ज्व स्वर्ग के तरे ियता मिष उप संह ते व्या : कुत: सर्वन प्राराण स्वेक त्या विशिष्ठ राणा गांत्र दिस्य त्या ते देव दत्ती म्यूरा पा मध्या ययन कुल पुन मी हिष्मा, यां दृष्ट इत्य ज्वन स्वाप क जाप ज्वा पक को ने व व्या भिज्ञा यो ते द्वार शिस्मा देव प्र वा न स्व

११०प्रामन्दादयः प्रधानस्य ११११। विस्

ज्यानन्ते त्रह्म हात्यंतान मनलंत्रहात्मादयः ते ति त्यकारो पहिला हो प्रज्ञानं त्रह्मत्यादि के तरे यक उपसंह तिन्यान नेति नामनीभामनी त्यादिन न्ता व संह तिन्याद ति प्राप्ति उप संह तिन्या द त्यार ज्यानन्दाद प्रश्तित त्र प्रभानं त्रह्म ज्यामिन त्र तः उप संह तिन्या नामनी त्या द्यारा दे यत्ने न वि कि यमान त्यात् न्यान स्थिता ज्या नन्दा द्यस्न प्रतिय ति पत्ने न वि कि यमान त्यात् न्यान स्थिता ज्या नन्दा द्यस्न व. स. गा. (१४३) अ. ३ वर. ३

। सिया हि। स्वास्त्रा सिरंप वया व व यो हि मेरे । १२॥ न वान न्दं प्रकृष्णा काः सिया क्रिर स्वार्या मि पर स्व राणेश्वा भोक्ता राण्य पा वाप विता पवित स्वा उपत्न भ्यत्ते तो व स्वति भरे सम्भवतः वस्त वीभ न्त्रं न वेते ब्रह्म थ भोका शदा मी स्वति हत्युक्तंत स्यान्ते प्रसंहर्णः॥ ।।इतरे त्वचे सामा न्यात् । १९३॥

इतरे त्रान न्तर्यः त्यर्थस्य सामान्यात् हेन्यतः । सर्वत्रस्याः प्रति पत्तिमात्रप्रयोजनगहितेद्रत्याहर्देतरित्वति ॥२३॥

॥ अस्यानापष्रयाजना भागता । १४॥

।। भागाना का मार्थ।।

यतः शबसर्वेषु भूतेषु मू होत्मान प्रकाशतो हु श्यते त्वञ्चापा श्रम वृद्याम सम्मास् द्वाद विभित्ते त्र कुर्वे त्या स्म शब्द नोक्तात् न इस्क्ष्यतिष्य व्योहानिक्ति हित्याह न्यात्मीत्। १९५॥

गत्रातमारहीतिरितरवद्वतरात्। ११६॥
त्यातमारहीतिरितरवद्वतरात्। ११६॥
त्यातमारहित्तवर्गायात्र त्यात्र त्यात्र त्यात्र त्यात्र त्यात्र द्वात्र त्यात्र त्यात्य त्यात्र त्यात्य त्या

50

॥अन्वषादितिवत्स्यादवद्याद्यात्।।१७॥

गमान्वपान्त पर यह र्लं रृत्युक्तं दूषमिति अन्यस्ति पर यह रामिन

कृतिः अनद्यादरापत् पर यह रेलं हि प्रायुत्यक्ते रात्मेक न्यावधाररापम

अञ्चरम् नावकल्यते त्याक्त स्व विवचनं महामृतस्य स्थानन्तरम्

पोच्यमे सिस्त मेन पुरुषंबस्य तात् मपत्रपदि मं मदर्शिमितिर्षेष्व
असे षदन्दद्व त्यादिप्रता नंब सित्युप्यसंहारात् व्याख्यातान्त रम्भा स्व
दुष्ट्यम् ॥१६॥

।। कार्याकार्य केम ।। १२। विका

कान्याना माना यत्र स्वेन न खात्र विधान खानी एता हुत्स्य स्त तेन मित्यापिना प्राण्यास्यान माना यत्र स्वेन ना सहार खाने अचान्या मनिन क्री निया च्या खना : खाना मत्य हिर जा ना ना मन्त्ये ते मेन तरन मन श्रंक ने नित्य में तस्या हुत ए हिर खाना हुत्य का स्वार हिर खा हिर विधान श्रंत के स्वार का प्राण्या स्वान श्रंता हुत्य का हिर विधान के स्वार में के स्वार में विभाग का स्वार का मार भयम विभाग कि हिर कि विधान का के स्वार में के स्वार में के स्वार खाती हुत्य का स्वार के स्वा

वमन्तिनिवर्तमानापदेशात् ॥१०॥ १०३० । समानस्वज्ञाभेदात्॥१०॥ १०३०

बान सन यसा रिष्ट्र त्या विद्या यां जुला। जूण ने सन्या सात मुवासीत प्रतामयं याला प्रिरेश्य भारतीले त्येन पाइपा वन सन्छा सामे व प्रतामयोऽयम्पुरुषा भाः सत्यः तिस्ति न्तर्नाहे देव सण्छा परियानः सर्वे पिद् म्पु ज्ञास्ति यदिदं नि द्वीतित निक्त मुभयने ना विद्या मुलाप संहारपा उत्त हे नि हो मुला नुष संहार म्रे ति संदेहे वो नहन्त्रा पत्या निया भदः मुलान्य वस्या न एक ज्ञास्त यां एक जातीय मुलानां व्युध्ये स् निद्र सेदाभावात् वोश्व हत्त्री दु निरे नियाभदः एक ज्ञान्य संहा रहति प्रासे ज्या ह साम नहित च्या भिक्त स्वामेश्व हत्त्रा मा एक निया। मिन्य ते न्यू परम्या क्या स्था मिन्य हित त स्मा द्वियो काम् १९००) । सम्बन्धाद्वमन्य नापि ॥२-॥

अ वहदाराणकत्रस्यम्ब्रह्मस्यवक्षम्य सत्मिवसाया पाणिदे विकस्यम् स्मान्य स्मान्य

।। नवाविशेषात्।।२१॥

पर घर तस्मिन्मराउले मुस्बर् म्यासम्पापिन बद्हीरित तः इतेन माउलस्य मेन यरा मध्य तस्ये ननाम निये खडणिद स्र रूनं योउपर क्षिते सन् पुरुष इत्युक्त म्यास्यां पनि बद्ही स्रोतित कन्ने ना सिष्ठा स्यास्य परा मध्य न्या हिल्ला मिला खाः उती निये करने न वेद्यस्य बहुतात एकत्वे उत्य स्थान विशेषसा ना माविधानाता स्थाया साम्यहे विक पोर्न्स विशेषते नामनी न तुत्रियोह प संहारो दिना यथा तो के गूरोह पास्य स्थे कते विशेषते स्वापनार विशेषता स्थापनार दिस्तासीन स्थापन्य तेन्या सान स्थापनार वादा स्याइत स्थान विश्वास्य नित्रित्त त्यासीन

गदत्रीयतिय ।।२३॥

विद्येनिया प्रमाणां यन स्पाति निक्र द्रिया स्तार पाइ द्रियतीति तस्पेत स्पति क विपद्म व्यक्षपम् वानमु व्योगे व्योगितो जे व्योगयना मतन्त्र प्रमित क विद्यानिहार कं अप सादित्य स्थान प्रिक्री है न व मीत न्यान्य सिन्तनु पसंहायान प्रवानिहाति दे क्रीना दि स्पष्ट क व जता न स्वादि न स्पिप्त खेड पसंह र ति तस्तेत स्वात्मादि ना तस्मा ह्यान स्थिते द्वाति वदी ।। 23॥

॥सम्मृतिसुव्यास्ययिवातः॥२३॥

त्रामायनीयमिनेने णु ब्रह्म न्या हो सामर ता ने ब्रह्मा ने ने खाने ने ब्रह्मा ने के हार र ब्रह्मा रिहे ए प्राप्त हो जिने ने व्या मिने ने के स्वाप्त के स्वाप

्रायुक्तविद्यापामिननेत रेषाममा मान् ता त्री १२६ मतावत्साम्यता दिशुसानामन्य ते माडीपत्रामितु स्वादि विद्यासूयत्त्रभ्य मानि चे कन्नाभाना ने प्रसंहार वह कि कन्न माने सोप संहरिका व्यमं हारोन स्पात प्रता, सम्मठ न्या दे ने वसंहार भिर्म्या २३ भने का प्रविद्या त्रेय विष्य प्रदेश प्रस्था हमा प्रमान माना माना ता १४॥ ले जिसे पके पुरुष विद्या त्रेय विषय कि विद्या उभय समान प्रमान प्रमान कि विद्या उभय समान प्रमान कि वाला विद्या उभय समान प्रमान कि वाला विद्या विद्या वाला के व्या कि वाला कि वा

गाहानीन् पायमशन्द्रशेष्यन्वात् कृशाद्धन्द्रस्तुन्युयगानव त्रदुक्तम् ग्रेश्वी

क्यायिनः परन्ति तस्य द्वाः दायष्ट्रपयं नि ष्ट्रहरः साधुकृत्यां दूर्यन्तः यापकृत्यां त्रयमर्थे तस्य र्धनितः प्रजाः प्रज्ञस्यानी याः सर्वे द्यारिशनः तदीय वित्तं यत्राचात्रपं ग्रह्मिनि तारिष्ठनस्तु अप्रवह्नरोमा-शिविध्ययापंच न्द्रवराहार्म्स्वात् प्रयुक्ता वारीरमिति, न्याचर्वशिकाः तदाविद्वान्य सायपार्विद्या निरन्ननः यरमं प्राष्ट्यमुपेति निरन्ननः समावित्रमकार साममेरहितः हानी षरिक कप्रायपायमाः इतरे पुरु हो स्वीकारा नाष संहतित्यः प्रतिषु असे स्वीकारस्या सुतलात पर को स्वीकारवाका ना सम्याविद्याया मा हितं त्यागवाका ना निर्मुताविद्यायां स्तरा के वलरातीत्र्यमाराणयाँ उपायनं जो पसंहते यं इतिपासे न्याह हानो तितिसत्या विदा गरः प्रतरवनवयमुणाय न प्रमुख्यत्यो वसंहरामः किल्वर्यनाद्त्वेन प्रयाक मत्यानेन बहावियास्त्य नेत चा स्वीकार शापि स्तुतिरेव भू नार्चवार न्वात यनुहानवा से उपाय तंनस्तामि तितदसत् तत्युक्त दुद्कृते विधुन् तेतस्यिष्यात्तातयः स्कृतमृपयंति प्रियाइ व्हात मि तिको बीतकी दर्शमात् तत्रव्यात्राक्त प्राप्तिने तापांत स्माइपापन म्बापसंतरः सर्वत्र व्यर्थवाद्विनको बीतक्यां हानत्रे बाला त् उपायनशब्स्य प्रचा भालन विनां कु शानांस्तो यसं रत्या करणार्थी यदेश यरि मित श्रह्मुनां वान स्प त्याः स्वतामाया तेनि व न स्वति चानित्व मात्रस्व रो। विशाया वनी नां खोडु प्वर्ष इतिविद्रोषा हो उ न्वर्यः कुत्राम्ट्यने यावाकविद्वास्र कृत्यामविशेषेरा वोर्वापमें देवकन्तांसे प्या गा तियें जी द्रिमात् सर्व यत्त प्रयावा बाड शी स्तो मे के बा जिल्ला न का वि ममया जु बित सूर्य इ ति स्तेन सर्वन सर्वन सर्वन प्रयाना इ विशे बेरोप व जानं कृति बढ़ तमाये भारत्यस्त विश्वाया प्रार्श सर्वे त्वाया द्वां तथा वर्षः भामतीकारास्त्रस्त क्रिश्चार्यः स्त्रायं स्त्रायः स्त्रास्त्रस्त्र क्रिश्चार्यः स्त्रायः स्त्रा



भी थे। मामारावा तत्रेवा भावा तथा हि नेने ।। २६।।

व्यत्रअयात्रिस्पात् ॥ २८॥

ह्नत इति इति प्रधानियः श्वा ऽभ्याप्राधान त दा वाति दि प्रमानियो वासना भ्यासादि सपस्य मुक्ताप्त क्षयह तो : मिने हाः इन्ह्यानो ऽनुष्टां ना नुप्रपानिये जो तथाः श्वास्थाया द्यात तथा सुर्वे मेन माधना नस्यायां द्वति ता अनुष्टानं तथा मंभन्तियं तत्प्रवक्ते च मुन्नु मुतादि हानं में । एनम्ब निषम में भन्तिया स्पाय प्रदेशः । भूति संगीतन्त्र ॥ २ई ॥

मतर च वन्वप्रयथा स्वाधि शिद्या ।। १२०।।

जन चि १ ५ जीय व १ प्रमालस्या चि शिद्या मिया प्रमुक्तिया से केरिया में कि जात का जिल्ला के शिव का भी केरिया में कि जाति है। है। है जिसे कि जाते हैं। जी ति है। कि कि जो केरिया में कि जी है। कि स्वाधि केरिया में कि कि शिव केरिया में कि कि स्वाधि केरिया है। कि स्वाधि केरिया में कि सिता केरिया है। कि स्वाधि केरिया केरिया

अवियमः सेने हार मिन्द्राया मानाभाम् ।।३१॥ अगुवामिश्वयाम् अवतर चत्युनं तन्तीय सर्वाम् देवनानाति इत यम मधुविद्या शांदि त्य दिवयाम्मितः भूता तमेव पारिवयाम् निषुता न तालु मनीमित संक्षेप यमभूतं त मे वार्गतः पुनरागत्। अम्या सर्वा सर्वा सर्वा वात्र प्रस्तात् द्वात प्रापु आह!- अनियम हीत, सर्वास्त्र नाष्युद्ध प्राप्ति कलामां मालियां सविशेषण देवसामा म्या मिन्य वीत कृत । शब्दानुमानायाम् , भुति। पति भ्याम्, तद्य इत्यं श्वद्रिति यञ्चालेन विद्यावतं देवयानं प्रतिपाद योनी श्रीतः, विचे में उर्णे श्रद्वातय इति उपासत इतिविशानार शाल मार्रिमाच पुने : मह समान मार्गेना रामवात भ्यात्वा प्यांतिका नारियश्वल स्माद्ध ये स्ती वस्या में निवडु?, में दीता दस्या दीत मागेष्य अस्तानां अस्ता मधागितं अमयाना मनेवामकानां देवयान वित याना न्यतरे विवयः स्तित्रिय श्रुक्त क्रों गीतवे ते नगतः शा-श्वतं पतं एक या त्यमावरिन मत्याया वर्तत पुनरित तस्माहियमः ।। ११।। विद्वाः प्रकृतीदह् वातनाननारे देशनार्म् त्यापते नवा शीत मन्देरे पुत्रामें व तत्व वे ताहवाना तमाना वेद प्रवर्तनाः आ चाया विकार रा स्या द्वापतिन कुटलद्विपायाम्दिन शरीरानारे नामारे मायसे तथा सत त्यूमा : तकत द्विनोमामह रखराभाम जायत सर्वे विश्वादयः तत्वीवद् एव शापवरादिना स्विन्द् या शारी राजार जारती दिस्मरगात् मुक्ति मानवियं पासिकी 277 919 30 CC-0 Gurukul Kangri University Haridwal Confection Total Roundation Sales III.

पूर्व कत्यमह मातप पार् श्वर मुपा स्यासि नकत्य ना नादे हे जाच्य महिकारि पदं मेनिर सीराम्पार व्यक्तमे रिंग मास्य नो तथाना र व्यक्तमे शांन त्रामे न हाहसा निनारियन् प्रशक्यतपात लविदायन्ते मुक्ति निक्विनेव ॥इ२॥

२०३७ ॥ असरिवयां नवरा पस्यामान्यत द्वा म्यावोष्यद्व न इक्तम् ॥ ३३॥

तत्त द्वारवास् अस्यूत्मनराव्य स्वित्यारियति वेदताः व स्वाववोदानायो सा एन पश्च सम्पर्भ पर्यामिति यन दर्श्य मात्रा खंगन मन्या वि ने किं सर्वे विम र्वन उवास्पत्या प्रायनो उत् य चात्रा खं यन स्थिता इति यु ति भेदण नुनयास्या दुःयाह अ द्वीरित न्यू सारिवयपाराणं विशेष जीति व धन्द्री माँ सर्व जान रा पर उपमें हार कृतः सामान्यतद्रानाम्यां यप्रानोहि सर्वत्र विशेष निराकर साह्यो ब्रह्म ष्रातिपादन प्रकारा तदेव सर्वेन प्रति ण यं नहा। भिन्त म्यून्य भिन्ना पर्ते तन किसि ,यन्यत्रकृतानुद्धयान्यत्यत्रतस्यः,तनानिषद्धपनिक्वराणितपूर्वं उत्तानि प्रतिषेश रूपारगीहोतितस्या निविधाः उपसंहतिन्याः पाचा इहीने प्ररोठाशानि षुउपसत्स्चो दि नास प्राडाश प्रश्न य न्नारणं -प्रश्ने वी वी द व्यरम् इत्म दी-गंयामनदोत्यन्मनामधिन्द्रध्य द्वीभः सम्बन्दोयया अनरतन्त्रध्यर् कारिकत्वात् प्रतेषाश्चरानस्य प्रधान तन्त्रात्वाच्याङ्गानां एवं स्तावा सरतन्त्रता निद्वशेषरणानां पर्वन मध्यन्यः, तदुत्तं वयपनाराद्र गृणमुख व्यतिक्रमेगर्यात्वा न्षु व्याननेद्रसंयोगद्रयन ॥३३॥

॥इयदामननात्।।३४॥ हि

अन्ति मिनती मुक्तस्यतो केव्त्यत्र द्वयो में कुल्चं प्रतीयते द्वा सुपर्ता तिम न्त्रे त पोरम्य इत्यादितास्य त्येवभो तृत्वं इतरस्याभो तृत्वं व्यतोवे द्यभदात् विद्याभे र द्रातेषांमे आहद्भयामनने ति इयनापारिन्दिनां दिन्नोये तं ने सहस्मामिनाम् प्रानाया खतीतं सात्रे त्यापेन विव सितं वे स पेका मिति हित्व स्वापपनापि प्रत्याम्यामा त्र त्र्यत एकविया॥३४॥

गञ्जनतम् तत्रायवत् स्वातमनाः गर्थ।।

पत्मासाद्यरासाद्वस्य पत्रातमासनीन्तरद्येकशारवायां हिन्हे तने यहिन श्रवति सादित्यन विभक्ति य त्ययेन अपरोस्ति तय चे इतयोर्ने रन्तर्थे रामानिति कतयां विष्ठतयोः वोनक्तव विरागयाविद्याभेर्दति वाष्ट्री आह-युन्तरित सर्वा नाम् तनत्वात्मनः श्रामानि शेषात् तन्त्रेकियान् स्तृनि सम्मव तिद्वयो सापाले एक स्पनीहर्भानत्रपानव्यकः तस्मात्सनिन्तरस्य नेस्ययेक त्यानियाभरू॥

॥ अन्ययाभेरानुपवितिरितिनेनो पदेचान्तर्वत् ॥ ३६॥ वेदानभाषामें खामान भेदान र्वकामितित स्पिह पते अव विति नापन्दाका उपदे शानार वत मन्यात्मा तत्व मास देवत केता इत्यादी नवकुत्वी भ्यास रापनविद्याभेद्र स्वीमहाप

ाव्यतिहारो विश्वां मनिहीतरवत्।।३०॥ तसाहंसासा यासासाह मिति ऐतर् यिसार्यहम्बे त्वमसा निच तत्र कि म्यातिहारेसा परायरं उभयहणमितिः करिया उतेकह्ये वे ति एकह्ये वे तित्वा वि संसारिता र्शवरात्मलमतिःई श्वरं संमागीत्मत्वनुद्धौतु ईश्वरेर निकृषः स्वारिशियासे व्यार् अतिहारीत नहीं दंत त्वानवीधप्रकरशाम् किन्तु विद्याप्रकरशाम् तव्वाध्वानाप

परम्परंत्यति हारे तो अप ह्या मित ; अगमे इतर बत् मखेतरे सर्व तम् व पटतयो गुराणः आध्या ना या वा विशेषं नित उपासकाः समा मातारः उभये जारतो न लगहमित अहन्त्र मसीति ।। २०।।

34. 3 91.3

< 944)

गसेनिहस्याद्यः ॥३०॥

朝、积、河

प्रयहितात मह यसंप्रधामनं ने द्रमत्यं ब्रह्मना मने यहे उत्तानस्त सं श्रमाप्रधा दि त्यायम् स पराहते त्यादि ता व एते सत्यिवसे भेदेन प्रत्यस्य योगात नपती यां लोकान् हत्यायस्य ह नि पादे प्रमानं इत्युत्तर स्ये ति द्रा से त्याह से वेति एके वेयम सत्य विस्थातस्य तत्स त्या यि ति प्रकृताक के राणात् कलस्य वाय स्यस्य तस्या वित्य सहरह विति वो पूर्ण गो पा सिन्य त्ये ना स्वाद त्वात् वि त्रिष्ट स्य गायत्वतं तस्मादे के वेयम विस्था।। ३०।। ।। का पादितत्त्र तत्र ना स्वाय त्या ति स्थाः।। द्री।

हा त्रांत्रे दह रे सिलन्तर व्याकाश द तिहदयान गैत त्वे न स्र तस्य दहराकाशस्य सत्य कामत्वादयाशरणा उक्तात्व हरार रापको तु यस हो न्ता है दय स्वाका शद्दीत हा दी का शस्य सर्वे शित्वादयाशरणा तव नयर स्परोप संहार ; दहरस्या पास्य त्वे न हा दी का शस्य हो स्व न वि द्या केंद्रा दिति प्राप्त - का हि ति सत्य का मत्वादी स्व यी ! सत्य भामा भामे नि वत्त ता च व शित्वा दी नां दहर राकाशे उप संहार उपास्त्रे भ विष्य ति सत्य का मत्वादी नां हा देखा शे उपसंहार स्व विभू ति प्रदर्शना चेता रोक्त स्तु त्य ची वे सा से देशिय उभय जा का शा च द वा च स्था स्व न स्व का ता दहर स्था स्व वं पूर्व उक्त महा दिस्याचि महान ज्या त्या स्था व प्रकृता दा स्व ता समाद भ घ जो प्र संहार ।।। ३६०।

गण्याद्वाद्वाचा ।। ४०।।
वेश्वानर विद्यात्र विद्या प्राच्या प्रमान के श्वानर विद्यात्र विद्यात् विद्यात्र विद्यात् विद्या

इता दीम चीत अनु संगीन मामाद्वा धारित द्वा समाजां अनु संगीम चीत अनु संगीन मामाद्वा धारित द्वा समाजां द्वा स्वा देव का नियम अपार प्रति के वा मामाद्वा प्रति के वा प्रा अपार मामाद्वा का मामाद्व का मामाद्वा का मामाद्व का मामाद्वा का मामाद

वन्तरिय सामनित्रिय देवता पुणालीनस्य कामवास्त्रत्

ते विनं य तेना भी जुरती यस्तिदे ने ने यात्रा न ने दे त्यार्थिन नि

येदेन मेमाइ नक्मी नुस्र है विस्त्रमा माय न तसारक्र मे-

विविधना उपास्तयः ॥४२॥

प्राम निवस निवस ११ ११ ४३११ नाम्मान संभात देत संना निवस किया प्राप्त के के नाम क्रिया के में स्वाप्त में अधात में मा जा तारा के स्वाप्त के स्वा

लिइ। भूय स्ता नार्ड नतापरति ॥ ४४॥ अनि र स्प नाडाणेश्वं षर् भिश्वातार स्माण्यप्य समेना इक्षात्र मानी मापात्मन। स्वित्रीमान अस्पार्थः शतमं नामा विश्व पुर वायुवाद्य के कर निष्ण महर्त दिना विभवान ने के के कि स्थितिया प्रमाय कि मार्थ एक कि कि ति के के कि स्थान के कि कि स्थान के कि स्थान के कि स्थान के के के विश्व के के के विश्व के के के कि स्थान के कि स्थान के के के कि स्थान के कि स्थान के कि स्थान के कि स्थान के कि से कि से कि से के कि से के कि से कि से

(९५७) अ.उ पा-उ

त्रः सा

पूर्व विकल्पः खुकरवात्मारिक्यामान सर्वत् ११४ था।

स्वतन्ता विद्यासका भवनि जातन्त्रेय लिहु। नां भूयस्तात्। यया तान्हीं तानिवां विदे सर्वेदा सर्वोद्योध्या नियन्ताने अपे स्वयत्त होते उपासक स्य स्वयता हार्व का करियाना विद्यास्त्र का ? भेना नामाध्य करित उपास भेडीय प्रतिन्धु क्ष्य पुरुष्य स्वतानां न र्वभावता है, अहार्व पुरुष्य मेडीय प्रतिन्धित ने स्वर्णां प्रतापते स्वादिन विद्यास कर्ता स्वर्णां मिनस्त्र में हेना स्वर्णां प्रतापते स्वाद्य स्वर्णां कर्ता करित्र स्वर्णां स्वर्णां प्रतापता मनाध्यास्य १ १ ४४ १। एवं निकत्यः प्रकरणा स्थातिक प्रामानस्वत । ४५॥

यदु मंस्वतन्ता प्रमित्तिद्वाद्द्यद्वित्तनाष्ठाद्वः ते पूर्विवक्षन्यद्विते तस्वनन्त्रायवेते
कियामयस्याम्रेष्वकरणात् नचित्रद्वात्यकरणां दुर्वनं सम्यादिकाम्मिष्वम्सा
ह्या न्या चिद्रपी नह्य निद्वात्य प्रमुत् दुर्व नत्वात् न्यसत्यामनप्रयाद्वासी प्रणा
वाद ना पि उपय स्प्रमानं तिद्वां न बकर लाम् वारित नुमुत्सहते तस्मान्यव्दर
लात् कियाद्वान्ये ते मानसवत् प्रचाद भराज स्यह श्रमहे न्य विवानते
प्रविच्या पाने साम् स्य साम स्य प्रमापत यह ना पे रु स्य मारास्य
यह ला साह नहि साम स्य साम स्य साम स्रामिन मानसा न्ये ना माय ने
सनसा प्रसो ति मनसो द्वाय ति इत्यादिना सचमानसो पि द्वेयो पि
यहकत्यः किया य न रशाह किया शेष एक मव ति एक मयस्य स्मृह्णा भ्रम्

॥ ज्यतियाच्य ॥ ४६॥

युन्तवन्तरेसा श्रुतने जातिर्वादिति ज्यतिरेश श्रोणेद्दन्तकः षट् श्रिशत् वह सारायम्य पेर को त्रणामकैकरवतावां न पावानसी पूर्वद्र ति वातिया मान्य इतिह्याः श्रातः पूर्व रीष्ट्रका चित्रन कियाप्रवेशिना ग्रिनासा प्यादिका ना भीना अतिहिशान कियाहान न्योत्तपति। ॥वियोवन निर्धारमान्।।४६॥

> -प्रार्शका म्बारमतिवये नेति न किया वर्ने मानं विद्यात्मका स्वेते स्वत न्यातवा निर्वारमात्ते हेते विद्याचित एवं ति विद्यपाहे वेत्र कव स्विट ग्रिना पवन्तीति॥४ गर् श्रीमाच्या । धः।।

नीद्शीनाच्चीत पूर्वद्रिति लिङ्गाना ।।४=।। ॥ मुत्यादिवलीय द्वा चनवा थः ॥ ४० ॥

न्यस्यामन्य प्रासी लिहुं. नसा धना प्रित्य नी तर मास जुन्या देशीत ना अवसरणा इस्माभिर्नेद्वास्थानिक न्युन्या तथाहित ही विद्याचित एवं ति सर्व दासर्व ति। भू तानि नि न्व न्य पि स्वपत्र होते चसाव धारराण श्रीतिः खित्याहुः त्वे वीडितास्यात् तस्मात्मात्र-यचस्य यान ॥५०॥

॥ अनुनलारी ध्यः प्रज्ञानाट एक स्व वह ए स्वतुक्त मा । १०।

मातन्त्रेष्ट्रनयन्तरमाह-प्रमुबन्धे तियतः ब्रियाव यवान पन आ दिव्यापोर ब्वनुवन्यद्व, रातिते मनसे वाधीयन्ते मनसावीयन्ते मनसेव यहा गरह नाइति त्या दिश्रव्यादिति देशा राषियचा सम्भवं में न्यं त्युत्रित्व सामान्या ता नापातिरेशव त्यम् नारप्यास्य वत्यपात्राणिक त्य प्रज्ञान्तराणिकारिङ त्यवियाष्ट्रस्ती नि खस्नानुनन्धनानुन ध्यमामानिकमिन्यः प्रज्ञानरिन्यञ्च एयकस्वतन्त्राणि यवादस्यम् नेश्र हे शतस्यप्रकररा पितायाः प्रकरशादुत्कर्वः तदुक्ताय्रकेता रहेक् नवांयामितिने न नर्गानयसंयोगिरिते ॥५०॥

॥ नसामान्याद्रप्ययन्य व्यक्तिः सुवन्य हिलोका वात्तेः ॥ ५१॥ यद्तं पानस्नीदितिन्त्रां अते न सामान्ये ति ना नमानस्यह सामान्या दीव किया व्रोष्त्वं यूर्नो स्त्रपुत्यादिहेत्याः केवल पुरुषाचित्वाय लच्ये, व्यत्यवता यवाम एषण्य प्रत्युर्घ रुष रुत्त स्मान्य गडले युरुष इति ख्रीहार्वे बन्युरित चा यादि त्यु रखयोः समाजे इपि मद्युत्रान्द प्रयोजनात्यन्तसामान्यायत्तिः प्रथासी वायन्त्रीकोजी तमागिः तस्या दित्यक्वं समित इत्यत्रन समिदा दिसायान्यात्लाकं स्यागित्रभाना पनिस्तद्भत्यची,॥५१॥

।।परशाच प्रवस्य तादि ध्यं भ्यस्त्वान्य नुवन्यः ॥ ४२॥ परमाच ए बोग्नि स्तित्रत्यननररा।बाद्यमान शब्दस्यतादिध्यंके वलविद्याविधनं प्रयाजनं त्रस्यते विराया तरारेह नित यत्रकामाः परामता न तत्रद् विरणा यनित नाविद्यान्य साथ स्विनः इति स्वाके केवलं कर्ष निन्दन विद्यास्त्रवृत्रो सन् एतर्शयति यर तेर-मराडलंतपतीति बाह्यरा मिष विसाधधानंत्रस्मते साम्तामवतीतिविया पत्ने नेवापसंहाराता नकप्रधानतं तत्मायान्या

दितरस्य तथा ज्वा तस्मात् मनाचि दादीनां केवलियात्मकत्वं दृत्याद्वरेसा चे ति ॥५२॥ ॥एकः प्रात्मनीतरि भावातः॥५३॥ मन स्त्रिदादीनान्युरुषार्थे त्व मुक्तं तवकः पुरुष द्वित्युस्तद्भातः न्या हर्णकेति ॥एनदिव कररां पूर्वी तर घी मां संया र ज्यो छिट्हा ति रिक्तस्य स्वर्ग मास माणिन, प्रति पादक लात् तन्त्रे तालायितिकादे ह ए वातमा इतिवद्नि प्रन्ययंतिरेका भां देहएव चे तन्यापलस्मा त क पुक्तना जावल्ली चु गानां सं यो जान्मर् शक्ति रे वरहाकार यितात भ्या भत्तभ्या जायमानची नत्यं कर्यं नाम जात्यन्तरे स्थात तस्मा चे तमोदहरानामार् तिञ्चाराद्वतं एकडोते यसीपत्रास्त्रादानेनप्रास्त्रकत्ते प्रभागयाम्यस्यरे हा तिरिक्तस्यातमनास्तीत्वं भाव्य उत्तं तपाय्यनस्वयं स्नकृता देहा साति रिक्तस्यास्मन ज्यासे पष्टरः सरं न्याति रिक्तन्यं यतिपादितं ॥ १३॥

।। व्यतिरक्स्तद्भावाधावित्वान्तत्त्वपत्विवत्।। १४।।

सोपाधिभू नोयलियः भूतं भ्योभिनाचिद्विषित्नात् सिद्विष्णि निस्यातिर कं ययाद्यान्वसाः स्वत्वतार् शवेतन्यस्यात्मत्वस्वद् न्तस्य तिक्षंभीति क रूपान मापरात व्यतिरक्षिमाम जार सन्यस्य विदेह पर नोक गामिन चिदात्मनः शास्त्रशाप्तमणारा ज्यतसद्याना पानि त्याता मोनिकाद्रिनो हमिद्मद्रासं इदं पश्या मीन्युण निव्यस्यस्पो देहार ति रिको निन्यसात्मा कि सुम्दीपासुषकरतास तिउपल विश्वभेव तिन तुष्दीपरवापलिता.

तथादहस्य पत्निवाः न नुदह्यवसाङ्गितस्माद्द्वातिरात्तः आत्मेन्याह्वातेषिताप्रभा ॥ व्युद्गाववद्भास्त् नत्रास्त्रामु हित्रतिवेदम् ॥ ५५०

ओमित्येतदशरम् यासीतपञ्जिवधं सामा यासीत उनपामिति वेप्रमा वदनि तरि दंमनो क्यामियमेन यर विनीद्रत्येन माद्या उद्गी यादिकमोझान द्वाः प्रत्ययाः प्रति वेदंशास्वाभदेष विहितास्तत च्छारवा गते खेलोदी आपि यु अवेषु सर्वकारवा गतेषुवाइति प्राप्तेव्रते न्युद्भा बवद्भा इति तुन्यीच त्य थेः नवाव स्थिताः किन सर्वेत्राखाखनुवर्तरम् उद्गीषादिश्रानेः सर्वनावित्रे चान सन्निधानान् ज्य निर्वतीय सीत समासर्वे सर्वत्र ॥ ५५॥

॥मलादिबद्दा बिरोधः॥पूद्॥ श्रयवानेवात्र विरोधः मन्त्रादिनत् मन्त्राराााडुः मेशां गुरागनां शास्वान्तरोप संहारो हुत्रयते कतनो वे प्रयाजाः समान व होतवाः त पाकवित् व्यप्रियोमी पयशोन प्रजादि परेतना विशा खान्तरीय मन्त्रबर्गान्छा मणबेदानारोत्य नानां अत्रेवे हिं तंने रिजादिनाचेदान्तरेयरित्रहः अ ग्नेदस्ययानान इत्यादीनां न्या व्ययेने सम्मीयम् श्रास्मित्यम् यरिग्रह् स्तास्मादान्यया रणांकम्बद्धारमामिनञ्जानितानाम्प्रस्यानामपिइत्यविशे धः॥५६॥ ॥भूमः कृतुन अन्याय स्त्रंतया हिस्त्रीयति ॥५६॥

ने त्रवा नर विद्यायां प्राचीन त्रात्मा रत्यायां न्यस्त स्य समस्त स्य वीपासनप्

भू यते यस्तायासमं कल्ल मा साम मुया स्ते इसि दिवसेव भगने ए तानित निही नावे विव सुते जात्मा वे प्रवान रो पं लामा तमान मुपा स्ते इत्यादि समस्तस्य वे प्रवान र स्वम् थेने मुते जा दूर्त्यादि प विव्यव पादा विद्यान्त नत्र जिंद्र अपमाप्युपा स्वि उत्तसम स्तमे व स्ते ज्याविश्वायाद्व मि प्रतिपासे ज्याह भर मुद्र ति भू म्नः समस्तस्य व ज्याय स्वम् पुत्य ते पोषा स्यत्वं न प्रत्ये कं मतः स्त्रातः तथा भू म्नः ज्याय स्वं एक वाक्य स्वात द्वे प्रक्रवा स्वात स्वात स्वात द्वे प्रक्रवा स्वात स्वात द्वे प्रकृति स्ति स्वात ।। स्वा

द्वानानानात्वम् ॥५०॥

याम्यास्न ययाकामं समृद्धीयेमनवाय्वहिनमागत्।
याम्युनः काम्यास् विद्यास्म प्यास्ति यथा स्तमेनं वायं दिश्वेनसंवेद म युन्नसे देशिदित स्वोनाम ब्रह्मत्युपास्त यावनाक्रोमतं स्वार्थ काम वारो मवति द्रत्यादिष प्रवश्यकः
स्वार्थाय द्रत्याद्राद्भ समायते काम्या स्विति । यथाः
हे ग्रह्म देवा मूला देवा मयोति इति स्वित्व म्यान्याः
प्रकार्य द्रवा मूला देवा मयोति इति स्वित्व मयोतः
प्रकार्यदेव साक्षात्वारं प्राप्य देनल स्वेति

तत्रपाप्रतिके ष्ठ सार्याकारण लातं तत्र तत्र भीण वसुषायपः पत्रम्, तथा च श्रिकाभ काष्ट्रकलाना तथिकां विद्याय शंकानु दूरा पता त्र स्मादिकल्पन रक्तं वा वह रितवा समानु त्या वा यथा कार्म मुणापि तव्यम् ११६०॥

अद्भाष यथाभयभागः १ ११६११ विकासिन प्रताना निक्तानिक माद्भिष्ठ माद्भिया विक्रिया विति विन्ता तमक मिछा अद्भानां ममुद्धायां मान उपनाप माद्भायन द्वी प्रया अद्भानिति यहंग महात्वा यममंत्री क्याय त्यापित नाम विवा वानीपयमानः भूतः, तस्मा दिन्त्य ममुद्धायां यथा काम य ११६९

पयात्रया स्ताना दयः निष्यं विषय श्वास्त्र का श्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्ताना स्वास्त्र स्ताराय कार्य साधिक स्तरा भाषा प्रत्या यानास्त्र ११६२११

समाहारात ॥६३॥ लेत मदनादैवाति दुरुद्वाचा मनुममाहरात शैतपुराची द्वारोक त्व विद्यामा दुस्ता कर्म सतंही न कर्मना प्र-रित समादधाति द्वीतबुचन सर्वे वेदेन दे ज्यापाय संहर्ष मुचयाति ॥६३॥

मुन्सायार एप। स्रतिष्ट्य ॥६६॥
लिइ दश्तिमाठ मुन्सा धारव्यीत विद्यामुन्स्य खेला राष्ट्र ताधारव्ये सर्व माधारव्य माथ स्वम्पवयते अग्रिमतिनेव्यंत्रपा विद्या वर्तते अग्रित्या स्वाप्ति इत्यारि स्वंताक्षय साधारव्या या स्वीते साधारव्या म् 1/1/2

नवा तत्त् मल्यावात्र भूतः ॥६५॥

नेवीत वसान्तर व्यावनेनं न प्रवाश्य भाग उपासनानं भवितृपुक्त र तस्तरभावाश्वतः, वेदलय भ्वतिहाद्भानां सरभावरभूषिते प्रहंवाय है। त्वा च्यासंवी नेशय स्ताल प्रयान्त्री रित स्ताल भनुश्लेष तेर ते वन्तालो य सनानं सरभावरभूतः तस्मा यथाना भनेनोपासना न्यन श्रीवरन् ॥ ६५॥

दंशनाद्य ।।५६॥

प्रत्यना माह दर्शना चीत भीतराप असहभावंपुत्य याना माह एवंनिष्ठु में ब्रह्मा यसं यनमानं सं मेरिश माले ने होंग र स्टूनीत सर्व प्रत्येता यसंहारे खु सर्व स्व स्व विद्दान न विद्धां ब्रह्मा या पात्यन्तं तिरिश्चा मृतं सम्भवति तस्माद्य भाका म प्रवासना नांसप् द्येवा विनहत्वो ने ति ॥६६॥

श्रीत भी अस पूज तात्वर्य वित्र रही यती या द्वायाय

तताय। यादः ममायः ११ इतिम्हिष्याचारते वादः ।।१।। ।। अस्तिरसकुङ्गदेशम् तः ।।१।।

श्रुण्यत्नी मात्मना देहा निग्रिक विज्ञानं विना यरलाक गामित्ना निञ्जपात ज्यातिष्ठामाद्दे प्रवित्तरे वनस्या दितिक नुष्ठव्यत्तिक रत्ने हेनीय निषदा तमत्त्व ज्ञानक मोड्रं इतिष्ठा मे श्रुष्ठ पुरुषा द्योति इति 'श्रुताने वित्ति तार्द्धितीयात्मत्तल ज्ञानात्म्वतन्त्रात्म ह षार्षः सिद्ध्रतिक वत्नदेश तिरिक्त श्रुप्तम् ज्ञानस्या स्नु जामक त्व चिद्वं श्रुप्ति विष्टु ति के याकारक प्रात्मज्ञानस्या स्नु जामक त्व चिद्वं श्रुप्ति जांक मे प्रवित्त व्याक्ष्मा व्या पात्म देश ते गढं लोक सं यहा चे मना यन्ते प्रामा वा द्वे ते प्राप्ति य प्रात्म क्ष्म निक्ष स्वान्ति प्राप्ति व्याक्षी विष्टु स्वान्ति प्राप्ति व्याक्षी विष्टु स्वान्ति प्राप्ति विष्टु स्वान्ति प्राप्ति विष्टु स्वान्ति प्राप्ति विष्टु स्वान्ति स्वान्ति प्रात्नि प्रात्म स्वान्ति प्राप्ति विष्टु स्वान्ति स्वान्ति प्रात्मा स्वान्ति प्रात्म स्वान्ति प्रात्म स्वान्ति प्राप्ति विष्टु स्वान्ति स्वान्ति प्रात्म स्वान्ति स्वान्ति प्रात्म स्वान्ति स्वान्ति प्रात्म स्वान्ति स्वानि स्वान्ति स्वान्ति स्वान्ति स्वान्ति स्वान्ति स्वान्ति स्वानि स्वान्ति स्वान्ति स्वानि स्वान्ति स्वान्ति स्वान्ति स्वानि स्वान तानं स्वतन्त्र पुरुषाचीनक इन प्रम् ॥ १॥

刘、红、川.

॥त्रामुखान्यान्यस्यान्यवादाययान्याद्वीते ने मिनिः। ना

अया जप्रत्यवति छ ने बा हिमास्ने प्रेषा ना दितिक रे त्वे नात्मनः क मेशे ब लाद्व हा विज्ञान प्रिषेत्री हि ब्रा इत्यादिव द्विषयद्वारे ता क मेस म्बन्धे वेति त स्मिन्नव गता प्रयोजन - प्रन्या फल मुनिर खेबाद इति जे मिनि राचा यी मत्मते पस्वपरी मयी जुड़ जीवति न सपा पं क्लाकं करता ति इतिवन् ।।२।। । न्याचार दशे जात् ।।३॥

< 953) 317 3

91.6

जनको ह वेदह वह दिस राज यहेन यस्यमारा वे भगवना ह यसी त्यन मादी तिक भ मान ल्या क्या ति भवनिकेव जहां ना केत्र ह यह वार्षि सिट्टिं; स्या दिक मर्चे वहा यादा हा मिन्नता ति क मीरिशाते कुर्युः व्यक्त वेन्म श्रवि में निका कि मर्चे वहा यादा हा मिन्नता ति क मीरिशाते कुर्युः व्यक्त वेन्म श्रवि में निका कि मर्चे क्या वे तंत्र ने दिन त्या वा ता १३॥

॥ तन्तुनः ॥४००

युन्ध नर पाहतन्त्र ति यदेन विरायाकरा तिश्च द्रयो प नि व दान देन नीर्धनतर प्रावनी ति कर्षश्च व न्व अवसाति केन न विराया: न पुरुषार्थहन्त्र नाम्। ७। ।। स प्रन्या रामसाति ॥ ५॥

युन्धनरमाहस्रवेतिनं विद्याकमे शीर्यमनार भेने इति कर्मशेषान धनशाति विद्यायाक पे साहित् न ममात् मानात्रक्रयम् ॥५॥ ॥तद्वतो विद्यानात्। द्वी।

किन्ता नाथकुत्वा हे द्रपिदात्य पथाविधावं ग्राः क्रमोति श्रेषेताधिसमा व त्यकुरुष्वे श्रु नोदेशे क्वाच्या प्रधाना इत्यादिक्तिः सपस्तवेदाची

विज्ञानवतः क्रमीधिकार न्द्रशेष रितन्त्रतो विनस्वात त्रेषरा फलहेतुन्व रूसाहतस्तरीत। ॥तिस्रमान्व॥६॥

कु वन्ते वह सभी ति जित्री विष्ये च्हां स माः एवन्त्विया नाये तो तिनक्षी लिप्यते नो ए त हे जराम ये स जं यद रित्र हो जं जर्याहा वासान्त चाते प्रत्यु भाजीत एव प्रादि नियमा द पिक भीशेष त्वं विद्याया इत्याह नियमाच्चे ति ॥ ६॥ ॥ व्या चिको यद प्रानु वाद एय ए स्थिय ना दूर्श ना ता ॥ च॥

ममाधने श्राधिक ति तुत्राव्या त्में भी यत्न निरा सः कृतः श्राधिका पदेशा त यदि मं मार्च नात्माने सन्ते सूप दिष्टः स्यान्तराक्त क स्वतर्षनाद न्ने स्यात् श्यातिक स्तुशारी रादा सानो इसं सारी श्वरः के की ज्यादि को रितो इपहत याष्मत्वा दिविशेषाः यरमा साने याने नाच दिश्यते वेदा ने स्वतन दित्रानं के भे यन ते के किन्तु के सीरायुद्धि ने नीते व द्यते ते स्मात्युद्द षाची तः श्राद्धा दिति यद्के तत्त्र श्रेन ॥ ना

॥नुत्यनुदर्शनम्॥ ॥
यद्रक्त माचारदर्शनादितिनत्राह् नृत्यन्दर्शनिमिति सनद्रसावेनम् विवि द्वान्सोऽ ग्रिहोनं न शृह्वां चित्रदेशना स्वे तमा त्मानं विदिन्ता श्राह्म रागाः, युन्ते खरा। या स्व वित्ते खरा। पाष्ठ च्या त्याप्य भिस्ताच से खरीने इत्यादि द्वां यास्रव न्वया दी नां ब्रह्म विदा मक मिनिस् न्वं दृश्यते ॥ नि ॥ ज्युसा विविद्यो । १२०॥

तन्त्र ते रिन्य भाह असार्विन की नियदन नियमित स्विति सर्वित वा नियम किन्त प्रकृतोद्दी स्वित्यानिय या इत्य की है। १९०॥

। विभागद्यानवत् ॥११॥ यदुक्तं विद्याकपरिशासमान्वार भे ते इ तिनचा इ विभागद्दति विद्या न्यम्पुरुषमन्वार भतेक मीन्य म्पुरुषाभिति यद्या त्रात मा भ्यान्दी यत्र मित्युक्ते विभञ्ययञ्चात्रात् एक स्मियञ्चात्राद न्य स्मेद्रति ॥११॥ ॥ स्वध्य पन मानवत् ॥१२॥

तक्षतो विधानादित्यनाहन्त्रच्ययनेतिने द्रमधीत्यत्यनाध्वयन मानवत एवक मे विधिरित्यध्यन सामः।।१२॥

॥ नानि श्रेषात्॥ १२३॥ यदुक्तिनियमान्ये त्यनाह् नानिश्रेषादितिकु र्वन्नेने हे न्यनित यम प्यन शोषान निरुषद् ति निश्रेषासिन्यनिश्रेषा नियमिधानात्॥ ॥ स्नुतयेनुम तिनी॥ १४॥

मुर्व नित्य नापरो निशेषद्र त्याह स्नृत यह तिरुत्त हुन्त म्मनित् यान जीन क्र मेनु ने त्याप प्रत्ये निहास मन्ति वाय मनित नियासा मण्योदिति तदेन म्निसास्तृतय।।१४॥ ॥मामकारे गांने के ॥१५॥

कामकारेगानि त्यापिनेके निद्धान्मः प्रत्य सी कुन नियाफना। सन्तर्य व समात्मकान्तर माधन प्रनाधन स्व प्रयोजनाभानं वंशम शान्तिकामकारेगानि स्वातः व्वी निद्धान्मः प्रभां नका मधन कि म्यूज्ञणकारे स्वामो ये सांनो यमा त्माह पंत्नो कर्तने व्यान निवसाकमोद्धामा ये सांनो यमा त्माह पंत्नो कर्तने व्यान निवसाकमोद्धाम् ॥१५॥

113पमध्य 119६11

मिन्द्र-मिश्वकारहेताः क्रियाकारकप्रभाषः प्रयन्त्रस्य विद्यासामच्यीत् स्वद्योप मदेश्व न्याम न निय य स्वस्य सर्व धानीया भूतत्के नकम्पश्ये किये दि न्या दिना वेशनो दितात्मतान यूर्विकां क मी त्यिकारीये दिं युत्पात्रा सनस्यकमी धनारोरि तिरवप्रसन्यततस्मादणिस्वातन्त्रपम् विद्यायाः।११६॥

113 धीरतस्य वशक्ति।१६॥

बिद्योध्वरेतसम् नाम्रमस् वियाभ्यतेयेनेमररापेम् स्त तपर्नु पासने एत मेन प्रवा निमालीकिमन्द्र नाः प्रवनिनान्स वर्षादेव प्रवने दिन्या दि नचत्रवक्षीद्भार्वविद्यायाःकिषा भावात् तस्माद्यिस्वातन्त्र्याम्बद्यायाः।।१६॥

।। परामर्शने मिनिरनोदमा नापनदिनिहि ।। १०।। पूर्व स्वतन्त्र मालम्त्रान मित्युक्तंतस्य वी ध्वरितस्य न्याप्र मेषु मुलभवा नरास्य मन्यया ति रिक्तास्य मस्य इवि स्थित्य ने तनना स्त्यूट्वेरिना र तिने भि निः यतः सर्वज्ञया रामिन यतः सर्वज्ञयागामेन न्यानारागां परामश्री माहकुतः वि ध्यमानात त्रयो धर्मान्नाचा त्रोधयमं दानं ययमस्य एव हितीया व स वया वार्यकृत वासी र तीयात्य नामात्मा मं न्याचार्य कुरते इवसाद्यम् सर्वे एते प्रायलोका भवनि इति प्रामत्रीपूर्वके न्या ध्यमासा। मनात्यं न्तिक फललं सङ्गीत्यात्य न्तिक फलत्यां त्रस संस्प ता स्तूयते वृद्ध संस्था म तलमे ति तस्मात्स्तु त्यची मेना यम्परा मन्ति न ना दमार्थः किन्तापबदीतिहिम्ति गम्मानारं नीरहा नास षद्वानां याग्रिमुद्धा स्यते -प्रानामीय प्रियन्यन माहत्य प्रनातनां माव्यवदे सी,नायुनस्य लाकः इत्याहपरामशिमिति॥१०॥ ॥ न्युन छयम्बाद्रायमा साम्यम्तेः॥ १० भी

न्यान खय माम्यानार्वाद्रा यत्नो मन्यते द्त्याहन उद्यमिति गाई स्थव दवास्रमानारमापे न्य्रानिक्तापि प्रतियत्व न्यार कृतः साम्य स्तः गहस्यानास्त्र यानार परामर्शि भीतीः समानाहि न्योग धर्मस्कन्धा न्यादि गु यशाम्नस्यनार विहित्रधेव गा हिस्पा म्युराम् ई रुवमा समान्तरमिष प्रतियन यम नस्मा नुत्यम नुष्य पतं गहरायाना प्रमान्तरस्य एवं मेन मेन प्रजानि नोनीक मिन्हान्तितसमात्परामर्शे विन्युत्र हे यमाश्रमानार म् ॥१००

गनिम्धना धारसानत्।।२०।। यद्वा विधिरेना यं बहारां स्था मत्तन्वमे तिङ्गित्या स्य मान्तर स्य नपरामर्श भारतानत् अधासतात्मिधंधार यम्भनुद्रनेद्रपार हिस्तेभ्यो सार्यतीत्य न यान्यामयाधायार साने कनान्यना प्रतीनी नि धी यन कनापदीर सा

मानश्रकान्य। त्रामा पासीत यह मुक्यमस्मीति निया प्रमाद पासीति निया पित श्रक्ष नियत किय तकति ज्या पित श्रक्ष नियत किय तकति ज्या किय तकति ज्या प्रमाद स्वादित पञ्चमं स्वतस्यात् किय तकति ज्या प्रमाद स्वादित पञ्चमं स्वतस्यात् किय तकति ज्या किय तकति ज्या देव कियत पित स्वाद क्या देव स्वाति मान प्रयोग्न नियत प्रमात भावश्रक्त नियत तेव स्वाति मान प्रयोग्न नियत प्राचित कर पाञ्च प्रमान क्या प्रमान क्या स्वाति स्वाति

।।पारिञ्जनायोज्ति चन्त विशेषितत्वातः।।२३॥

श्रवह वा जनका स्याद भा वेन भवनाः मेन यी कात्या पनी न पनि नाहने रे नादा सिरिन्द्स्य प्रिय न्या मायन गाम जान जु निर्हेषी जाय गाः च सर्देपान हुद्दा पी इत्या दि ने दा न्ता या ख्या ने यु कि मि मा निपा रियन य यो गा भी नि उत्त सि निर्हे हैं निस्या प ति पन्य भी नित्र जा श्वम चेरा निष्ठ राजा नं सकु यु म्य प्रत्ये ज स्या ग्रे ने दिका न्यु पा ख्याना न्य दन में रागा ने क्या नि त दि हं कमे वारि प्रन मानसी ते नि नि हि नं तर ये जिस नि ज्यो पनि यदा ख्याना नि यु मु हाना पो पणु ज्ये र न न्या य्य मनु क्षानं न स्नृतिः त स्मात्यारि व्रमायी दिनाम प्रेत्न मा यारि व्रमे नि निसा स्तानक दनमे ने व्यामिसाना के र का क्या ना पा पा पु व्या या चही ते नि प्र कृत्य प्रच में इति मनु ने ने ब्यू तो राजा दि ती ये दिन प्रमोने न प्रवनी राजे न्या सा ख्या मार्ग पा स्था मार्ग प्रवा पो नां निका कित त्या ने ज्यो प निष्य दे या ना मार्ग प्या मिना ना न त के बत्नं सम्म नित्र ही हि विसा स्तान क क्य मेन ॥ २३॥

गतन्त्रवां सम्मन ति इति विद्यास्तानक ज्य मेन ॥ र३॥ ॥तया नेक नाम्यतायन न्यात् ॥ २४॥

तस्मान्तवारे व्रवाचात्व घारव्यानातीमः ॥२६ ॥न्द्रतस्ववात्रीन्धनासमयेशा॥२५॥

यतो विद्यायाः वृह वार्षे न्वं वृह वा चिंडतः शव्य चिर्डमु कं श्वतस्वा त्री न्य ना ही निन्धात्रमक मोणा विद्यायाः स्वार्षमिद्रो नायो सिन व्यापि यद्य विष्यमा विकरतो विद्यायाः स्वतन्त्र युह वार्षन्त मित्यारनेन क मोद्धा त्वं निकारितं न्य द्धिः नं निवारितं नद्धार सार्थि स्यू के हिकर सा क्र तस्वे वा प्रसंहारः ते स्माटु त्य ना विद्यां स्वक्र नद्दा ने क मीता ना व दाते द्रत्या ह न्यू तस्वे ति ॥२५॥

॥स्वी। सर्वावसाचयना दिस्ते रश्ववन्।।

वस्तिवयास्वकलकमिता नापस्ते तथास्वात्यना ने पिनाचे सने न्यान्य पा का विद्यसाक्क विन्ते त्यर्धनरती याप नि रिति प्रासेन्याह सने ति नार्धनर तीय त्यायः पा ज्यता नप्तादेन एक व्यन् का पिने शे खे खु न्य प्रसान पे स्पेता ह प्रयत्तः यचा लाङ्ग तनह ने ना प सिनो ह्या रचनह ने ड ये स्पेते न हत्यो त्यनी न विया क मी वसने न मेन ने दानु न न ने नाह्य राता विवि दिष्ति इति प्रान्तो दान्त सिन ति सु; उप रनः सु द्वा विनः समा हिनो भू त्या न्यान्य से ना न्यानं पश्चे दिनि तस्मा स्व ज्या ही ति प्रमादी नि च विद्यास्त्रो त्यना न्यान व्यक्ष ते ॥ वि

।। श्रमद्मा सुवेतस्यो त्या विद्यासा विद्यासा विद्या सा विद्या से विद्या सा विद्या विद्या सा विद्या य सा ति दि का ति दि का ति विद्या विद्या सा विद्या विद्या ति का ति का विद्या विद्या विद्या का ति विद्या ति का विद्या विद्य

गमनीनानुमतिस्रप्रासात्ययेत इश्रेजात्।।२०। प्रासाविद्यायां सुतं नहवा स्वीद किञ्चना नन्तं भवतीति नहवा न्यस्यातनंत्र मधं भवति सर्वमस्यादनीय स्वत्यर्थः। किमिदं सर्वीना

श्रुमनं विद्याद्भं उत् स्तुत्य श्रंकिनेनं विधिर ने यदेशस्य प्रवर्ता विश्वास्त्र त्यात् = प्रनेनसर्व भक्षता वननेन भक्षा मक्ष्यविभाग शास्त्रं वाध्यत् वृतिषासे न्याह्यवे ति ने दं सर्वे त्या न ज्ञानं विधीय

ते विधाय शक्तामा वात-प्रमन्त्रं भवती तिव तैयाना यह शाना नव

व्यादिमधीदं ज्यन्तं मानु षरा दहेनाय भोजें शन्त्रते तस्मा दाय दि वानता प्रासार सराां भन तिसाननार्जा निविद्ध मिय ज्यन्तम भ्य

नु ज्ञापते ज्ञार्य वाक्रय सामु निः वासात्यय र भ्येन सोपि

खादि तान कुल माधा अश्वित्वा शूद्र भारोहाद्कं न प्रयो तना प्रयकारणं च प्रदेशह ते विवत्यत्रानो चत् तस्मादा पदि प

बीन्ना ध्यनु तानं महते इये खेतादाः॥ रणा

गन्य ना धा न्या २००१ गन्य मन्याहारश्रद्धो सत्त्रश्रद्धीर स्वचादि भश्याभश्यशास्त्र पनितं भविद्यतीन्याह-प्रवादादिति।। २००

। अपिन समर्थत । १२०। किन्तापिद समीन भक्तां समय ते बिहु बा बिहु बद्धां मी ने तात्यय मापन यो नम दिस्य तस्ताः, निष्यते न सपापन पद्मपत्र मिनाम्म सिति तथानित्यं मसं श्राह्म सोवर्जियत् इतिन जैन मरिन्यनन स्य इ ज्या ह न्यू पिनित। ३०॥

।।शन्दस्रात्मेकामकार ।। त्रा

श्रादश्रानन्तस्य प्रातिषधकः कामका र निच ति प्रयो जनः कि ष्रतस्मा द्वास्तराः, सरां न पिन ते सोपिन इनासनं नि होत्यस्याचीनाद त्ना दूप पन्तत्तरो भन्न ति तस्मादेने चीनादाः, न निध्य इत्याह शब्दश्चीति ।।३१॥ ।।निहतनानाष्प्रमकमीप ॥३२

सर्वाविद्या चेत्यत्रा स्रमक विद्यां विद्यासाधनल मवधारितं इरातीं मुमु होरिष्
त्राष्ट्रममात्र ति छस्य विद्यामकामयमानस्य स्रित्रोताचीन्यन् छयो नि नवेति तत्र विद्यामनिन्द्धतः, कलान्तरका मस्य नित्यान्यन् द्रियानिइति पामेत्रपाह विहिते ति त्र्याश्रममात्र तिष्ठस्या विकर्तव्यान्येव नित्यानिक मौति यावञ्जीव स्विहित्रत्वात् ॥३२॥

॥सहकारित्वेनच ॥३३॥

यदुक्तनेवं सिनि साद्याधनत्वं स्यान् रूषां ननोत्तरं सहकारीति एतानि विद्या सहकारी ति। च एतदुक्तं सवी विस्तितस्त्रे तस्यादुत्पति साधनत्वे एवे षां सहकारित्नोक्तिः यथा खिरस्य नित्यसं पोजेन कुत्वर्षेनाद्रानिसे न सं यो जेन पुरु बाकीत्वं तद्वन्त ॥ ३३॥

।। सर्वे याचि तस्वो भयनिद्धान् ॥ ३४॥

सर्व वा न्यास मक में त्व पक्षे निया यह कारित्व प सेन तथन गिही भार्यो धर्माः न्युनु खेयाः, तरानेतिक में भेराषां कां निनर्त पत्यनधारणं नेन भेरः क प्रणां तमतं ने रानुनन्ने ने तिन्युना ख्रितं क भेष्यल भितिष्य निसरत्य भयातिङ्गात् ॥३४॥

॥ ज निम मनज्जद श्रीयति॥ त्रथा। प्रनीम मनं नेति यहका रित्य स्येनेन् रुपोद्धत्मकं निद्धा र श्रीनम् अनिम् स्थिति ब्रह्म नमी दिसाधन सम्यन्तस्य राजादिक्षेत्रीः, स्व न्यान्माना भिभनति मंत्रस्व योगा प्रविन्तर्माद्ना तस्मास्त्राही नि जान्यमक की शिविधासहकारेगीया । ३५॥

॥ अन्तराजामित् तर छः॥ ३६॥ विस् सहिनां द्वापिरिहतानान्य आन्तरा त्विकानां विद्या विकारा आस्तिन वित ना स्ती ति पार्श व्याष्ट्र तक भरगांहि हतुन्वं न न्वनाष्ट्र अक्ष रागा वित्य वाह व्यन्तरिति अन्तराधि व्याक्ष विन्व ने वर्ति व्याधिकारी तत् हु छ रे क्वा जक्ष नी प्रभ्र ती नां छवम्बिधाना भगित्र स्न वित्व श्वन्य प्रत्यक्ते ।। ३६॥

॥ न्यू पिच समये ते ॥ दुणा चापिच तिसम्बर्त प्रभरती नां नश्चपित् चुपा गात् न्यून चिन्हा ता हा मक मैला मापिपहा यो भिन्वं सम्पेते इतिहासेषु ॥ दुणा

। निशेषानु ग्रहस्त ॥३०॥ तनु लिद्धा, पिदमेतानतो क्तं प्रा पिस्तु न्यपि वीयते निशे स्वित ज्ञेषा पनासद्तना स्वनादिशि रनुग्रहः तथाच स्टरितः ज व्यतेन तु सं सिद्धात बाह्मराग नानसंत्र यः क् यी र न्यन्त ना कु घीन्मे जो बाह्मरागड्म ते द्र त्य सम्मना दास्त्र करियोगिष ज्ञेष्य विकारं दश्चीय ति न्यने कन्यम सं पिद्ध स्तातीयाति वरां गति तस्मा दि धुरादी ना मप्यिकारः ॥३०॥

गन्यमस्नित्तरराज्याचा निद्राच्या ३००

अतह नि श्रतः श्र न्तराल काति त्वात हतरा श्रा प्रवनित्वं ज्यायः विद्यासा-धर्मं श्रीतः लिद्धान्ति नि वह्मिवतः श्रापकृते अस्त श्राप्यकीन निष्टेतः दिन मेक मिपि वित्रः सम्बक्षर प्रभाष्य भी कृद्धः द्वारेत् स्पीतिल्य

।।तद्भतस्यत्नातद्रावो ने मिनर पिनिय मातद्र्यार माने भ्यः।। ४०॥

हान्य केरतस्त्र व्या स्मा इत्युक्तं तान प्राहस्यक्य चित् तातः प्रस्तु वित् र स्ति नवित संश्रेष ब्रह्म व पे समा प्या र ही भवता गरही भू क्या व नी भवता व नी भवता प्रवित्त प्रवित्त प्रवित्त क्या प्रवित्त क्या प्रवित्त क्या प्रवित्त क्या प्रवित्त क्या प्रवित्त प्रवित्

॥नजान्यकारिकमिषयतनानु मानार्शन्य द्यागान्॥४१॥ ने छिनवस्त्रविषद् जे रतस्त्र म्याप्य पुनःस्त्री सद्देन दृष्टस्य प्राय स्तिनं न भवति भ्याद्रदा ने छिन न्धर्य यस्तु प्रच्यनते दिनः प्राय स्तिनं नपत्रपाम

॥उपयूर्वभिवित्वेक भावमरानवत्त दुक्तम्॥४२॥
न्याय एके त्याचा घीः उपयातक सर्वदं सन्यन्ते तदाह उपयूर्वे मधीति यन्ते शिकस्य
गुहदारा भ्योक्य व्यवहत्व भे वि प्रियति नत्तन्महा वा तकं शास्त्रेत स्या गरानात्त् तस्मा दुषकुर्वारावित् ने छिकस्यापि पा योन्तित्त भावं सन्तं इन्द्रानि स्वापि त्या विशेषात् त्यवकी रीत्वा विशेषात् च त्यानवत् ययाम धु मांसात्रा ने व्यत्नोय वुनः संस्कारम् स्व मनापि तस्मा द्वावोयुक्तिरः ॥४२॥

गवहिस्तुधयवाचि सरतेराचाराच्य ११४३॥

उद्भरत सांय्यमतां सहापातक ष्रययातकं में भयवापि शिष्टें ते ग हिं कार्यों, इत्याहमिति स्विति वायासितं नयत्रयामीत्मकः जानं न्याह्रदणतितान्विषे मराहलान्य विक्तिः स्ट तं उद्घद्धं कु मिद छन्तु स्पष्ट्वायान्द्राय सान्त्ररेत इत्यां दिनिन्दाष्ट्राय स्पत्तेः विष्टाचाराच्य न हिने सहयद्वा ध्ययन विवाहादी निन्द्रा चरानिश्चिष्टाः। ७३॥ ॥स्वामिनः यहन स्वते रिज्याने या। ॥४४॥

न्यद्गान्य दियम्मानः कती उत्य प्रविद्याद्यः द्वात्यं याः या न्य न्याः ना द्वा पिनः यम्मान स्यक्ष मीत्रा कल्युतः वस्तित्तस्म व विषत्ति यश्तदेव स्विद्धान व श्री पद्धाविद्यं सामाया स्ते इतिनचास्म ने वा यम मानाय व ति नहा ज्ञिमास विषक्तन्दृष्टं तस्यवाच निकत्वात् त स्मात्स्वामिन एव यन्त्वन तस्यासने युक्तर्रे ज्ञिमाश्याह स्वापिन द्वित ॥४४॥

॥ ज्यानि ज्या मिन्द्री द्वामिन स्तामिन स्तामित स्वामित स्वामिन स्वामिन स्वामित स्वामिन स्वामि

॥ अते स्र ॥ ६६॥

तुते होति यां वे कां वत यहे ऋ न्विनः त्या विषय मासने यआ मानायेवनामा शासते इतितसमा इहेवं विदु इत्ता व्यान क न्जेका ममा या यानी तिच भूते रंजे पायना नां ऋ निका थिम् ॥४६॥

॥सहकार्यन्तर विधिः यक्षणात तीयंत हती विध्यादिवत ॥६०॥
तस्मार्वाक्षणाः पाणिडत्यं निविश्व गत्यान तिस्रान्द्राल्या हाडत्यं विद्यान्य हति यत्रावाहरणा प्राडत्यं वित्यान्य हति यत्रावाहरणा प्राडत्यं वित्यान्य हति यत्रावाहरणा भागः परम पुरु वित्य विद्यान्य हति यत्रावाहरणा भागः परम पुरु वित्य यत्रात्य हति यत्रात्य हो सम्पन्त पा स्वान्य विद्या हति हत्य हो सम्पन्त पा स्वान्य विद्या हति हत्य हो सम्पन्त स्वान्य स्वान्य हो स्वान्

।।कृत्समानातु गरीह गोपसंहारः ॥४०॥

क्र स्त्रभावादितिकृत्य्यभावोदस्यविष्राध्यते व इन्या ख्रमकमेग्तायज्ञादीनेव ह्में। पासनानेन्य हर्ष्यम्यतिक त्रेव्यतमाप दिष्टानि आद्यमान्तरक मेग्ताचा हिंसेन्द्रियस्यमनादीनि तस्माद्ग्यहस्यस्यो पसंहातेने तरेषाम् ॥ ४०॥ ॥मीनवदितरे वामप्यपदे शात्॥ ४०॥

मोनवस्ति यथामोनं गार्ह स्थ्यन्त्रत ६६। न प्रस्य गुरुकु जनामोश्वातिम द्वी तस्माञ्चतुर्शामिष न्याध्रमाराण मुपद्रशा विशेषा मुन्यव दिन न्यम् ज्या भां प्रतिपत्तिः इतरेषा मितिद्व यो राष्ट्रमया वहं नचर्न द्विभेदा प स पारनु क्वात्र भेदा विस्त्या ने ति ॥ धरी।

॥न्यना विद्युर्वननवयात्।।५०॥

्यूना विद्युव निति नाल्येन ति हासे दिन्यत्र नालस्य भानावाल्यपि त्रयोवित्रो बावा ना लस्पक्र पेनाल्यां का मनार का पना दादि ने ति प्राप्ते आह

पातिषुत्य मोना ख्ययाः त्र्वातानि दिध्यासनयोः मध्येनात्यमिधित्वेन व प्रत्यावि निम्नां तस्य व पावश्रीद द्य पुक्तारामद्वाष्ट्रामाव पाना दिशेषम् स्तेन वहिः वस्ति मिरित्यन्य परिवान्यद्गः न्तु म श्वात्वाताता ना त्नस्य भावः कर्मना इ तिति दितेसित वगितयो न्यानारे पानश्रद्धीन समानानां भायः न्यासी तुमननस्मा तम नमन्ययुक्ती वत्युक्ति विका मुडस्य प्रकृतमन मः मननित्यानात तसमद्रानश्चित्र व वाल्यं नेतरते॥ ५०॥

of.

4

॥ छेहिन वयावस्तुत् वृतिनन्धेतर्द्यानान्। १५१॥ हे हिन्द्रभावा तिथ्व रामनना दी-यासने यु अनु शियमाने यु असिनने बनन तिज्ञातंत्रायते दृति नियम्य ते इह्याज्ञन्यान्तरे वे रिकाल्याने वर्ष हेने ति कृता अवसारि पूर्विकाहि विसानक सित् व्यम्न मेविसानाय ता मित्वाम सन्याय प्रवासिष्य वर्तने एक मन्मित् कत्मीन यान माभि मन्याय प्रनिमा नारु श्यते प्रतादी न्यपि व्यवसादि हारे सीन निया जनमन्ति तसादे हिकनेन विद्यानने तिप्राह्मे न्याह से हिक मियान म भवत्यस्तिय्रितवन्ते ज्यूयम्बी, प्रकान्तिवयासाधनस्य कास्त्रित्यतिवन्त्र नराइहेनक भिनेपाके ना न्यसने निया यदानुषानिन न्या क श्वितदा प्रमेत मामञ्चाद्मीन न्वान् कार्यस्य छन्तादि द्वारेशोन निर्धात्पर्धमाना प्रति जन्यक स्वायस्येनात्पराते गर्भ स्यायना नामहेन. श्रीतेषे देन्स भाव पितिवद्नी भ्रतिर्भनानारसित्तात् साधमाञ्त्रन्यानारे वियोत्प

मां द श्रीयति त समादे दिकाम् विमनं ना विद्यान न्यप्रीत वन्धाः श्रयापेश्पति स्थान ।

॥ स्वष्टा क्रियन स्वानियमस्तद वस्याव धरो।। प्रशा यथा नियासा जनानल विनः सा जनविषे निशेषात वियामामे हिला मु बि क.फलत्वकुता विशेषपति नियमः एवंमुकानय्युक्तवी पक्षकृतः क मिदिशेष प्रतिनियमः त्यादिन्याश्चाह एवं प्रक्रियत्नेतिन्य भामिति पत्ने का निर्वं भूतो निरोध न्याया द्वितव्यः अनस्तद्व स्यावधतः मुन्यवस्थाहि सर्वनेशन्तेषु एक ह्येनावधार्यतेन्त्रे नाह मुक्तान स्वानब्दा सानेकाकार यो गोस्त एक लिइ वा वधार सात न्यस्यूल वन सिवति ने निने नी निनान्य त्यश्यमाने असेवदमम्दर्भ प्रस्तादिन्यादिख्य तिभ्यः किञ्च विद्यासाधनम् स्वनीय विशेषात्म्वपत्मण्य विद्यायां के सि देने द निश्च प्रासा द्वेत् नन् विद्यायत्ने पुन्ते ज्युतिश्येषराध्यासा स्वायमध्यायम् पिन्यातिपानुमा। प्राइ निव्रस् स्वतान्पर्यविवर्शोत्ति। पाट्या यस्य त्रीयः पादः चन्द्र शेखराय नमः जो उम्

॥ ज्याचीन रसकुरुपदेशान ॥१।

य कताश्चय विचार व्यार भ्यते प्रास द्विकन्य विचन विख्यते न्यात्मानात्र्य र प्रकाश्चय विचार व्यार भ्यते प्रास द्विकन्य विचन विख्यते न्यात्मानात्र्य र प्रख्यः श्वात्मव्यद्वत्यादे यक् त्यात्र्य यः कार्यः उत्त व्याव्यत्ये तित्र मक् त्यात् प्रयाना दिवत् तावता विशास्त्रस्य मुता विज्ञातः व्याप्य मागात् न्याव्य तिरशास्त्राच्यः स्यात् त स्मात्मक् दि तिप्रासे न्याद्वया स्वित्या मागात् न्याव्य तिर श्वात्या मत्र व्या ति दि स्यामित्य कि त्या दिना न्या स्वित्य विव्या प्रति व्यापति यावत्स स्य ग्र दशीन पूर्वत्र वृत्य प्रात्ते स्वय ति यावत्स स्य ग्र दशीन पूर्वत्र प्रयाना दिना न्या दशीन प्रवित्र व्यापति यावत्स स्य ग्र दशीन प्रवित्र प्रयाना दिना न्या प्रयाना दश्च स्थ प्रवास विश्वय दशीन यावत्स स्य ग्र दशीन प्रवित्र प्रयाना विश्वय दश्च प्रयाना वाज्य व्यापत्वा त्या व्यापत्वा त्याव त्

।। निद्रान्य।। र।।

निद्वाद्याचिति। स्वाह निद्वाचीत उद्वी सम्बद्धान्यम् विद्वादिक स्वाह निद्वादेश स्वाह निद्वादेश स्वाह निद्वादेश स्वाह निद्वादेश स्वाह निद्वादेश स्वाह निद्वादेश स्वाह निद्वाद न

ं। नष्रतिके नहिसः ॥ ४॥ मनोब्ह्ने न्युपा सीत न्यादि त्यां ब्रह्मे न्यादेश द्राह्म वहाद हुए संस्कृत मनन्यादि यती कष्णपा स्पंत न्युती नहें उपासके न स्वात्मामिन्त न्वेन प्रतिषद्भा युत्ती कर्यवस्य का मेन्ने जब्ह्यां पदा भावात जीव स्यब्ह्या मिन्त न्यात् त्र स्यब्ह्य देश या स्य प्रतीकरंगा

पामकस्य जीवस्पन भदा भाजनकड्न सम्भवात् इति यास भूते न प्रतीकनी तथित्वस् कार्यस्य प्रतीकरण वहाल्यमवलाकाना तर्पत्रीकह्यमेन विस्तियत यह स्प हा दूषेरानि विलयप श्ना न् पादव जीवस्य व्रह्म वा मेवा व नो क्या त त दा जीव ज्वा पाये सड्य पासकत्वं हि यत्न न तहिं उपा सक्ता स्थापासक स्वरूपत्ना भेनका पंकार साथा निवबहारी एक्ट्रेक्ट्रंन वयीती च येत्र मार्मीह हय्तद त्यन्त भिन्त योः प्रतीकाया सन्याना संयक्त त्वं योज्यता तस्मान्त प्रती के रह न्द्रीय रिस्ता ।। ४।।

॥वसहिर कि कत्वाना ॥ ४॥

तनेव यतीक प्रनोच हा त्यारी मनज्यादि त्यादि ह स्तिह त्यापाकरीवा उत्नादित्यादिण असर्षिः तत्रमनोर्षे अस्तीम क्रीमा लोपासनीयम् श्रह्मरा। कल्यदार जेन उपासनाही जा त द्रीत पासिन्याह बहार हिरि ति बहारा। उ कि ए जात त द कि जिल ष्टे मन ज्यादित्यादी काणी जोकी ने हे स त्ये रा नदिष्टं करना राजवत्युमधंति किन्य मनोष्ट्रहानुपासीने त्यववस्त्रावर्षे प्रान्परानेन दृष्टिन सन्ता भविन्यति मनः प्रान्य सानिति परानात पुरव्या चेवाना याचा स्वारा होतर इति प्रत्येनी त्यन स्वाराष्ट्रावे प्राच्या री वाजी जोर शब्दार रिष्ट न स्वकः तद्वा । नव ब्रह्म स्याम नयः उपास्यत्वे अख्याः प्रत्यस्य स्नानु पपति तस्व श्रान्य शित्रा विस्पा स्य लेन का मी द्वारालेन घयापत्ने प्रयक्तीत न वद्वापि सम नात् तस्मात्पत्रीके वहारोग नत्यहरि, कार्य ति ॥॥।

॥ ञ्यादित्यादि मत्तयशुक्तुः उषयतेः ॥६॥

यस्ना सोतयातितम् द्वीधम् पासतत्यादिन्यदेनतां वतीकं कृत्वाक्रमाङ्ग्रम्ता द्रीयदृष्टि:कार्या ज्या वादा या दे बना दि त्यहृष्टि: तनो द्रीयदिन्ययो र्वहन्कार्यन्तेन पूर्वोक्त त्यायानवतारेशानियामकाभावाद् नियमद्वित प्रामे गादि त्ये ति न्यादि त्यर् छतान मीर्ड, संस्क तेन्यम तथास ति दृष्टिसं स्कृतक मेरााः फला तिश्रय समानात् विषये मेन कमाईः देनेता यां संस्कृतायां किन्तव फलमानेत् नहिस्व किपाइं द्वता यतः पत्रसायमध्य नि न्यत्यवादेव तायाः सावार गात्वे न जनाना

यन पानगोः साधारसायन्त्रन्य सङ्गत् तसारद्वात्वादेव्यादिङ्खितयो।। द्व

॥ पासीनः समानात् ।। ना

त्र्याकमेदुत्वत्र द्वापामनानां अभितन्त्र त्वान्त तत्र निन्ताना विसम्य ग्रही नेव स्तृतन्त्रनाद् ज्ञानस्य न्युता मिरिकापास न यु विचारः कि निष्ठन सीनः शवानीना युनि घमेन पुनर्ति न नियमे ने ति नि चारे उपासनस्य मानसत्वाद नियमः शरी र स्थिते रिति प्राप्ते न्यासीन इति न्यासीनए वोवासीत कृतः सम्भवात समानयुन्पयर्भवाह कररार्ग हिडपासनम् नचत्र इन्द्रताथावतावा ममावनित्रात्या दीनां वित्तवि स्पकराजात् तिष्ठतापिदेह धार शाच्या ए तं मनान सू समन स्तानिर स्राशासमं अनीत वायानस्यापितिद्रयाभिभ्यते - व्रासीनस्पत्त न भू यान्दायः इतितस्ये नेपासनम् ।। छ।

11821100110011011

अपिना वासनावनीय ध्यायत्यचे रहा सत्समान यत्यम प्रवाहकरणाम ध्वाय तिस्र प्राचिलाङ्ग चे छे व्या ति छित्र ह छि टोन्त निषया दिप्ति ते बूचवयमात्राह श्यते ध्यायति वकः ध्यायतिचाचितवन्दाः इति श्रामोन श्चानायामाभवतित स्माद्यासीनक मी पासनम् ॥ ।।।। "अन्तर्वावस्य।।नी

किन्द्रध्यायतीन ए खिनात्य न ए विन्यति व्यन न तन मपद्रय ध्याम तिवादा मन निराच्चापासन स्यासी निर्माने लिइन घडणाइन्यचल्ले

भास्मरान्त्र जा १११०।।

त्रिशः उपायनाद्वात्वना सनं स्मर्गन्त श्रुनोद्देशय तिष्ठाप्यं सादिना न्यतस्व धदाका सनाही नां उपदेशायेषार्गा स्वहत्याहरस्रोन्नेचीत ।१०।

॥यनेकाय्यतात्रनाविशेषात् ॥११॥

दिगदेशकालेषुसंशयः अप्रतिक स्थिलियमानारित वितेषायं साने दिने वुन्यार मेण्यु प्राच्या दि हि गादि नियम द त्रीना दि इति स्वादि ति यास न्याह यनिति देश देशकाले व्यथिल झरा व्ययन जनमः मो कर्षताकाम् नाभवनितन्त्रे वाचा सात् प्राच्या स्वतात् सम श्रुवानताश्रमे इत्यादिमुहर्भत्वामनीन कूलत्व स्पव नीयनम् तस्यासने कासता तने व त्याचाः ॥११॥

गा-याया यराम्स नाचि हिंदु ए म् गर्या

गतद्विभम उत्तर पूर्वी द्वामेर श्रमे बिना शोन प्रमे प्रदेशात ॥१३। गतस्त तीमा ध्याप के व विचार : श्रमे विद्या विद्या से कि विद्या से विचार के कि विद्या है के दिवरी ते कर्जा के ही हो हो के विद्या है के कि विद्या है कि विद्या है के कि विद्या है कि विद्या ह

गहतानिनः वापत्रयः कीस्यत् शास्त्रीय नात्यताये यस्तरस्य तिथा मास्तुतानिनः वापत्रयः कीस्यत् शास्त्रीय नात्यताये यस्त्यस्य तिथा मेन्याह इतरस्यति अवजनित्यनस्तु मामच्यीतः वापन्युरायं वापनति म त्विच्यते सञ्चराञ्चानिनस्तु उपासन् भिन्नं काम्य युत्रयं वापनत् धर्महत् त्वातः वारायं सम्बन्धिना सत्रोयस्त्रातिः वराम् श्राति सुकुत्

त नितासित्र मानिनः वापन्य ।।१३।।

दुष्कृतंनासर्वं पाप्यमा त्रामिवर्तन्ते इतिस्मात्यायवन् शरीयनाणिन लियते । १

गंत्रामारव्यकार्यं एवत् यूर्वनद्वधः ॥१५॥

तानात्युर्वं संभित्य प्रायवाय ह्यान्या र वर्त च नया ह्यार विकत्रला ताना र मनः समान विनित्र ता ने द्या प्रायवाय प्रायवाय र विन्न स्वारा हित स्वारा विन्न स्वारा हित हित हित से स्वारा हित हित से साम हित हित साम हित सम्या हित साम हित है साम हित साम हित है साम हित साम हित है साम है

व्रायस्यात्रतेष विनाश वाः, यु धन्या वा तिरि छः, इ सनी तानात्र्व मिहनम निन मानारवाय्य छितं य दिश्वते नारि वा द्वायत्र स्थापिका स्पन्न मेन देकत्री त्मनो ध महि म्ना मा शामवती ति प्रावे व्याह स्यापिका स्पन्न मेन देकत्री त्मनो ध महि म्ना मा शामवती ति प्रावे व्याह स्यापिका में ते के प्रावे प्र

॥ त्यत्री त्यापि होते षा मुभवोः ॥ १६॥ विभिवयं पुनि एदं प्रतेष विभाशन्य नं कि क्विषयत्री विभोग्रमनं तस्य पुत्रा दाय मुप्प ये निस्महदः सार्य कृत्यां दि यन्तः वायनु त्याप इत्याकांकात्र उत्तर यति खतान्य ति अति हा त्राहित त्यक मेता अवन्या प्रशासित सा अकृत्यापाः प्रत्ये क्या कियते तस्या रूच वितियोजः एक षां भा विनां सुहदः सा अकृत्या मुण्यान्ति इति तस्या रूचे दं अयव र क्लेष विनामित स्वराम्य तथानेव ज्ञातीयक स्थकाम्यक मेता विशास्त्र य प्रथकार कत्व अभयेतर पिने भि निनादरायरायोः सम्प्रतिपत्तिः ॥२६॥ ॥ यदेन विद्ययिति है।।१०॥

नित्यम जिहानादिहार स्वयद्वार शा मनःश्रु द्विकारणां सह विस्था सहेककार्य म्मन ति तन्त जिहानं नुहोति इत्यादितनाद्वा विसासं युक्तं केनलं ना यएनं विद्वाने न्य जिहानं नुहोति इत्यादितनाद्वा विसा सं युक्तं में ने तत्कमें ब्रह्म ताने पयो जी न दत्यार हितुं ब्रह्मा युक्ते गया पार्च क्रमें बन्दं महास्त्वासि दूरेण ह्यन्तं कर्म नुद्धिया गाद नन्त्र में त्यादि स्व ति रिति प्रामें न्याह यदन विस्योति सत्यमते दिस्या सं युक्तं कीर्यन्त्त्त्त्व रिति त्या वितद्वहितं ना त्यन्त मन वेशं तयेत मात्मानं युक्ते निवित्वा विद्वाने द्वाने हित्या प्राप्ते हित्या स्वाने वि विद्वाने द्वाने द्वाने द्वाने स्वाने स्वासन स्वाने हित्या विद्वाने प्राप्ते ना स्वाने ना ति तस्यात्सा वासन नित्य पासनस्व के में तो वीय मान प्राप्ते ना स्वाने ना ति तस्यात्सा वासन नित्य पासनस्व के में तो वीय मान प्राप्ते ना स्वाने नित्य स्वाने हित्य वासनस्व के में तो वीय मान प्राप्ते ना स्वाने ना ति तस्यात्सा वासन नित्य पासनस्व के में तो दिस्ता वार ते स्वाने विद्यासा च न इतं ॥१२॥

ाभोगनित्रतेरसपित्नासम्यते।१००० व्याप्ति स्वार्मा मुक्तिरित्र स्तिन विति सं प्रयेनास्ती त्याराष्ट्र ने कुत्र यार व्यवस्थिताय भोगाय जनम् मुलीकृते यु पूर्वी क्रिति व साम्या प्रां सत्या प्रांचित्र कि प्रते तस्य पत्य प्रदेश प्रांचित्र के स्वार्म प्रांचित्र के स्वार्म प्रांचित्र के स्वार्म प्रांचित्र के स्वार्म स्

॥ बाङ्मनीर द्रोनान्हन्याश। त्ययापरास्विसासुक्त प्रास्ये देवयानपथा मनतार विव्यन प्रथममुन्ना नित्र मेमा वष्ट कान्याच प्रस्थामप्रम वस्पप्यतावाइ मन सिमम्प सते मनः पाराप्तारास्तेन सितनः परस्यान्द्वनाया मिलनागादिह्यो न्द्रियासी त्रीयना तत्र किं स्वद्भण तो वर त्यांचे तिसन्दे हे वाड मन सी तिभुताचीनश्याप्रवाणात् स्वह्यलयद् तिपादा न्याहवाइनमन मीति मन मोवागादिक म्प्रत्यनु वादानम् नाडु वादाने एवं कार्यस्य स्वस्यात य इति शासे न्याह नाइनमें हर दिने व्या घर श्रीना नवा ग रीनां स्वस्पलयइतिक तिस्त्वनुपादाने विवयमह ति जलप सिकाङ्गरेषु सहयकाशा तिमकायाः वते र नुपादाने अललयर श्रीनात् मतोवाक शब्देन व तिल्यते व तिल् तिमतो इमरेनो पचारात् तस्माझगादिव नीनां मन सिलयः कृतो द्रश्रेनात वृ श्यत हिकार ता वत्ते पूर्वीय मंहारा लोके कवान हिवाजम न सिमम्प अन इति शब्दः तनाह शब्दाः ज न हावते प्य स्थित हैं। व मिन्द्रिय मेन सि सम्परा माने रिस्पना विशे वारा सर्वे न्द्रिया गां मन सिसम्पतिः भू यते तना पिनश्चरा दीना मिप सकति मनिव जिल्लारे सोव सर्व न्द्रियासी मनानु वर्तन्ते सर्वेषा भन सि उप सं हारा विशेष पिवा जो यह रांवाड- मन सि इत्यु दाहर सा नुसंधने त्यतन्याहन्यतस्व ति।। या

॥तन्मनः प्रासाउत्तरात् ॥३॥

वार्मिसान्य निसम्पत्ति विव हानुनं मनः प्राराद्या गीन समानित्व देति क्यानिति विवायने तन्य शुन्त गृही निम्म कित्व के तन्य शुन्त गुन्त प्रवास के विवायने तन्य शुन्त गुन्त ग्रही निम्म कि विवायने ति प्राप्त ग्रही निम्म के ति निम्म कि ति प्राप्त ग्रही तन्य होत्य के तन्य कि त्र प्राप्त गिन्त ग्रही तन्य के ति व्यास निम्म कि प्राप्त निम्म प्राप्त ग्रही निम्म कि प्राप्त निम्म प्राप्त ग्रही निम्म कि प्राप्त ग्रही के निम्म कि प्राप्त ग्रही के निम्म कि प्राप्त ग्रही के निम्म कि प्राप्त ग्रही निम्म मानित्व प्राप्त प्राप्त ग्रही निम्म मानित्व प्राप्त प

पाराद्विसान्त्रम् त्वम् स्टद्घरेगारिनापासनो ताद्यातं किन्तुप नाद्वाभावतद्कतं म निह्मारो। कस्य चिन्नयं प्रयाभस्तसमा साझा दनुपादाने पाराध्य त्यामनोत्नयः, व्यक्तितद्वतोरभदोपचारः,॥द्वा ।।सोध्यक्षेतद् प्रामादिष्यः,॥स।

॥म्तदातः मृतः॥५॥

कं या मारा स्तजितिहयाह भूते व्वितिसपाराशम्यको ध्यक्षत्त जासिह चरित मेतेषु देह बीज षु सू इमकावित्रक्षत्ते घणका प्रित् द्वार मणुराङ्ग ज्वा मार हेत्रपुर्व बजा ति साणि सुद्भात्मार व्यिष्ट अम्ब्रजंती तिनक्तं शन्यते तद्दत् ॥५॥ ॥ते किसान्द्रश्रेयताहि॥६॥

॥समानानास्य प्रयक्तं माद्य तत्त्वं नागु वा वा ।।।।।

निर्श्वराम्बन्धः उद्कर्नियमा स्त्रापित वस्त तय सुस गुरावस्त विदः उद्गित्का न्ति ने सावज्ञा नि ना गुरकान्त्या समानावस्त नो कर्षमा सम्मात दित्यरीत संसार ह्णस्प व विषयन्त्रेन तत्य सिद्ध र वम्मुता थाः उद्कान्ते वे श्राप्यस्मा पवित स्वादि ति पास पार् समाने ते

वाङ्मन योत्यासां इत्क्रीन्तिहर्वानु वाः समानाः वास सपक्रमात् ज्यां व त्रायस्मरणात् विद्यान्तान युका त्रितं प्रकीन्य माझना डीकारम पात्रमत पविद्यं संपत् प्रतिना स्थारणास त्यक्षे वय कार् मनुभवति व्यान व्यापान मदः चिरुषसात द्रमवनना निद्यस्त ए हिन्स्य लड्डः स्ववायर पिसमाना उत्काल्यामी शेल्व उत्कप्तला भेवत वेष मामस्त न ज्वम तन्वं विदुषा पास्यांत्र मुता मूता स्रयन्तं स सुप क्रमान्यमाह यु उत्ताखा इद्सर्व अद्भाष मत्त्र वाप्या सहित तसात समानेव विद्वस्ति दुषा हा क्षानितः ॥६॥ ॥तस्योतःसंसार्ययद्शान्॥ ॥ ॥

तेनःपरस्यान्द्रवतायामिन्यत्रतेनःसाध्यशं स्ट्राशां सन्हरण त्रामं भूतान रमहितं परस्पां दनतायां सम्तरात इसुक्तंत नात्य निक्तं सम्पाति भीव गुमहीत गरमात्म ना भूना वादाना न्याना द्रोत पास पाह नद्याने तितात् स्रानादिकर तामसम्मनं ते न मादि मून स्था मा वीत तसंसार मा झात् मान्यक्तान विभिनाद्वतिष्ठनिकेन य निलय एवसं सारियाः तन्व विदस्त विद्रम् प्रताना प्रतानी म्बद्धवसालयोऽस्तुतस्य निता व्यामासात्नात् ॥ ॥

गस् इमंब्रमासांत स त याय तदरः॥ ना

तन्तेतर भूत सहस्रतं तेजा जीनस्याश्चयो भूतं नकारा न्वस्त्यतः प्रमाणत श्र म्सममानिक्ताः नाडी निर्ममनेन सी दूस्य स्माल व्यत्स्य त्यात्मास जारायपात्तः व्यक्तवा ना प्रातेवातः सत्र एव द्वान् जिन्द्र न वात्रवीस्वीता वलमात (पतः (पिन्स्स्यालया रोरान्त्रीरक) इन्याह स्वामिता है।

गनापमद्भाता।।१९०१ प्तः सुक्षात्वा नास्य रपूलशिरस्या पमदे न दाहादि निमित्ते न न सूस्म

यसिर छण्यसत्र साहने ति ।१०॥

।। प्रयाननापवसर्य उसा।। ११।।

म ता बस्यायां स्थित गिर्हे क्यादि मु सास्वाचे उद्या नापलाय ने जीवस्ता । मा मंबायत्र म्यते त्यताः य सिस्यूत्र तश्रीतार कि त्यपा नाय रुने व उसात्म वयम्तर उद्याएन जी निव्यान क्रीता मत्रिया न इति भून गर न्याह प्रत्येवनित्। गष्रितवचा दितिन न्यतारीरात्।।१२॥

न तस्य प्रामा उत्कास न यत्रेवसम त्री यन्ते इति न त्व विहा शसुन्तानि जिना एत् निवा हो बाद्या मानोत्कानीः प्रपादानं नीना नदहः दहानुन्ता न्तो मरसामानः यसन्य तत्याश्रद्धः ते प्रतिबद्धाने त सायः यानि निर्मा जलं य पाता यत जल्दीत नातीर् त्रयतिक नुस्वद्धेये ता नीयते

तयातत्वविद्धाराणः दहाद नुन्का न्या विषान दहनति दंती किन्तु नीय त्र अती नीवना भावा न्य ता दह इतिन्य नहार, दहादु किम्य नीवन सह प्राराण ता मवस्थिती प्राराणना मवस्थातन्व न दहान्तर अहरणस्यान श्यकतान्य कि रेवनस्यात् तस्मात्य ति विश्वति नेतः दह स्वापाशनं तनीनः नीना दुत्कृमण् प्रीत ष्य द्विश्वद्धार्थः व स्थितिन नेत्रास्तान्तरं तत्रस्मान्याराण उत्कामान्तर्तत् तक्का स्थाय प्रायायानिनः व्ययसाधिक ता देही सम्बन्धतेन दहः स्व द्वाराशियद्व द्वानिनो ने स्था स्थं तथा रासा ह दक्कमशानिक । दूरस्याः । १२३॥

।। स्व छ। होने बाम्।।१३॥

समाधानमाह स्य ए इति यतः ते बान्ति व्हारित सं स्य ए दशपादन एन निषद् उप अध्वते प्रमाय म्युक्त सो स्य यते उरस्मा त्याराणाः उ ,का मिनत न्यां हा नीत इत्य न सहो ना ने यान्त वल्लाः इत्यन त्का नित्य सं यिष्ट ह्यान हि श्रूयम र लें न्ते षु पारेणे षु ह्य यत इत्या शङ्का तने न समन नी यन्त इति मररा। सिद्ध में सञ्च्छा या तिन्त्रा च्या यति न्या स्मानो म्द ता क्रेते हीते स ब व्ह्यरा हर एस्य उदका न्यव के हन्द्र या ति समाम न नित देह स्मेने ता निस्यु नी होति ता समाद्हा दु तका न्या दि निष्य प्रमृ उदका न्या दि निर्मा सामा ना सामा ना सामा ना सामा

॥सायतेन ॥१४॥

समितेमारते गर्गारामानः सम्बि भूनात्मभूतस्य सम्बन् भूतानि पत्रमतः द्वान्य विमानि मुह्यत्ति अपद्रस्म वदे विशाःतस्मार् अस विदे गत्युल्क्ना क्योरभान इत्योह समयेत इति ११४॥

।। तानि यरत्या द्वाह । तथा

सित्दृषं ; कलापूत्या दूतरेषा भिन राम क्रेष उत् निरम् शेष ; त्राम्यनम् सामान्या न्द्रुक्तान क्रेषता प्रसक्ता नाह निरम् शेष सम्बन्न नात् कलापूल य मुक्ता - प्राहिभियो तेता सां नामह्ण पुरुष दूसनं प्रोन्यते स्थेषा इकला द इत्तो भनति - प्रीन्यानिमिक्तानां कलानां विसालयेन सान्त्रोष त्वंतसम्द्विभागः ॥१६॥

॥तदाकात्र्यञ्चलनंतत्पकाष्ट्रातस्रोतिसासामर्थातन्त्रेवमत्त्रम्यनिसामा न्व हादीनुभ्टहात्रव्यात्राधितस्या।।१६॥ म्त्यान्त्री स्मेषामार्गीयक्रम वर्धन्ते समेद्रयुक्तंद्रपत्नीं मार्गायकुमेषिसाव्य



मस्तु हु स्र गातनारः सम् , न जन ताति तथा हितस्यहे तस्य हु दयस्यात्र म्यू सो न तेते न प्रसात ने बातमा निक्कामीत न शुष्टा ना म्याना आत्य व्याना शरह के प्यान अयमचीः वाक् मन तिस मास्त इतिक्वता सनीवं निक्त शरीर म् रा नावन श्रेषम् परमात्माने पदात्रीपते तदापूर्वे जनमसमासं भवति अयाजनमान्तरीपं त लिइ म पुन्हें देये पादुर्भव ति त सिन्तवसर हृदया जाने रिशन स्यालिङ समन्तवाभावित्रनाताक्र नात्मको दुर्गः सः यत्न प्राद्यत्वेन तोकः प्रसिद् क खित्प्याता भव ति ते नयुक्तः, सनाडिए भो निर्मन्द ति एतत्सर्व बांस पानं तस्यान्त वासकस्ये तर्भ्या विज्ञास्त्रीत मासन्याह तदांक इतिमर्दा न्ययेवनाद्वा उपसक्तामळाति इतराधादत रेकुतः उपासकेन पूर्वान नाउपा विलिता संग्रावस्त विद्या सामव्यी व्य समान न्ह्रवोहि द्या गुप्रशा तनम् विया साम व्यात् तत्यकात्रात् ना देवसा विदान गळतितके षः विद्याशेष भूता भूदीत्यं नाडा सावद्वा जित्त त्री क्रित वितालिया तामम्बर्धं स्वयेन प्रति कितीमिति पुक्तमात् स्ट्यात्नयन्त्रस णानु महीत सद्भाव मायन्तः शतिभवादिकवातिरिक्तमा मुक्तन्ववा नाडरा निद्धामती नित्रंतर्ने ने न हर्यस्य नाड्याः इडवास्नुति प्रसमा नोत्तर्ग साम्याम् ॥ १६॥

गर श्रम्बनु सारी ॥१०॥

अयवारताहरमस्व माद्राहत्युवकम्य नार्डा सम्बन्ध मुन्ना ज्ञाने स्व र स्मिम् इतिमाक्र मते द्रश्यकं मूर्यन्य पा निजेतस्य र विमसम्बन्धः स्रुत्तः म्य चहित्रस्य सम्भवित्तरणि म्यतस्य र व्रमी नाम माना वितियासे न त र व्रिमीम हितिर विभनार्ड स्मिन्दत्यात दृह मानी खत स्व श्र स्मझवाषु देहदाह उवत्य म्यत् प्रहरा ना न स्रितर वर व्रिमनार्डेस र निया जन्द र्शमित तस्मा द्रशनिस्व विस्तार व्रिमेशा ति । १९ ॥

॥ अतस्यायन विहिद्दास्ता॥ २०॥

दिस्ता यमे मत्त्र स्था पासंकस्थन वहा न्याक प्राप्ति उत्तरायरा स्थान बस्त लोक पार्थित स्था प्राप्ति प्र

भयोगिनः पृतिनसमय ते समार्त ने ते ।। २१॥
ननुमनका लेन नार तिभाव्य तिने ने पाणिनः प्रयासायां तिनं का नं क्यामि
भरतर्वभाद्र विकाल वातान्येनो यक म्याह सारिकाल विशेषः म्यानायः
संय नियामत् क्वां सारिका ग्रायन याता द्वान तिथा म्यानिका प्रयास्त स्वान क्वां स्वान क्व

॥ नायुशन्दा दिवशमा ।। ॥ ॥ ता नि य प्रीमस प्रान निन्य विषोऽहर हु नापूर्य मासाप सं न स्माया न खदुदर हे ते प्रासा ने भ्यः स्मान स्मादादिन्यं त स्मान्व न्द्र पर्सं न स्माद्य दिन्यं त स्मान्व न्द्र पर्सं न स्मादि खुनं न त्युरुषो प्रान न स्माद्य हुनं स्मादी ति खुनं भी भी द्रा खान्तर खुने न त्या दिन यम या न भी ने यो न स्मान्तर खुने न ते न वा गोर्थिन

तेषु बहुत्तों केषु परापरावती वसीन इति भुत्यनारे विशेषित-वाद्यका पे मेव बहुतावावग नायम् । बहुत्ते का मितिश्रुण-नारे खुनं यहुव वनं कार्यपरने इवस्ता भे दे को प्रथने : । तस्म कार्य विषयमेवेद्र मित्याह विशेषिते वि । । द

शकाणी ने द्वा पतिण महा तः परमीमधाना त १११०। निमान वेस पायो ने म जनरावती इतिन संभवति परमादमान व निमान विश्व विश्व

।। सम्तेष्म १।११।। उन्मधिममिनाइ समेति शिता ब्रह्मणा सह ते सबे संप्राणे प्रतिसंचेरे । परस्यान्ते स्तार का के: प्रविश्वित परंपद्भिति । तस्मा त्वापिवस्ति वपा गांति शितिस्त्रकः । ११।।

।। परंत्रीमिति श्रीन्यता ते ।। १२।। यद्मपूर्वपद्ममार द्वापं मिद्धानाः कृतः मस्त्री रेनप्र दश्यते परमित्रे । ते मितिराचार्यः स्म स्तान बद्धाः गमपतीत्यत्र परमेवब्रह्म प्राप्यती ति मन्यते ब्रह्मश्राद्धाः । तत्र सुर-पत्तात् ॥ सुरक्षे स्व से प्रत्याय इतिन्यापात्।। १२२।।

प्रवेतपादिमायनाम्यत्वभागे द्वानाम्यक्तमार्थः व्ययपात् । युग्तस्य ययुग्नम्युक्तमार्थः विवादि स्वान् । युग्नस्य ययुग्नम्युक्तम्याने विवादि स्वान् । युग्नस्य युग्नस्य म्यानियद्वां म्यानीमित्रवे CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by \$3 Foundation USAZ (1811) कं. स्. ता. (८५) अ. ५ पा. ३

।। मय कार्य वातिपत्याभिक्षात्वा ।।१४।। किन्य प्रजापते : समा वेश्म प्रया इतिवायका पिथि यः प्रतिशादनिकाः। नामक्षप्रानिनित्रमाने यदनारा तद्वहते ति कार्य निन्त्रस्थीय बुह्मणः श्रुत्वात्। यशो इहं भवामि वाक्षणामानित्व त तस्य प्रातिमाङानियम ताम महद्यश द्वति परस्पेव च शहरानामत्वप्रशि-हेः तस्मात्यरिवयामित्रम्तय इति मेमिलिमत माहन न कार्योत्ने।। नावेतीयशावानायायणोत्ती तत्र गत्ययन्यारि भाः का येष्ट्रा प्रत्यय दा एवामाना च् रूपं सन राज्यसम्परल पद्ममामासापिन्समप् तिस स्वासादाना म्रायार लादिति दिलाययहा तु-वपदा एवं । महत्रसत्यपि संभवे मुख्य सीवा वस्प्रमा णामित्याद्वा इश्वता का द्वा प्राचित्र । पराविद्वा । प्राचित्रणे इति त्रस्तुत्य भी विधानाराश्त्रपम्य म्यानीतिन भूपप्यते। विष्युड स्थाउ त्यूमणे भवनीतिवत्। प्रजापतः स भां नेशमित प्रवेवाना विन्देयम कालेशिप्रतिपता मिसिक्येन विकट्यते नस्माद्पर विषये व गाने श्रात्र. के चिद्विपयोसे ता तथा: वस्ते था: प्रविषद्य सिद्धाना भावमाहरतन्त्र मन्त्या त्यान्यपत्ते ब्रह्मणः। ग्यमा-मेव गम्पते। मचीपाणिकं गनाना निष्मित्र विषयम्य श्राम्येव तथाक्त्रतेः । ग्युरिपुकं वृत्तेया-मिष विस्तरभवान्तो त्यते। तस्मात्कार्पनादरि रिखेव + पदा स्थात । परं ने मिलिशित च प्रविष्यत्वेत पद्मान्तरप्रात्मानं शिष्पन्यिनं वेशायाय स्थित मिलाभपाय स्त्रकतः । ११४।

भवाषीकालम्बर्गाल की तिस्वाद्यापण उत्याप दोषात का पृष्ठा । १९४१) कार्य देन विषपा मति के परिविषया इत्युक्त मिदार्नी स्थतान् वहन मामती त्युक्ती इमानवः पुरुषो भिन्ने भवाकित्यास्याते व मामित्र त प्रति विषे पासका निषि । सम् स्वाहित्यि शिष्ठा वश्च विषात्स्र की किति प्राप्ति का प्रस्ति के ति — प्रतिकाल स्व न भिन्ता नियति वाद्यापणा अन्य ते। महत्त्र प्रतिकाल स्व पास्त्र विषयती त्युभया भावा भ्युष्ठा में का श्वाप्ते । षो इस्ति । ग्यानियम स्थाप स्थाप प्रती का न्यानिक के श्वाप्ते ्र प्रयतः । तत्र तं चन नहा नहा ना ना स्वाप्त के । तं प्रया पे पेपास तेतदे व अवतीति स्तृती बला भाव मालका कर्न वेहतप्रापि हेने रित्य व गमें का नहि प्रती के । पासका तां वहल कर रित्य के ते सत्य तो कं म के पुर । तर्मा दश् ति विशेष बचने तत्क न क्या पे म बहुता पास का नां में बत-त्या पुरे ती वाभा १५। ।

गितिशेषं च द्रीयति १११५।
किन प्रथापती लं तेष्व भी ती तारत कारत खूप-ने तनास्य व याकाभ वारा भवती तिनामं बहुते स्पा-मिनः शेष्य शास्त्र का प्रमान विशेष स्नात न्यं भवती-ययः। क्यं तार प्रवास्ति व वाप्या सत्य ता काप्रीष्ट्र व व नवलाल्क्रमः तस्मा न्या यतान प्रति नेता पास्त्र म न्यस्तो के प्रापयत्य मा तव. प्रति भिन्न द्राह विशेषेति। त प्रतिकास्त्र मात्राय विवरण त्यस्य त्या वस्य र तीयः प्रथा

205 म्बामिनियात्त्रम् नामार्गान्योवन्यः। स्व प्रवित्रिद्धः मोशस्य फललानुवर्षातः। तित्तारात्राकालाला कारण पूर्व साद्धवाभावात्। तस्मात्व विद्युत्वरूष मेव मिलि द्यम 11911

119 के. युक्तिकाताता । १२१। काः मुनाविशेषः प्रवावस्थानाः इतः प्राह मक इति। गोनामानवादा के इत्युक्तः स सर्वनकारितम् कः श्रेष्ठी वात्मनावीत्रहते, पूर्व जावन्यो भवत्याग्रीप नीव विनायमिनापीतो भवतीत्यान्यानाताना वाते वाद्यापं विशेषः , काश्रीमया भी मत इतानाम्याते वित्राताता , इताना ते में भी न्याया प्रमाणि द्रवास्थानं देखिति ही तमा सानं व्यायोपत्रे मात्रे राण, ग्यथरिरं वा वसमां न विवासिये स्प्रात इत्यु-ला, रवेन स्वणामित्रियप्याते साउत्तमः पुरुषः इत्युष स्पर्ताने, रोमित्यसानरेण द्वात 113.11.

11291A1192011A 11311 क्षयं एता भी ते इत्युवाते क्यो ततः श बुस्य भी ति के का पन्योगतिकार्व हत्यात विकायस्य तत्वष्रासाद्धः। न-वादन) निरता विषया का नियद विमुका मिनित् महतीति चेलारः वाद खालेति ज्योतियातेव प्रकारणात "कपान्यातमाड्यहतवाणाविहार इत्योतेमपुन ने परात्मिति मिति ने अपेति ने उपोतिमाद्यम् 'प्रकृतहां-ना वक्तवाक्षायावसङ्गत 'तद्वा कान्योतिवान्या तियति ।।द्रा।

।। ख्रावभागात रखनात ।।।।। मन्यानां मानारां प्रविभाव वास्तातिकां मानारां प्रविक मिटापदेशान् " रुष् संप्रसादः परं ज्योगि रुपसंपदो व. स. म. (१०३) अस वराम

या संप्रमाप साय भी मिलत त्वेत उत्पात शाका थी व्हान मीलेन 'मरमान्युन स्व निस्य द्रपं ब्रह्मरणे भिन्तिमितिष्राष्ट्रम्यह- ग्योवमाग्रेशस । परेणात्यनाऽ विभक्त एन मक्तोडनित्रम् न्त्रतः द्रवात "तलमात्री " अंड के हमारिम" पना मान्यत्य प्रशति " न न तार् दाद्व यामास्त तलो गर्मियां पत्पार्यत् 'इत्यादीन्याविमा गर् मेर्नेमात्मानं दश्मीना , प्रधादश्नमेन य फलं स्ट्रा तुन्यापात् वधादं शहे शह भारतं तारमेन भनति एवं भूने विज्ञानत प्यात्मा भवति भातमिति वान्यात्यि। भागभेव दश्चिति स्वे मोहम्तीतित दश्चिति। पूरा

।। बाइनण मिलिक्यासाम्। प्रयाः ।। ५०। रवेत राष्णामितिवप्य ते नापर राषणीत गर्व तमा मा माद्विश्वामान्य त्याने। मुक्तर्गर्थ द्वारम् तम् यथामा प्रपड्न पापा सत्यकाम सम्मिक्ता द्वीत सिविशेषम् "वया से त्यावधाताहत लारोड्वासी क्तारमया एव एवंबोर यमाना प्रतानवातरण शति विशेषिभातम। सते रूपे विस्तुला नप्रित व्यामान संभवताइतः कालामे देत यत्र सम्भान द्वात प्राष्ट्रे ग्याह-बाह्मेणाते - प्रतिपत्त भवाद् पुगप देव सिति शेषत्व तिनिद्रेश्वते उपपादी येते मुत्तर्थना तिरिवेशेषलं वद्ध प्रतित्या न रिद्वती व रिनेति प्रतिव तस्य स्था वस्था। सि दी कि कालामेयुक लयत्या तस्याद् जुगवदेन सिवेश विविशेषते द्वी । 411

।। चिति तत्मान्त्रण तदात्मं कलादि चादु लोति ।।६। मतानार माइ- तत्माचेणीत, यदायपद्रतपामता व्योभेदेन निर्देश रत्याणिश्वस्ति निकल्या । ११० ने 'सेन न्यमेगाइस्यात्मन: स्वरूपिमान सेन त्या मेणामानिखानियुक्ता यूनान्यनादिष्यः मत्या CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

年, 积, 州, पसमातः पत्र तेकाकार्लप्रतिषेपात , भ्रवस्त त्रथागित्राद्व। दृः यामात्रमात्रपं त्रमान्त्रयः रोषप्रा ने ये व प्रक्रिका गायुपदि मनो धात्मका भ रत वप यात इत्यो इताराम मन्यत ।।५।।

। रिनम्युर स्थाया सूने भावादीन योधावारा माना एवं मिति। स्वमीप पारमाणिक सेत न्यास्वक्रपाम् पामें डिस वद्भवार्विद्याम् दाया प्रविश्वाराष्ट्रा विभाग हन नियम बादी वन नियम समायुत्पार्था मनादरायाणाम्यायो मन्यते ॥७११

॥सक्तलपादन मु तन्छ्रते ।। रा प्रनिधुक्त्रणाक्ष्यण (वर्दिमक्तिविवात्त्राय) वद्गाला मापदाणीय मुलेर विग्राष्ट्रताना हु-नारः ध्रवते तेः। तज्ञानिद्यांद्रमानेण व्यक्ताका गतस्योषायानकर्य भोग्य नस्तु सरिष्ट्राम्नायते। स पदि विस्वासनामा भवाने संकालपादिना-स्य वितर समितिष्ठानत इत्यादि तत्राक्ति स्था ल्यमानात्ममुन्यात म्न निम्नानार साहमा इति संदेह वाहता हार्य हेन्स्यादातः तत्रमक्ष मार्ग त यात्वे ग्वायामाद्य नुत्यत्वेन पुरुताभोगा भागप्रमुद्धार्यात्र मंत्रात्रीत संका ल्यादेवति स्वकारण सित्रमातस्वस्तान्यमा ल्यापि भोग्यसको वाह्य ह न्यावर्तनात । म वार्गामाद्या साम्यम उपानि भोदण समलस्य। त्यस्त ज्यायतं शकात्वात् । अपायवाषुसाद्वास्मेना शक्ति निर्देश्यातात् मस्मात्सेकल्यमात्राभामात्रा किहेर्नः ॥ न्। व । । अस्तानमानियपतिः। । रा

गम्मावं वादोरेरा इ सेवम (१९०) । मनस्तावत् संकल्पसाधारं मिह्म 'न स्वरार्थ-मिनाने के ति निन्नोते 'न मक्ये पादी र स्वर्थित में निर्देश में निर्देश में बाधावं विद्वाम ही यमान स्वामनाते पत स्वं हाहि प्यामाय: 'मनसेवेतान करमास पर्यं स्मा यसे व्रक्त करमा है ति मनः श्रादी साहिबा स्वापाद मनसे वित विशेषणं त स्वान् । नस्मा क्राप्येंड भावः श्रीरे विद्यामा मा । १००।

र सं ता (१००) अह वादरायणा रन्तुमयो वैयां वंदराया मन्यते वदाशासी तारां कालपातं तदा राशियां योते यदालशारी रतातप्राधिय द्विस्तासं कलालीत सत्यसंक ल्याने निन्या है। हाद्याहन त्या दे वित्यो द्वाद्या ह: राजा मिलोड ही निया उप पाला दे प्रातियो-मान स्वमना कीलाइ द्वाद्या इस्विदिति ॥१२।। ॥ तन्त्रमाने सन्यय बद्या में: 119311 पदान्तनाः द्वात्र पदादित्यामानः इत्य सन्धा स्या मेरारीरायामाने इखुव लोक्युमाना सर्व विवाद -पः कामा भवन्ति सर्व भोश्नेडिष स्वः स्वंह्यप्प यते इत्याह तक्सातमात द्वात । ११३। 112मवे जाग्मिस्त् 119811 भावेत मार्च प्रवासामाना स्वीप माद्यः कामा भवन्यं मुक्तस्यात्युपपया. त इत्याह्यांने रात मार्था (प्रमुखनद्विशास्त्या क्रिय्य वाते ।। ११) भावन्त्रीमानियत्वय सप्राधियल मुक्तस्याक्तम्। तन में द्वामवती साम्द्रमा मुजापद्रमें का प्रमि कार्रीयक के एक मा प्रति ते में का यह सामान इतरे कियात्मका: भ्यात्म मन्सीर्वह भाव स्पा भीतात्वात्वामा वा द्याते प्राप्त मार्था भीता १४॥ वदीपनवाने रायसाया हिन्द्रीय सि। विसे करे व पद्भियो इमेक पदी वाभाव माप यते विकाश्या निक लागात एवमेन एव विह्या रेशवय में देने के भाव सम्पद्ध सवी। में श्रीमाण्या विश्वानि CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

व. सं ता. (१९५) आ ६ वा. ६ श्रिवणमवात, शास्त्रं कृष्ट्यान्त्र वत्यारियान्युपार मेनहांवक त्याम मापे मीना त्याये हैं। नव निराम मांशरीयणां प्रवीतः समानीत पंचातमानी भेदानुवात्ते र ने का शारीरवी गासम्बद्धात र कमनीड्न-य नीतिसमत्या स्वापराण संत्यसं के लपलार्ग-क्यात सरेष तेष्वांचा भीदादाला नी इति भरे जा इति। छात लं तो द्यते स्वैन यो जिलाम नेन प्रतिर्योग व्याचामारणको । तन् म्राम्या मुसार्याते म्र रीरावेशाला श्वण मेश्वर्ग प्रस्तित के विज्ञानीपात वत् गाद्वतिष्यमात्ते वीद्वतानीपात इत्यादिश्वातिष् (मजागद्वापार्वजे प्रकारणाप्रमान का कि लेका की मार्था) स्वाप्ययः सुक्षियः सम्पातः कीवलपं तथा सुष्ठाप्रकी वलपयो १ व तरावरचामवेष्ये त्र विशेषसं शामावतं वतं केतनात-नामियात् पत्रस्त नेवित्विक्तार् वशादाविक्,तंत्र्रे-। तेम्पी भूतेभ्यः सम्वाप तान्यवान्तिश्यति मध्य संग्राडामा, समुणित आविधारितपाकी वरमागती त्वमादिनद्वस्थानारं अमेतदेखर्यमुच्यते न्याद्वी षः । शे सम्माग्यसामा सोपासकाः हाह मतसेव्यामा मुन्य मन्त्रीना तेषांभागोगों देह न्यपमान्यव्य मत निर्प्रदार सन्द्रता त्यास्त्र हु नं तत्रा जापा ति द्वारा निर्वारा 11967 | । नगद्वापाटवर्नं प्रकर्शाप्स निहित्तन्वा च्या ११ ६ ११ (भप्रताद्रोणदेशाद्रिमाद्रिने ने ना रियु नामर ना मराइ लास्यों के : भरा वि पदारित्रमात्राष्ट्र प्रात्पादक प्रकरणेषु सर्वेत्र परमा लीव अगत्य पृत्वनावग्रामाने न को इपियोगी भूकोवा। प्रम्था इते के त्रा त्वे सात का श्रिक्स स्वाति करित्र

वृ सि ता ११७) अभि वा ६ 211 स्वाराज्य शानीः देशवराधीन स्वाराज्याभाषादान उपासाता सित द्वत्यो भोगभावासित्यो तेषां स्वायान्य प्या भीतान्य तनवानि यो। त्याप्नी त्या न्यान्या -सकी स्वातन्या भावेडाण भोगमादायाः तेषा श्लाव श्वाम यती वि अव पद्ता माप्रोति देवा राज्याभी त्याप प्रताद्वीराद्वीत्व विद्वामिति स्वयाहमे १वर्षानाष स्या दिति प्राये प्रक्रियानि कते प्रत्यक्षेति भागा । (मिनुकारावादीन पार विमार मार ११९ ।) म्मिया मार्गिक मया लास्योक प्रविषद्तीन त कृतः प्राधितिकारिकायः सवित महाद्वाति विशेषा-यतनेष्व अध्यात्वप्रमेश्वर्रात्यानीवेषं स्वार्गन्य पाप्रसम्बन पत्र सरमञ्जाष्ट्रीत मनस स्पानिताया ह ' को हिस्तिमनमां जीतः यूरोमिदुर्भियः तं प्राप्तो मित्युक्तं तद्वर्गारेणीवो तत्र द्व वाक्षणीते व यहस्मित मित्याद एवमन्यत्राप प्रधासम्भवं नित्यमित्रव भापनामें ने तरे पाछी श्वविभित्ते । 19 र 11 ॥विकारावाते व त्याहि विपतिभाद।। १६।। विनाशानियानि निस्मुकं पर्येषेश्वर्यमास्त न केवलं विकारमात्रमात्रों वर्र सवित्यम् शहलाप्यीप कार्त्रतथाह्यर-या ब्रियमा स्वितिमाह श्रातः। रुता ना महिमा नती जा प्यांश्य प्रमा । वादाहरू सर्गि भूताने निपाद्यामतादिनीति । तमलेन विकार स्टियामित्या लाभी माः प्राप्त वानि श्रामा ते वक्त मललान नेषामतो वधा विक्षे द्वेनरे निर्मण २२५ मनवाट्य मगुणस्वानिश्ते स्व सम्बर्ण, वि निरंबराइ मेश्यर्ममा गाया भागात स्वाविष्ठ नाइकि। १९२ | 1 CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भे ॥ दश्यम म्मेबंपुत्यक्तान्माने ॥ २०। । दश्यम न्य छोत्यक्ती मानि विकाय विकित्य स्वम्या-तिषः " मत्र सूची भागत् मच-मन्द्र नार्यं मत्र म्याते सूर्यः इत्याद विक्रकारावति वं प्रत्यान्ती भागते सूर्यः इत्याद विक्रकारावति वं प्रत्यान्ती विष्ठः प्रसिद्धीमित्वर्षः ॥ २०।

> ।(भोगमात्रसाम्य लिइं। ह्य ।। २ ।। इतम्ब म निरं डूं. शं विकारालम्बनाके नामेश्वर्ष परमादभोग्यमा त्रमेवेषामकादि सिदुनेश्वरेण रामाकामितिन्त्र्यते 'त्रमाह- ण्यापो नेश्वल भीष-नौलोको इसाविति चकेतां देवतां स्वतिण भूतीप प्रवित्तारी मापुन्यं मलोग्यनां सिर्माति ।। सा

श्युकानोत्राच्याद्वाचानात्राचात्। 1221। महामानीयां का द्वान्त्रमेश्व प्रमानमञ्जी प्रमानीयां वाणीः प्रमानित्रमित्र मानीयां मानीयां वाणीः प्रमानित्रमानियां प्रमाने प्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दूरस्ता स्वमापुन्तमत्वमात नेतेषा पुनस्त्व-तिः, स्तेन प्रतिपद्यमाना इमंमानवं नावतेने श्रम्लोक मीमसम्बद्धते स्व पुनस्वते ते इत्यादि स्वेत्रम् - खुन्तवन्ते इ ण्लेश्वप्रस्प पपातास्ताः तथा गणितं पुनेत्रोत मण्ण-द्र्यनिव्यस्त तममानु नित्य सिद्धानि वी-णपरापणानां मिद्धेवानाव् तिः तदा भूवणे नेव हि स्रगुणपरापणानामाण प्रमानवित्रिते पुनार्शनः शब्दा प्रत्यस्था भ्यसः मूनेशास्त्र-परिस्तमान्तं द्र्यपिते ।। २२। । स्तेश्नीकृत मून तात्पवीवव्राणे न्नुपरिता प्रमृत्रीयः ।

अवः अवः लोक्तवाति भारत्वाति वे निक्तिश्मिकामः तीक्तवारे । पीक्रमासे लिख्नतीकाम्मानीका वित्तिकारे । पीक्रमासे लिख्नतीकामनीका

2/6

॥ मामती॥ ॥ उ रोव्य सो सा

षहिमारोते -सर्वज्ञातातातिर ना दिना धः स्वतन्त्रना नित्यम्नुस्त्रणानिः व्याचिन्यशानिन्धं विभो विन्धिनाः खडाहरद्गानिमहेत्रवरस्य ॥१॥ इतिवेश देशते व्यव्यानि द्रशेनाधितस्रष्टात्वमात्मसम्बन्धाद्याच्याः एत्वमेव च व्यव्यानि द्रशेना नि नित्यानिष्ठा नित्राहरे ॥२॥



25%

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA



262.

. 263

